यशायाह

1 यह आमोस के पुत्र यशायाह का दर्शन है। यहूदा और
यरूशलेम में जो घटने वाला था, उसे परमेश्वर ने यशायाह को
दिखाया। यशायाह ने इन बातों को उज्जिय्याह, योताम, आहाज और
हिजकिय्याह के समय में देखा था। ये यहूदा के राजा थे।

अपने लोगों के विरुद्ध परमेश्वर की शिकायत

2 स्वर्ग और धरती, तुम यहोवा की वाणी सुनो! यहोवा कहता है,

“मैंने अपने बच्चों का विकास किया। मैंने उन्हें बढ़ाने में अपनी
सन्तानों की सहायता की।
किन्तु मेरी सन्तानों ने मुझ से विद्रोह किया।
3 बैल अपने स्वामी को जानता है
और गधा उस जगह को जानता है जहाँ उसका स्वामी उसको
चारा देता है।
किन्तु इस्राएल के लोग
मुझे नहीं समझते हैं।”

4 इस्राएल देश पाप से भर गया है। यह पाप एक ऐसे भारी बोझ
के समान है जिसे लोगों को उठाना ही है। वे लोग बुरे और दुष्ट बच्चों
के समान हैं। उन्होंने यहोवा को त्याग दिया। उन्होंने इस्राएल के
पवित्र (परमेश्वर) का अपमान किया। उन्होंने उसे छोड़ दिया और
उसके साथ अजनबी जैसा व्यवहार किया।
5 परमेश्वर कहता है, “मैं तुम लोगों को दण्ड क्यों देता रहूँ मैंने
तुम्हें दण्ड दिया किन्तु तुम नहीं बदले। तुम मेरे विरुद्ध विद्रोह करते
ही रहे। अब हर सिर और हर हृदय रोगी है। 6 तुम्हारे पैर के तलुओं
से लेकर सिर के ऊपरी भाग तक तुम्हारे शरीर का हर अंग घावों
से भरा है। उनमें चोटें लगी हैं और फूटे हुए फोड़े हैं। तुमने अपने

फोड़ों की कोई परवाह नहीं की। तुम्हारे घाव न तो साफ किये हीं गये हैं और न ही उन्हें ढका गया है।”

7 तुम्हारी धरती बर्बाद हो गयी है। तुम्हारे नगर आग से जल गये हैं। तुम्हारी धरती तुम्हारे शत्रुओं ने हथिया ली है। तुम्हारी भूमि ऐसे उजाड़ दी गयी है कि जैसे शत्रुओं के द्वारा उजाड़ा गया कोई प्रदेश हो।

8 सिय्योन की पुत्री (यरूशलेम) अब अँगूर के बगीचे में किसी छोड़ दी गयी झोपड़ी जैसी हो गयी है। यह एक ऐसी पुरानी झोपड़ी जैसी दिखती है जिसे ककड़ी के खेत में वीरान छोड़ दिया गया हो। यह उस नगरी के समान है जिसे शत्रुओं द्वारा हरा दिया गया हो।
9 यह सत्य है किन्तु फिर भी सर्वशक्तिशाली यहोवा ने कुछ लोगों को वहाँ जीवित रहने के लिये छोड़ दिया था। सदोम और अमोरा नगरों के समान हमारा पूरी तरह विनाश नहीं किया गया था।

10 हे सदोम के मुखियाओं, यहोवा के सन्देश को सुनो! हे अमोरा
के लोगों, परमेश्वर के उपदेशों पर ध्यान दो। 11 परमेश्वर कहता है,
“मुझे यें सभी बलियाँ नहीं चाहिये। मैं तुम्हारे भेड़ों और पशुओं की चर्बी की पर्याप्त होमबलियाँ ले चुका हूँ। बैलों, मेमनों, बकरों के खून
से मैं प्रसन्न नहीं हूँ। 12 तुम लोग जब मुझसे मिलने आते हो तो मेरे
आँगन की हर वस्तु रौंद डालते हो। ऐसा करने के लिए तुमसे किसने कहा है

13 “बेकार की बलियाँ तुम मुझे मत चढ़ाते रहो। जो सुगंधित सामग्री तुम मुझे अर्पित करते हो, मुझे उससे घृणा है। नये चाँद की दावतें, विश्राम और सब्त मुझ से सहन नहीं हो पाते। अपनी पवित्र सभाओं के बीच जो बुरे कर्म तुम करते हो, मुझे उनसे घृणा है।
14 तुम्हारी मासिक बैठकों और सभाओं से मुझे अपने सम्पूर्ण मन से घृणा है। ये सभाएँ मेरे लिये एक भारी भरकम बोझ सी बन गयी है और इन बोझों को उठाते उठाते अब मैं थक चुका हूँ।

15 “तुम लोग हाथ उठाकर मेरी प्रार्थना करोगे किन्तु मैं तुम्हारी
ओर देखूँगा तक नहीं। तुम तोग अधिकाधिक प्रार्थना करोगे, किन्तु
मैं तुम्हारी सुनने तक को मना कर दूँगा क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से
सने हैं।

16 “अपने को धो कर पवित्र करो। तुम जो बुरे कर्म करते हो,
उनका करना बन्द करो। मैं उन बुरी बातों को देखना नहीं चाहता।
बुरे कामों को छोड़ो। 17 अच्छे काम करना सीखो। दूसरे लोगों के
साथ न्याय करो। जो लोग दूसरों को सताते हैं, उन्हें दण्ड दो। अनाथ
बच्चों के अधिकारों के लिए संघर्ष करो। जिन स्त्रियों के पति मर
गये हैं, उन्हें न्याय दिलाने के लिए उनकी पैरवी करो।”

18 यहोवा कहता है, “आओ, हम इन बातों पर विचार करें। तुम्हारे
पाप यद्यपि रक्त रंजित हैं, किन्तु उन्हें धोया जा सकता है। जिससे
तुम बर्फ के समान उज्जवल हो जाओगे। तुम्हारे पाप लाल सुर्ख हैं।
किन्तु वे सन के समान श्वेत हो सकते हो।

19 “यदि तुम मेरी कही बातों पर ध्यान देते हो, तो तुम इस धरती
की अच्छी वस्तुएँ प्राप्त करोगे। 20 किन्तु यदि तुम सुनने से मना करते
हो तुम मेरे विरुद्ध होते हो, और तुम्हारे शत्रु तुम्हें नष्ट कर डालेंगे।”
यहोवा ने ये बातें स्वयं ही कहीं थीं।

यरूशलेम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है

21 परमेश्वर कहता है, “यरूशलेम की ओर देखो। यरूशलेम एक
ऐसी नगरी थी जो मुझमें विश्वास रखती थी और मेरा अनुसरण करती
थी। वह वेश्या की जैसी किस कारण बन गई अब वह मेरा अनुसरण
नहीं करती। यरूशलेम को न्याय से परिपूर्ण होना चाहिये। यरूशलेम
के निवासियों को, जैसे परमेश्वर चाहता है, वैसे ही जीना चाहिये।
किन्तु अब तो वहाँ हत्यारे रहते हैं।”

22 तुम्हारी नेकी चाँदी के समान है। किन्तु अब तुम्हारी चाँदी
खोटी हो गयी है। तुम्हारी दाखमधु में पानी मिला दिया गया है। सो

अब यह कमजोर पड़ गयी है। 23 तुम्हारे शासक विद्रोही हैं और
चोरों के साथी हैं। तुम्हारे सभी शासक घूस लेना चाहते हैं। गलत
काम करने के लिए वेघूस का धन ले लेते हैं। तुम्हारे सभी शासक
लोगों को ठगने के लिये मेहनताना लेते हैं। तुम्हारे शासक अनाथ
बच्चों को सहारा देने का यत्न नहीं करते। तुम्हारे शासक अनाथ
बच्चों को सहारा देने का यत्न नहीं करते। तुम्हारे शासक उन स्त्रियों
की आवश्यकताओं पर कान नहीं देते जिनके पति मर चुके हैं।

24 इन सब बातों के कारण, स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा इस्राएल
का सर्वशक्तिमान कहता है, "हे मेरे बैरियो मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। तुम
मुझे अब और अधिक नहीं सता पाओगे। 25 जैसे लोग चाँदी को
साफ करने के लिए खार मिले पानी का प्रयोग करते हैं, वैसे ही
मैं तुम्हारे सभी खोट दूर करूँगा। सभी निरर्थक वस्तुओं को तुमसे
ले लूँगा। 26 जैसे न्यायकर्ता तुम्हारे पास प्रारम्भ में थे अब वैसे ही
न्यायकर्ता मैं फिर से वापस लाऊँगा। जैसे सलाहकार बहुत पहले
तुम्हारे पास हुआ करते थे, वैसे ही सलाहकार तुम्हारे पास फिर
होंगे। तुम तब फिर 'नेक और विश्वासी नगरी' कहलाओगी।"

27 परमेश्वर नेक है और वह उचित करता है। इसलिये वह सिय्योन
की रक्षा करेगा और वह उन लोगों को बचायेगा जो उसकी ओर
वापस मुड़ आयेंगे। 28 किन्तु सभी अपराधियों और पापियों का नाश
कर दिया जायेगा। (ये वे लोग हैं जो यहोवा का अनुसरण नहीं करते
हैं।)

29 भविष्य में, तुम लोग उन बांजवृक्षों के पेड़ों के लिए और उन
विशेष उद्यानों के लिए, जिन्हें पूजने के लिए तुमने चुना था, लज्जित
होंगे। 30 यह इसलिए घटित होगा क्योंकि तुम लोग ऐसे बांजवृक्ष
के पेड़ों जैसे हो जाओगे जिनकी पत्तियाँ मुरझा रही हो। तुम एक
ऐसे बगीचे के समान हो जाओगे जो पानी के बिना मर रहा होगा।
31 बलशाली लोग सूखी लकड़ी के छोटे—छोटे टुकड़ों जैसे हो
जायेंगे और वे लोग जो काम करेंगे, वे ऐसी चिंगारियों के समान

होंगे जिनसे आग लग जाती है। वे बलशाली लोग और उनके काम जलने लगेंगे और कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो उस आग को रोक सकेगा।

2

1 आमोस के पुत्र यशायाह ने यहूदा और यरूशलेम के बारे में यह सन्देश देखा।

2 यहोवा का मन्दिर पर्वत पर है।
भविष्य में, उस पर्वत को अन्य सभी पर्वतों में सबसे ऊँचा बनाया जायेगा।
उस पर्वत को सभी पहाड़ियों से ऊँचा बनाया जायेगा।
सभी देशों के लोग वहाँ जाया करेंगे।
3 बहुत से लोग वहाँ जाया करेंगे।
वे कहा करेंगे, "हमे यहोवा के पर्वत पर जाना चाहिये।
हमें याकूब के परमेश्वर के मन्दिर में जाना चाहिये।
तभी परमेश्वर हमें अपनी जीवन विधि की शिक्षा देगा
और हम उसका अनुसरण करेंगे।"

सिय्योन पर्वत पर यरूशलेम में, परमेश्वर यहोवा के उपदेशों का सन्देश का आरम्भ होगा
और वहाँ से वह समूचे संसार में फैलेगा।
4 तब परमेश्वर सभी देशों का न्यायी होगा।
परमेश्वर बहुत से लोगों के लिये विवादों का निपटारा कर देगा
और वे लोग लड़ाई के लिए अपने हथियारों का प्रयोग करना बन्द कर देंगे।
अपनी तलवारों से वे हल के फाले बनायेंगे
तथा वे अपने भालों को पौधों को काटने की दँराती के रुप में काम में लायेंगे।
लोग दूसरे लोगों के विरुद्ध लड़ना बन्द कर देंगे।
लोग युद्ध के लिये फिर कभी प्रशिक्षित नहीं होंगे।

5 हे याकूब के परिवार, तू यहोवा का अनुसरण कर।
6 हे यहोवा! तूने अपने लोगों का त्याग कर दिया है। तेरे लोग पूर्व
के बुरे विचारों से भर गये हैं। तेरे लोग पलिश्तियों के समान भविष्य
बताने का यत्न करने लगे हैं। तेरे लोगों ने पूरी तरह से उन विचित्र
विचारों को स्वीकार कर लिया है। 7 तेरे लोगों की धरती दूसरे देशों
के सोने चाँदी से भर गयी है। वहाँ अनगिनत खजाने हैं। तेरे लोगों
की धरती घोड़ों से भरपूर हैं। वहाँ बहुत सारे रथ भी हैं। 8 उनकी
धरती पर मूर्तियाँ भरी पड़ी हैं, लोग जिनकी पूजा करते हैं। लोगों
ने ही इन मूर्तियों को बनाया है और वे ही उन की पूजा करते हैं।
9 लोग बुरे से बुरे हो गये हैं। लोग बहुत नीच हो गये हैं। हे परमेश्वर,
निश्चय ही तू उन्हें क्षमा नहीं करेगा, क्या तू ऐसा करेगा परमेश्वर के
शत्रु भयभीत होंगे

10 जा, कहीं किसी गर्क़े में या किसी चट्टान के पीछे छुप जा! तू
परमेश्वर से डर और उसकी महान शक्ति के सामने से ओझल हो
जा!

11 अहंकारी लोग अहंकार करना छोड़ देंगे। अहंकारी लोग धरती
पर लाज से सिर नीचे झुका लेंगे। उस समय केवल यहोवा ही ऊँचे
स्थान पर विराजमान होगा।

12 यहोवा ने एक विशेष दिन की योजना बनायी है। उस दिन,
यहोवा अहंकारियों और बड़े बोलने वाले लोगों को दण्ड देगा। तब
उन अहंकारी लोगों को साधारण बना दिया जायेगा। 13 वे अहंकारी
लोग लबानोन के लम्बे देवदार वृक्षों के समान हैं। वे बासान के
बांजवृक्षों जैसे हैं किन्तु परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा। 14 वे
अहंकारी लोग ऊँची पहाड़ियों जैसे लम्बे और पहाड़ों जैसे ऊँचे हैं।
15 वे अहंकारी लोग ऐसे हैं जैसे लम्बी मीनारें और ऊँचा तथा मजबूत
नगर परकोटा हो। किन्तु परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा। 16 वे
अहंकारी लोग तर्शीश के विशाल जहाजों के समान हैं। इन जहाज़ों
में महत्वपूर्ण वस्तुएँ भरी हैं। किन्तु परमेश्वर उन अहंकारी लोगों को
दण्ड देगा।

17 उस समय, लोग अहंकार करना छोड़ देंगे। वे लोग जो अब
अहंकारी हैं, धरती पर नीचे झुका दिए जायेंगे। फिर उस समय केवल
यहोवा ही ऊँचे विराजमान होगा। 18 सभी मूर्तियाँ झूठे देवता समाप्त
हो जायेंगी। 19 लोग चट्टानों, गुफाओं और धरती के भीतर जा छिपेंगे।
वे यहोवा और उसकी महान शक्ति से डर जायेंगे। ऐसा उस समय
होगा जब यहोवा धरती को हिलाने के लिए खड़ा होगा।
20 उस समय, लोग अपनी सोने चाँदी की मूर्तियों को दूर फेंक
देंगे। (इन मूर्तियों को लोगों ने इसलिये बनाया था कि लोग उनको
पूज सकें।) लोग उन मूर्तियों को धरती के उन बिलों में फेंक देंगे जहाँ
चमगादड़ और छछूंदर रहते हैं। 21 फिर लोग चट्टानों की गुफाओं
में छुप जायेंगे। वे यहोवा और उसकी महान शक्ति से डरकर ऐसा
करेंगे। ऐसा उस समय घटित होगा जब यहोवा धरती को हिलाने के
लिये खड़ा होगा। इस्राएल को परमेश्वर का विश्वास करना चाहिये
22 ओ इस्राएल के लोगों तुम्हें अपनी रक्षा के लिये अन्य लोगों
पर निर्भर रहना छोड़ देना चाहिये। वे तो मनुष्य़ मात्र है और मनुष्य
मर जाता है। इसलिये, तुझे यह नहीं सोचना चाहिये कि वे परमेश्वर
के समान शक्तिशाली है।

3

1 ये बातें मैं तुझे बता रहा हूँ, तू समझ ले। सर्वशक्तिशाली
यहोवा स्वामी, उन सभी वस्तुओं को छीन लेगा जिन पर यहूदा
और यरूशलेम निर्भर रहते हैं। परमेश्वर समूचा भोजन और जल
भी छीन लेगा। 2 परमेश्वर सभी नायकों और महायोद्धाओं को छीन
लेगा। सभी न्यायाधीशों, भविष्यवक्ताओं, ज्योतिषियों और बुजुर्गों
को परमेश्वर छीन लेगा। 3 परमेश्वर सेना नायकों और प्रशासनिक
नेताओं को छीन लेगा। परमेश्वर सलाहकारों और उन बुद्धिमान को
छीन लेगा जो जादू करते हैं और भविष्य बताने का प्रयत्न करते हैं।
4 परमेश्वर कहता है, “मैं जवान बच्चों को उनका नेता बना दूँगा।
बच्चे उन पर राज करेंगे। 5 हर व्यक्ति आपस में एक दूसरे के विरुद्ध

हो जायेगा। नवयुवक बड़े बूढ़ों का आदर नहीं करेंगे। साधारण
लोग महत्वपूर्ण लोगों को आदर नहीं देंगे।"

6 उस समय, अपने ही परिवार से कोई व्यक्ति अपने ही किसी
भाई को पकड़ लेगा। वह व्यक्ति अपने भाई से कहेगा, "क्योंकि
तेरे पास एक वस्त्र है, सो तू हमारा नेता होगा। इन सभी खण्डहरों
का तू नेता बन जा।"

7 किन्तु वह भाई खड़ा हो कर कहेगा, "मैं तुम्हें सहारा नहीं दे
सकता। मेरे घर पर्याप्त भोजन और वस्त्र नहीं हैं। तू मुझे अपना
मुखिया नहीं बनायेगा।"

8 ऐसा इसलिये होगा क्योंकि यरूशलेम ने ठोकर खायी और
उसने बुरा किया। यहूदा का पतन हो गया और उसने परमेश्वर का
अनुसरण करना त्याग दिया। वे जो कहते हैं और जो करते हैं वह
यहोवा के विरुद्ध है। उन्होंने यहोवा की महिमा के प्रति विद्रोह
किया।

9 लोगों के चेहरों पर जो भाव हैं उनसे साफ़ दिखाई देता है कि
वे बुरे कर्म करने के अपराधी हैं। किन्तु वे इन अपराधों को छुपाते
नहीं है, बल्कि उन पर गर्व करते हुए अपने पापों की डोंडी पीटते
हैं। वे ढीठ हैं। वे सदोम नगरी के लोगों के जैसे हैं। उन्हें इस बात
की परवाह नही. है कि उनके पापों को कौन देख रहा है। यह उनके
लिये बहुत बुरा होगा। अपने ऊपर इतनी बड़ी विपत्ति उन्होनें स्वयं
बुलाई है।

10 अच्छे लोगों को बता दो कि उनके साथ अच्छी बातें घटेंगी।
जो अच्छे कर्म वे करते हैं, उनका सुफल वे पायेंगे। 11 किन्तु बुरे
लोगों के लिए यह बहुत बुरा होगा। उन पर बड़ी विपत्ति टूट पड़ेगी।
जो बुरे काम उन्होंने किये हैं, उन सब के लिये उन्हें दण्ड दिया
जायेगा। 12 मेरे लोगों को बच्चे निर्दयतापूर्वक सताएँगे। उन पर स्त्रियाँ
राज करेंगी।

हे मेरे लोगों, तुम्हारे अगुआ तुम्हें बुरे रास्ते पर ले जायेंगे। सही
मार्ग से वे तुम्हें भटका देंगे।

अपने लोगों के बारे में परमेश्वर का निर्णय

13 यहोवा अपने लोगों के विरोध में मुकदमा लड़ने के लिए
खड़ा होगा। वह अपने लोगों का न्याय करने के लिए खड़ा होगा।
14 बुज़ुर्गों और अगुवाओं ने जो काम किये हैं यहोवा उनके विरुद्ध
अभियोग चलाएगा।

यहोवा कहता है, "तुम लोगों ने अँगूर के बागों को (यहूदा को)
जला डाला है। तुमने गरीब लोगों की वस्तुएँ ले लीं और वे वस्तुएँ
अभी भी तुम्हारे घरों में हैं। 15 मेरे लोगों को सताने का अधिकार
तुम्हें किसने दिया गरीब लोगों को मुँह के बल धूल में धकेलने का
अधिकार तुम्हें किसने दिया" मेरे स्वामी, सर्वशक्तिशाली यहोवा ने
यें बातें कहीं थीं।

16 यहोवा कहता है, "सिय्योन की स्त्रियाँ बहुत घमण्डी हो गयी
हैं। वे सिर उठाये हुए और ऐसा आचरण करते हुए, जैसे वे दूसरे
लोगों से उत्तम हों, इधर–उधर घूमती रहती हैं। वे स्त्रियाँ अपनी
आँखें मटकाती रहती हैं तथा अपने पैरों की पाजेब झंकारती हुई
इधर–उधर ठुमकती फिरती हैं।"

17 सिय्योन की ऐसी स्त्रियों के सिरों पर मेरा स्वामी फोड़े
निकालेगा। यहोवा उन स्त्रियों को गंजा कर देगा। 18 उस समय,
यहोवा उनसे वे सब वस्तुएँ छीन लेगा जिन पर उन्हें नाज़ थाः
पैरों के सुन्दर पाजेब, सूरज और चाँद जैसे दिखने वाले कंठहार,
19 बुन्दे, कंगन तथा ओढ़नी, 20 माथापट्टी, पैर की झाँझर, कमरबंद,
इत्र की शीशियाँ और ताबीज़ जिन्हें वे अपने कण्ठहारों में धारण
करती थीं। 21 मुहरदार अंगूठियाँ, नाक की बालियाँ, 22 उत्तम वस्त्र,
टोपियाँ, चादरें, बटुए, 23 दर्पण, मलमल के कपड़े, पगड़ीदार टोपियाँ
और लम्बे दुशाले।

24 वे स्त्रियाँ जिनके पास इस समय सुगंधित इत्र हैं, उस समय
उनकी वह सुगंध फफूंद और सड़ाहट से भर जायेगी। अब वे
तगड़ियाँ पहनती है। किन्तु उस समय पहनने को बस उनके पास

रस्से होंगे। इस समय वे सुशोभित जूड़े बाँधती हैं। किन्तु उस समय उनके सिर मुड़वा दिये जायेंगे। उनके एक बाल तक नहीं होगा। आज उनके पास सुन्दर पोशाकें हैं। किन्तु उस समय उनके पास केवल शोक वस्त्र होंगे। जिनके मुख आज खूबसूरत हैं उस समय वे शर्मनाक होंगे।

25 उस समय, तेरे योद्धा युद्धों में मार दिये जायेंगे। तेरे बहादुर युद्ध
में मारे जायेंगे। 26 नगर द्वार के निकट सभा स्थलों में रोना बिलखना
और दुःख ही फैला होगा। यरूशलेम उस स्त्री के समान हर वस्तु से वंचित हो जायेगी जिसका सब कुछ चोर और लुटेरे लूट गये हों। वह धरती पर बैठेगी और बिलखेगी।

4

1 उस समय, सात सात स्त्रियाँ एक पुरुष को दबोच लेंगी और उससे कहेंगी, "अपने खाने के लिये हम, अपनी रोटियों का जुगाड़ स्वयं कर लेंगी, अपने पहनने के लिए कपड़े हम स्वयं बनायेंगी। बस तू हमसे विवाह कर ले! ये सब काम हमारे लिए हम खुद ही कर लेंगी। बस तू हमें अपना नाम दे। कृपा कर के हमारी शर्म पर पर्दा डाल दे।"

2 उस समय, यहोवा का पौधा (यहूदा) बहुत सुन्दर और बहुत
विशाल होगा। वे लोग, जो उस समय इस्राएल में रह रहे होंगे उन
वस्तुओं पर बहुत गर्व करेंगे जिन्हें उनकी धरती उपजाती है। 3 उस
समय वे लोग जो अभी भी सिय्योन और यरूशलेम में रह रहे होंगे, पवित्र लोग कहलाएँगे। यह उन सभी लोगों के साथ घटेगा जिनका एक विशेष सूची में नाम अंकित है। यह सूची उन लोगों की होगी जिन्हें जीवित रहने की अनुमति दे दी जायेगी।

4 यहोवा सिय्योन की स्त्रियों की अशुद्धता को धो देगा। यहोवा यरूशलेम से खून को धो कर बहा देगा। यहोवा न्याय की चेतना का प्रयोग करेगा और बिना किसी पक्षपात के निर्णय लेगा। वह दाहक चेतना का प्रयोग करेगा और हर वस्तु को शुद्ध (उत्तम) कर

देगा। 5 उस समय, परमेश्वर यह प्रमाणित करेगा कि वह अपने लोगों
के साथ है। दिन के समय, वह धुएँ के एक बादल की रचना करेगा
और रात के समय एक चमचमाती लपट युक्त अग्नि। सिय्योन पर्वत
पर, लोगों की हर सभा के ऊपर, उसके हर भवन के ऊपर आकाश
में यें संकेत प्रकट होंगे। सुरक्षा के लिये हर व्यक्ति के ऊपर मण्डप
का एक आवरण छा जायेगा। 6 मण्डप का यह आवरण एक सुरक्षा
स्थल होगा। यह आवरण लोगों को सूरज की गर्मी से बचाएगा।
मण्डप का यह आवरण सब प्रकार की बाढ़ों और वर्षा से बचने
का एक सुरक्षित स्थान होगा।

5

इस्राएल परमेश्वर का विशेष उपवन

1 अब मैं अपने मित्र (परमेश्वर) के लिए गीत गाऊँगा। अपने अंगूर
के बगीचे (इस्राएल के लोग) के विषय में यह मेरे मित्र का गीत है।

मेरे मित्र का बहुत उपजाऊ पहाड़ी पर
एक अंगूर का बगीचा है।
2 मेरे मित्र ने धरती खोदी और कंकड़ पत्थर हटा कर उसे साफ किया
और वहाँ पर अंगूर की उत्तम बेलें रोप दीं।
फिर खेत के बीच में
उसने अंगूर के रस निकालने को कुंड बनाये।
मित्र को आशा थी कि वहाँ उत्तम अंगूर होंगे
किन्तु वहाँ जो अंगूर लगे थे वे बुरे थे।

3 सो परमेश्वर ने कहा: “हे यरूशलेम के लोगों, और ओ यहूदा के वासियों,
मेरे और मेरे अंगूर के बाग के बारे में निर्णय करो।
4 मैं और क्या अपने अंगूर के बाग के लिये कर सकता था

मैंने वह सब किया जो कुछ भी मैं कर सकता था।
मुझे उत्तम अंगूरों के लगने की आशा थी
किन्तु वहाँ अंगूर बुरे ही लगे।
यह ऐसा क्यों हुआ

5 "अब मैं तुझको बताऊँगा कि अपने अंगूर के बगीचे के लिये मैं
क्या कुछ करुँगा:
वह कंटीली झाड़ी जो खेत की रक्षा करती है मैं उखाड़ दूँगा,
और उन झाड़ियों को आग में जला दूँगा।
पत्थर का परकोटा तोड़ कर गिरा दूँगा।
बगीचे को रौंद दिया जायेगा।
6 अंगूर के बगीचे को मैं खाली खेत में बदल दूँगा।
कोई भी पौधे की रखवाली नहीं करेगा।
उस खेत में कोई भी व्यक्ति काम नहीं करेगा।
वहाँ केवल काँटे और खरपतवार उगा करेंगे।
मैं बादलों को आदेश दूँगा कि वे वहाँ न बरसें।"

7 सर्वशक्तिशाली यहोवा का अँगूर का बगीचा इस्राएल का राष्ट्र
है और अंगूर की बेलें जिन्हें यहोवा प्रेम करता है, यहूदा के लोग
हैं।

यहोवा ने न्याय की आशा की थी,
किन्तु वहाँ हत्या बस रही।
यहोवा ने निष्पक्षता की आशा की,
किन्तु वहाँ बस सहायता माँगने वालों का रोना रहा जिनके
साथ बुरा किया गया था।

8 बुरा हो उनका जो मकान दर मकान लेते ही चले जाते हैं और
एक खेत के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा खेत तब तक

घेरते ही चले जाते हैं जब तक किसी और के लिए कुछ भी जगह
नहीं बच रहती। ऐसे लोगों को इस प्रदेश में अकेले ही रहना पड़ेगा।
9 सर्वशक्तिशाली यहोवा को मैंने मुझसे यह कहते हुए सुना है, "अब
देखो वहाँ बहुत सारे भवन हैं किन्तु मैं तुमसे शपथपूर्वक कहता हूँ
कि वे सभी भवन नष्ट कर दिये जायेंगे। अभी वहाँ बड़े—बड़े भव्य
भवन हैं किन्तु वे भवन उजड़ जायेंगे। 10 उस समय, दस एकड़ की
अँगूरों की उपज से थोड़ी सी दाखमधु तैयार होगी। और कई बोरी
बीजों से थोड़ा सा अनाज पैदा हो पायेगा।"

11 तुम्हें धिक्कार है, तुम लोग अलख सुबह उठते हो और अब सुरा
पीने की ताक में रहते हो। रात को देर तक जागते हुए दाखमधु पी
कर धुत होते हो। 12 तुम लोग दाखमधु, वीणा, ढोल, बाँसुरी और
ऐसे ही दूसरे बाजों के साथ दावतें उड़ाते रहते हो और तुम उन बातों
पर दृष्टि नहीं डालते जिन्हें यहोवा ने किया है। यहोवा के हाथों ने
अनेकानेक वस्तुएँ बनायी है किन्तु तुम उन वस्तुओं पर ध्यान ही
नहीं देते। सो यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा।

13 यहोवा कहता है, "मेरे लोगों को बंदी बना कर कहीं दूर ले
जाया जायेगा। क्योंकि सचमुच वे मुझे नहीं जानते। इस्राएल के कुछ
निवासी, आज बहुत महत्वपूर्ण है और अपने आराम भरे जीवन से
प्रसन्न हैं, किन्तु वे सभी बड़े लोग बहुत मूर्ख हो जाएँगे और इस्राएल
के आम लोग बहुत प्यासे हो जायेंगे। 14 फिर उनकी मृत्यु हो जायेगी
और शियोल, (मृत्यु का प्रदेश), अधिक से अधिक लोगों को निगल
जाएगा। मृत्यु का वह प्रदेश अपना असीम मुख पसारेगा और वे सभी
महत्वपूर्ण और साधारण लोग और हुल्लड़ मचाते वे सभी खुशियाँ
मनाते लोग शियोल में धस जायेंगे।"

15 उन लोगों को नीचा दिखाया जायेगा। वे बड़े लोग अपना
सिर नीचे लटकाये धरती की ओर देखेंगे। 16 सर्वशक्तिशाली यहोवा
न्याय के साथ निर्णय देगा, और लोग जान लेंगे कि वह महान है।
पवित्र परमेश्वर उन बातों को करेगा जो उचित हैं, और लोग उसे

आदर देंगे। 17 इस्राएल के लोगों से परमेश्वर उनका अपना देश
छुड़वा देगा। धरती वीरान हो जायेगी। भेड़ें जहाँ चाहेगी, चली
जायेंगी। वह धरती जो कभी धनवान लोगों की थी, उस पर भेड़ें
घूमा करेंगी।

18 उन लोगों का बुरा हो, वे अपने अपराध और अपने पापों को
अपने पीछे ऐसे ढो रहे हैं जैसे लोग रस्सों से छकड़े खींचते हैं।
19 वे लोग कहा करते हैं, "काश! परमेश्वर जो उसकी योजना है, उसे
जल्दी ही पूरा कर दे। ताकि हम जान जायें कि क्या घटने वाला है।
हम तो यह चाहते हैं कि परमेश्वर की योजनाएँ जल्दी ही घटित हो
जायें ताकि हम यह जान लें कि उसकी योजना क्या है।"

20 उन लोगों का बुरा हो जो कहा करते कि अच्छी बातें बुरी हैं,
और बुरी बातें अच्छी हैं। वे लोग सोचा करते हैं कि प्रकाश अन्धेरा
है, और अन्धेरा प्रकाश हैं। उन लोगों का विचार हैं कि कड़वा, मीठा
है और मीठा, कड़वा है। 21 बुरा हो उन अभिमानियों का जो स्वयं
को बहुत चतुर मानते हैं। वे सोचा करते हैं कि वे बहुत बुद्धिमान
हैं। 22 बुरा हो उनका जो दाखमधु पीने के लिए जाने माने जाते हैं।
दाखमधु के मिश्रण में जिन्हें कुशलता हासिल है। 23 और यदि तुम
उन लोगों को रिश्वत दे दो तो वे एक अपराधी को भी छोड़ देंगे।
किन्तु वे अच्छे व्यक्ति का भी निष्पक्षता से न्याय नहीं होने देते।
24 ऐसे लोगों के साथ बुरी बातें घटेंगी। उनके वंशज पूरी तरह बैसे
ही नष्ट हो जायेंगे जैसे घास फूस आग में जला दिये जाते हैं। उनके
वंशज उस कंद मूल की तरह नष्ट हो जायेंगे जो मर कर धूल बन
जाता है। उनके वंशज ऐसे नष्ट कर दिये जायेंगे जैसे आग फूलों को
जला डालती है और उसकी राख हवा में उड़ जाती है।

ऐसे लोगों ने सर्वशक्तिशाली यहोवा के उपदेशों का पालन करने
से इन्कार कर दिया है। उन लोगों ने इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर)
के कथन से बैर किया है। 25 इसलिए यहोवा अपने लोगों से बहुत
अधिक कुपित हुआ है। यहोवा ने अपना हाथ उठाया और उन्हें

दण्ड दिया। यहाँ तक कि पर्वत भी भयभीत हो उठे थे। गलियों में
कूड़े की तरह लाशें बिछी पड़ी थी। किन्तु यहोवा अभी भी कुपित
है। उसका हाथ लोगों को दण्ड देने के लिए अभी भी उठा हुआ है।

इस्राएल को दण्ड देने के लिए परमेश्वर सेनाएँ लायेगा

26 देखो! परमेश्वर दूर देश के लोगों को संकेत दे रहा है। परमेश्वर
एक झण्डा उठा रहा है, और उन लोगों को बुलाने के लिये सीटी
बजा रहा है।

किसी दूर देश से शत्रु आ रहा है। वह शत्रु शीघ्र ही देश में घुस
आयेगा। वे बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। 27 शत्रु कभी थका नहीं
करता अथवा कभी नीचे नहीं गिरता। शत्रु कभी न तो ऊँघता है
और न ही सोता है। उनके हथियारों के कमर बंद सदा कसे रहते
हँ। उनके जूतों के तस्में कभी टूटते नहीं हैं। 28 शत्रु के बाण पैने हैं।
उनके सभी धनुष बाण छोड़ने के लिये तैयार हैं। उनके घोड़ों के
खुर चट्टानों जैसे कठोर हैं। उनके रथों के पीछे धूल के बादल उठा
करते हैं।

29 शत्रु गरजता है, और उनका गर्जन सिंह की दहाड़ के जैसा है।
वह इतना तीव्र है जितना जवान सिंह का गर्जन। शत्रु जिनके विरुद्ध
युद्ध कर रहा है उनके ऊपर गुर्राता है और उन पर झपट पड़ता
है। वह उन्हें वहाँ से घसीट ले जाता है और वहाँ उन्हें बचाने वाला
कोई नहीं होता। किन्तु उनके बच पाने की कोई वजह नहीं। 30 सो,
उस दिन वह “सिंह” समुद्र की तरंगों के समान दहाड़े मारेगा और
बंदी बनाये गये लोग धरती ताकते रह जायेंगे, और फिर वहाँ बस
अन्धेरा और दुःख ही रह जाएगा। इस घने बादल में समूचा प्रकाश
अंधेरे में बदल जाएगा।

6

यशायाह को नबी बनने के लिये परमेश्वर का बुलावा

1 जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह की मृत्यु हुई, मैंने अपने अद्भुत
स्वामी के दर्शन किये। वह एक बहुत ऊँचे सिंहासन पर विराजमान
था। उसके लम्वे चोगे से मन्दिर भर गया था। 2 यहोवा के चारों
ओर साराप स्वर्गदूत खड़े थे। हर साराप (स्वर्गदूत) के छः छः पंख
थे। इनमें से दो पंखों का प्रयोग वे अपने मुखों को ढकने के लिए
किया करते थे तथा दो पंखों का प्रयोग अपने पैरों को ढकने के
लिये करते थे और दो पंखों को वे उड़ने के काम में लाते थे। 3 हर
स्वर्गदूत दूसरे स्वर्गदूत से पुकार—पुकार कर कह रहे थे, “पवित्र,
पवित्र, पवित्र, सर्वशक्तिशाली यहोवा परम पवित्र है! यहोवा की
महिमा सारी धरती पर फैली है।” स्वर्गदूतों की वाणी के स्वर बहुत
ऊँचे थे। 4 स्वर्गदूतों की आवाज़ से द्वार की चौखटें हिल उठीं और
फिर मन्दिर धुएँ* से भरने लगा।

5 मैं बहुत डर गया था। मैंने कहा, “अरे, नहीं! मैं तो नष्ट हो
जाऊँगा। मैं उतना शुद्ध नहीं हूँ कि परमेश्वर से बातें करूँ और मैं
ऐसे लोगों के बीच रहता हूँ जो उतने शुद्ध नहीं हैं कि परमेश्वर से
बातें कर सकें। किन्तु फिर भी मैंने उस राजा, सर्वशक्तिमान यहोवा,
के दर्शन कर लिये हैं।”

6 वहाँ वेदी पर आग जल रही थी। उन साराप (स्वर्गदूतों) में से
एक ने उस आग में से चिमटे से एक दहकता हुआ कोयला उठा
लिया और 7 उस दहकते हुए कोयले से मेरे मुख को छूआ दिया।
फिर उस साराप (स्वर्गदूत) ने कहा! “देख! क्योंकि इस दहकते
कोयले ने तेरे होठों को छू लिया है, सो तूने जो बुरे काम किये हैं, वे
अब तुझ में से समाप्त हो गये हैं। अब तेरे पाप धो दिये गये हैं।”

8 इसके बाद मैंने अपने यहोवा की आवाज सुनी। यहोवा ने कहा,
“मैं किसे भेज सकता हूँ हमारे लिए कौन जायेगा”

सो मैंने कहा, “मैं यहाँ हूँ। मुझे भेज!”

---

* **6:4:** फिर मन्दिर धुएँ यह दिखाता है कि परमेश्वर मन्दिर के भीतर था। निर्गमन 40:35

9 फिर यहोवा बोला, “जा और लोगों से कह: ‘ध्यान से सुनो,
किन्तु समझो मत! निकट से देखो, किन्तु बूझो मत।’ 10 लोगों को
उलझन में डाल दे। लोगों की जो बातें वे सुनें और देखें, वे समझ न सके। यदि तू ऐसा नहीं करेगा तो लोग उन बातों को जिन्हें वे अपने कानों से सुनते हैं सचमुच समझ जायेंगे। हो सकता है लोग अपने—अपने मन में सचमुच समझ जायें। यदि उन्होंने ऐसा किया तो सम्भव है लोग मेरी ओर मुड़े और चंगे हो जायें (क्षमा पा जायें)!”

11 मैंने फिर पूछा, “स्वामी, मैं ऐसा कब तक करता रहूँ”

यहोवा ने उत्तर दिया, “तू तब तक ऐसा करता रह, जब तक नगर उजड़ न जायें और लोग नष्ट न हो जायें। तू तब तक ऐसा करता रह जब तक सभी घर खाली न हो जायें। ऐसा तब तक करता रह जब तक धरती नष्ट होकर उजड़ न जायें।”

12 यहोवा लोगों को दूर चले जाने पर विवश करेगा। इस देश में
बड़े—बड़े क्षेत्र उजड़ जायेंगे। 13 उस प्रदेश में दस प्रतिशत लोग फिर
भी बचे रह जायेंगे किन्तु उनको भी फिर से नष्ट कर दिया जायेगा क्योंकि ये लोग बांजवृक्ष के उस पेड़ के समान होंगे जिसके काट दिये जाने के बाद भी उसका तना बचा रह जाता है और ये (बचे हुए लोग) उसी तने के समान होंगे जो फिर से फुटाव ले लेता है।

7

आराम पर विपत्ति

1 आहाज, योताम का पुत्र था। योताम उज्जिय्याह का पुत्र था। उन्हीं दिनों रसीन आराम का राजा हुआ करता था और इस्राएल पर रमल्याह के पुत्र पेकह राजा था। जिन दिनों यहूदा पर आहाज शासन कर रहा था, रसीन और पेकह युद्ध के लिये यरूशलेम पर चढ़ बैठे। किन्तु वे इस नगर को हरा नहीं सके।

2 दाऊद के घराने को एक सन्देश मिला। सन्देश के अनुसार,
“आराम और इस्राएल की सेनाओं में परस्पर सन्धि हो गयी है। वे
दोनों सेनाएँ आपस में एक हो गयी हैं।”
राजा आहाज ने जब यह समाचार सुना तो वह और उसकी प्रजा
बहुत भयभीत हुए। वे आँधी में हिलते हुए वन के वृक्षों के समान
भय से काँपने लगे।
3 तभी यशायाह से यहोवा ने कहा, “तुझे और तेरे पुत्र शार्याशूब
को आहाज के पास जाकर बात करनी चाहिये। तू उस स्थान पर
आ, जहाँ ऊपर के तालाब में पानी गिरा करता है। यह उस गली में
है जो धोबी—घाट की तरफ जाती है।
4 “आहाज से जाकर कहना, ‘सावधान रह किन्तु साथ ही शांत
भी रह। डर मत। उन दोनों व्यक्तियों रसीन और रमल्याह के पुत्रों
से मत डर। वे दो व्यक्ति तो जली हुई लकड़ियों के समान हैं। पहले
वे दहका करते थे किन्तु अब वे, बस धुआं मात्र रह गये हैं। रसीन,
आराम और रमल्याह का पुत्र कुपित है। 5 आराम, एप्रैम के प्रदेशों
और रमल्याह के पुत्र ने तुम्हारे विरुद्ध योजनाएँ बना रखी हैं। उन्होंने
कहा, 6 “हमें यहूदा पर चढ़ाई करनी चाहिये। हम अपने लिये उसे
बाँट लेंगे। हम ताबेल के पुत्र को यहूदा का नया राजा बनायेंगे।’ ””
7 मेरे स्वामी यहोवा का कहना है, “उनकी योजना सफल नहीं
होगी। वह कभी पूरी नहीं होंगी। 8 जब तक दमिश्क का राजा रसीन
है, तब तक यह नहीं घटेगी। इस्राएल अब एक राष्ट्र है किन्तु पैंसठ
वर्ष के भीतर यह एक राष्ट्र नहीं रहेगा। 9 जब तक इस्राएल की
राजधानी शोमरोन है और जब तक शोमरोन का राजा रमल्याह का
पुत्र है तब तक उनकी योजनाएँ सफल नहीं होंगी। यदि इस सन्देश
पर तू विश्वास नहीं करेगा तो लोग तुझ पर विश्वास नहीं करेंगे।”

इम्मानुएल—परमेश्वर हमारे साथ है

10 यहोवा ने आहाज से अपनी बात जारी रखते हुए कहा,
11 यहोवा बोला, “ये बातें सच्ची हैं, इसे स्वयं प्रमाणित करने के लिए

कोई संकेत माँग ले। तू जैसा भी चाहे वैसा संकेत माँग सकता है। वह संकेत चाहे गहरे मृत्यु के प्रदेश से हो और चाहे आकाश से भी ऊँचे किसी स्थान से।”

12 किन्तु आहाज़ ने कहा, “प्रमाण के रूप में मैं कोई संकेत नहीं मागूँगा। मैं यहोवा की परीक्षा नहीं लूँगा।”

13 तब यशायाह ने कहा, “हे, दाऊद के वंशजों, सावधान हो कर सुनो! तुम लोगों के धैर्य की परीक्षा लेते हो। क्या यह तुम्हारे लिए काफी नहीं है जो, अब तुम मेरे परमेश्वर के धैर्य की परीक्षा ले रहे
हो 14 किन्तु, मेरा स्वामी परमेश्वर तुम्हें एक संकेत दिखायेगा:

देखो, एक कुवाँरी गर्भवती होगी
और वह एक पुत्र को जन्म देगी।
वह इस पुत्र का नाम इम्मानुएल रखेगी।

15 इम्मानुएल दही और शहद खायेगा।
वह इसी तरह रहेगा जब तक वह यह नहीं सीख जाता उत्तम को चुनना और बुरे को नकारना।

16 किन्तु जब तक वह भले का चुनना और बुरे का त्यागना जानेगा एप्रैम और अराम की धरती उजाड़ हो जायेगी।
आज तुम उन दो राजाओं से डर रहे हो।

17 “किन्तु तुम्हें यहोवा से डरना चाहिये। क्यों क्योंकि यहोवा तुम पर विपत्ति का समय लाने वाला है। वे विपत्तियाँ तुम्हारे लोगों पर और तुम्हारे पिता के परिवार के लोगों पर आयेंगी। विपत्ति का यह समय उन सभी बातों में अधिक बुरा होगा जो जब से एप्रैम (इस्राएल) यहूदा से अलग हुआ है, तब से अब तक घटी है। इसके लिये परमेश्वर क्या करेगा परमेश्वर अश्शूर के राजा को तुम से लड़ाने के लिये लायेगा।

18 “उस समय, यहोवा “मक्खियों” को बुलायेगा। फिलाहाल
वे मक्खियाँ मिस्र की जलधाराओं के निकट हैं। और यहोवा
“मधुमक्खियों” को बुलायेगा। (फिलहाल वे मघुमक्खियाँ अश्शूर
देश में रहती हैं।) ये शत्रु तुम्हारे देश में आयेंगे। 19 ये शत्रु चट्टानी
क्षेत्रों में, रेगिस्तान में जल धाराओं के निकट झाड़ियों के आस—
पास और पानी पीने की जगहों के इर्द—गिर्द अपने डेरे डालेंगे।
20 यहोवा यहूदा को दण्ड देने के लिये अश्शूर का प्रयोग करेगा।
अश्शूर को भाड़े पर लेकर किसी उस्तरे की तरह काम में लाया
जायेगा। यह ऐसा होगा जैसे यहोवा यहूदा के सिर और टाँगों के
बालों का मुंडन कर रहा हो। यह ऐसा होगा जैसे यहोवा यहूदा की
दाढ़ी मूंड रहा हो।

21 “उस समय, एक व्यक्ति बस एक जवान गाय और दो भेंड़े ही
जीवित रख पायेंगी। 22 वे सब इतना दूध देंगी जो उस व्यक्ति को
दही खाने के लिए पर्याप्त होगा। उस देश में बाकी बचा हर व्यक्ति
दही और शहद ही खाया करेगा। 23 आज इस धरती पर हर खेत में
एक हजार अँगूर की बेलें हैं। अँगूर के हर बगीचे की कीमत एक
हज़ार चाँदी के सिक्कों के बराबर हैं। किन्तु इन खेतों मे खरपतवार
और काँटे भर जायेंगे। 24 यह धरती जंगली हो जाएगी और उसका
इस्तेमाल एक शिकारगाह के रूप में ही हो सकेगा। 25 एक समय
था जब इन पहाड़ियों पर लोग काम किया करते थे और अनाज
उपजाया करते थे। किन्तु उस समय लोग वहाँ नहीं जाया करेंगे।
वह धरती खरपतवारों और काँटों से भर जायेगी। उन स्थानों पर
बस भेड़ें और मवेशी ही घूमा करेंगे।”

8

अश्शूर शीघ्र ही आयेगा

1 यहोवा ने मुझसे कहा, “लिखने के लिये मिट्टी की बड़ी सी तख्ती
ले और उस पर सुए से यह लिख: ‘महेर्शालाल्हाशबज’ अर्थात् ‘यहाँ
जल्दी ही लूटमार और चोरियाँ होंगी।’ ”

2 मैंने कुछ ऐसे लोग एकत्र किये जिन पर साक्षी होने के लिये
विश्वास किया जा सकता था। ये लोग थे नबी ऊरिय्याह और
जकर्याह जो जेबेरेक्याह का पुत्र था। उन लोगों ने मुझे इन बातों
को लिखते हुए देखा था। 3 फिर मैं उस नबिया के पास गया।
मेरे उसके साथ साथ रहने के बाद, वह गर्भवती हो गयी और
उसका एक पुत्र हुआ। तब यहोवा ने मुझसे कहा, “तू लड़के का
नाम महेर्शालाल्हशबज रख। 4 क्योंकि इससे पहले कि बच्चा ‘माँ’
और ‘पिता’ कहना सीखेगा, उससे पहले ही परमेश्वर दमिश्क और
शोमरोन की समूची धनसम्पत्ति को छीन लेगा और उन वस्तुओं को
अश्शूर के राजा को दे देगा।”

5 यहोवा ने मुझ से फिर कहा। 6 मेरे स्वामी ने कहा, “ये लोग
शीलोह की नहर के धीरे—धीरे बहते पानी को लेने से मना करते
हैं। ये लोग रसीन और रमल्याह के पुत्र (पिकाह) के साथ प्रसन्न
रहते हैं।” 7 किन्तु इसलिये मैं, यहोवा, अश्शूर के राजा और उसकी
समूची शक्ति को तुम्हारे विरोध में लेकर आऊँगा। वे परात नदी
की भयंकर बाढ़ की तरह आयेंगे। यह ऐसा होगा जैसे किनारों को
तोड़ती डुबोती नदी उफ़न पड़ती है। 8 जो पानी उस नदी से उफन
कर निकलेगा, वह यहूदा में भर जायेगा और यहूदा को प्राय: डुबो
डालेगा।

इम्मानूएल, यह बाढ़ तब तक फैलती चली जायेगी जब तक वह तुम्हारे समूचे देश को ही न डुबो डाले।

9 हे जातियों, तुम सभी युद्ध के लिये तैयार रहो!
तुम को पराजित किया जायेगा।
अरे, सुदूर के देशों, सुनो!

तुम सभी युद्ध के लिये तैयार रहो!
तुमको पराजित किया जायेगा।
10 अपने युद्ध की योजनाएँ रचो!
तुम्हारी योजनाएँ पराजित हो जायेंगी।
तुम अपनी सेना को आदेश दो!
तुम्हारे वे आदेश व्यर्थ हो जायेंगे,
क्यों क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है।

यशायाह को चेतावनी

11 यहोवा ने अपनी महान शक्ति के साथ मुझ से कहा। यहोवा
ने मुझे चेतावनी दी कि मैं इन अन्य लोगों के समान न बनूँ। यहोवा
ने कहा, 12 "हर कोई कह रहा है कि वे दूसरे लोग उसके विरुद्ध
षड़यन्त्र रच रहे हैं। तुम्हें उन बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।
जिन बातों से वे डरते हैं, तुम्हें उन बातों से नहीं डरना चाहिये। तुम्हें
उनके प्रति निर्भय रहना चाहिए!"
13 तुम्हें बस सर्वशक्तिमान यहोवा से ही डरना चाहिये। तुम्हें बस
उसी का आदर करना चाहिये। तुम्हें उसी से डरना चाहिये। 14 यदि
तुम यहोवा के प्रति आदर रखोगे और उसे पवित्र मानोगे तो वह
तुम्हारे लिये एक सुरक्षित स्थान होगा। किन्तु तुम उसका आदर
नहीं करते। इसलिए परमेश्वर एक ऐसी चट्टान हो गया है जिसके
उपर तुम लोग गिरोगे। वह एक ऐसी चट्टान हो गया है जिस पर
इस्राएल के दो परिवार ठोकर खायेंगे। यरूशलेम के सभी लोगों को
फँसाने के लिये वह एक फँदा बन गया है। 15 (इस चट्टान पर बहुत
से लोग गिरेंगे। वे गिरेंगे और चकनाचूर हो जायेंगे। वे जाल में पड़ेंगे
और पकड़े जायेंगे।)
16 यशायाह ने कहा, "एक वाचा कर और उस पर मुहर लगा
दे। भविष्य के लिये, मेरे उपदेशों की रक्षा कर। मेरे अनुयायियों के
देखते हुए ही ऐसा कर।"
17 वह वाचा यह है:

मैं सहायता पाने के लिये यहोवा की प्रतीक्षा करुँगा।
यहोवा याकूब के घराने से लज्जित है।
वह उनको देखना तक नहीं चाहता है।
किन्तु मैं यहोवा की प्रतीक्षा करुँगा, वह हमारी रक्षा करेगा।

18 मैं और मेरे बच्चे इस्राएल के लोगों के लिये संकेत और प्रमाण
हैं। हम उस सर्वशक्तिमान यहोवा के द्वारा भेजे गये हैं, जो सिय्योन
पर्वत पर रहता है।
19 कुछ लोग कहा करते हैं, “भविष्य बतानेवालों और जादूगरों
से पूछो, क्या करना है” (ये भविष्य बताने वाले और जादूगर फुस—
फुसाकर बोलते हैं। ये लोगों पर यह प्रभाव डालने के लिये कि उनके
पास अर्न्तदृष्टि हैं, वे चुपचाप बातें करते हैं।) किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ
कि लोगों को अपने परमेश्वर से सहायता माँगनी चाहिये! वे भविष्य
बताने वाले और जादूगर मरे हुए लोगों से पूछ कर बताते हैं कि
क्या करना चाहिये किन्तु भला जीवित लोग मरे हुओं से कोई बात
क्यों पूछें। 20 तुम्हें शिक्षाओं और वाचा के अनुसार चलना चाहिये।
यदि तुम इन आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तो हो सकता है तुम
गलत आज्ञाओं का पालन करने लगो। (ये गलत आज्ञाएँ वे हैं जो
जादूगरों और भविष्य बताने वालों के द्वारा मिलती है। ये आज्ञाएँ
बेकार हैं। उन आज्ञाओं पर चल कर तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।)
21 यदि तुम उन गलत आज्ञाओं पर चलोगे, तो तुम्हारे देश पर
विपत्ति आयेगी और भूखमरी फैलेगी। लोग भूखे मरेंगे। फिर वे
क्रोधित होंगे और अपने राजा और अपने देवताओं के विरुद्ध
बातें कहेंगे। इसके बाद वे सहायता के लिये परमेश्वर की ओर
निहारेंगे। 22 यदि अपने देश में वे चारों तरफ देखेंगे तो उन्हें चारों
ओर विपत्ति और चिन्ता जनक अन्धेरा ही दिखाई देगा। लोगों का
वह अंधकारमय दु:ख उन्हें देश छोड़ने पर विवश करेगा और वे
लोग जो उस अन्धेरे में फँसे होंगे, अपने आपको उससे मुक्त नहीं
करा पायेंगे।

9

एक नया दिन आने को है

1 पहले लोग सोचा करते थे कि जबूलून और नप्ताली की धरती
महत्वपूर्ण नहीं है। किन्तु बाद में परमेश्वर उस धरती को महान
बनायेगा। समुद्र के पास की धरती पर, यरदन नदी के पार और
गालील में गैर यहूदी लोग रहते हैं। 2 यद्यपि आज ये लोग अन्धकार
में निवास करते हैं, किन्तु इन्हें महान प्रकाश का दर्शन होगा। ये
लोग एक ऐसे अन्धेरे स्थान में रहते हैं जो मृत्यु के देश के समान
है। किन्तु वह "अद्‌भुत ज्योति" उन पर प्रकाशित होगा।
3 हे परमेश्वर! तू इस जाति की बढ़ौतरी कर। तू लोगों को खुशहाल
बना। ये लोग तुझे अपनी प्रसन्नता दर्शायेंगे। यह प्रसन्नता वैसी ही
होगी जैसी कटनी के समय पर होती है। यह प्रसन्नता वैसी ही होगी
जैसी युद्ध में जीतने के बाद लोग जब विजय की वस्तुओं को आपस
में बाँटते हैं, तब उन्हें होती है। 4 ऐसा क्यों होगा क्योंकि तुम पर से
भारी बोझ उतर जायेगा। लोगों की पीठों पर रखे हुए भारी बल्लों को
तुम उतरवा दोगे। तुम उस दण्ड को छीन लोगे जिससे शत्रु तुम्हारे
लोगों को दण्ड दिया करता है। यह वैसा समय होगा जैसा वह समय
था जब तुमने मिद्यानियों को हराया था।
5 हर वह कदम जो युद्ध में आगे बढ़ा, नष्ट कर दिया जायेगा। हर
वह वर्दी जिस पर लहू के धब्बे लगे हुए हैं, नष्ट कर दी जायेगी। ये
वस्तुएँ आग में झोंक दी जायेंगी। 6 यह सब कुछ तब घटेगा जब
उस विशेष बच्चे का जन्म होगा। परमेश्वर हमें एक पुत्र प्रदान करेगा।
यह पुत्र लोगों की अगुवाई के लिये उत्तरदायी होगा। उसका नाम
होगा: "अद्‌भुत, उपदेशक, सामर्थी परमेश्वर, पिता—चिर अमर और
शांति का राजकुमार।" 7 उसके राज्य में शक्ति और शांति का निवास
होगा। दाऊद के वंशज, उस राजा के राज्य का निरन्तर विकास
होता रहेगा। वह राजा नेकी और निष्पक्ष न्याय का अपने राज्य
के शासन में सदा—सदा उपयोग करता रहेगा। वह सर्वशक्तिशाली

यहोवा अपनी प्रजा से गहरा प्रेम रखता है और उसका यह गहरा प्रेम ही उससे ऐसे काम करवाता है।

परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देगा

8 याकूब (इस्राएल) के लोगों के विरूद्ध मेरे यहोवा ने एक आज्ञा
दी। इस्राएल के विरूद्ध दी गयी उस आज्ञा का पालन होगा। 9 तब
एप्रैम के हर व्यक्ति को और यहाँ तक कि शोमरोन के मुखियाओं
तक को यह पता चल जायेगा कि परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया था।
आज वे लोग बहुत अभिमानी और बडबोला हैं। वे लोग कहा
करते हैं, 10 "हो सकता है ईटें गिर जायें किन्तु हम इसका और
अधिक मजबूत पत्थरों से निर्माण लेंगे। सम्भव है छोटे–छोटे पेड़
काट गिराये जायें। किन्तु हम वहाँ नये पेड़ खड़े कर देंगे और ये
नये पेड़ विशाल तथा मजबूत पेड़ होंगे।" 11 सो यहोवा लोगों को
इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने के लिए उकसाएगा। यहोवा रसीन
के शत्रुओं को उनके विरोध ले आयेगा। 12 यहोवा पूर्व से आराम
के लोगों को और पश्चिम से पलिश्तियों को लायेगा। वे शत्रु अपनी
सेना से इस्राएल को हरा देंगे। किन्तु परमेश्वर इस्राएल से तब कुपित
रहेगा। यहोवा तब भी लोगों को दण्ड देने को तत्पर रहेगा।

13 परमेश्वर यद्यपि लोगों को दण्ड देगा, किन्तु वे फिर भी पाप
करना नहीं छोंड़ेंगे। वे परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ेंगे। वे सर्वशक्तिमान
यहोवा का अनुसरण नहीं करेंगे। 14 सो यहोवा इस्राएल का सिर और
पूँछ काट देगा। एक ही दिन में यहोवा उसकी शाखा और उसके
तने को ले लेगा। 15 (यहाँ सिर का अर्थ है अग्रज तथा महत्वपूर्ण
अगुवा लोग और पूँछ से अभिप्राय है ऐसे नबी जो झूठ बोला करते
हैं।)

16 वे लोग जो लोगों की अगुवाई करते हैं, उन्हें बुरे मार्ग पर ले
जाते हैं। सो ऐसे लोग जो उनके पीछे चलते हैं, नष्ट कर दिये जायेंगे।
17 ये सभी लोग दुष्ट हैं। इसलिये यहोवा इन युवकों से प्रसन्न नहीं
है। यहोवा उनकी विधवाओं और उनके अनाथ बच्चों पर दया नहीं

करेगा। क्यों क्योंकि ये सभी लोग दुष्ट हैं। ये लोग ऐसे काम करते हैं जो परमेश्वर के विरुद्ध हैं। ये लोग झूठ बोलते हैं।

सो परमेश्वर इन लोगों के प्रति कुपित बना रहेगा और उन्हें दण्ड देता रहेगा।

18 बुराई एक छोटी सी आग है, आग पहले घास फूस और काँटों को जलाती है, फिर वह बड़ी—बड़ी झाड़ियों और जंगल को जलाने लगती है और अंत में जाकर वह व्यापक आग का रूप ले लेती है और हर वस्तु धुआँ बन कर ऊपर उड़ जाती है।

19 सर्वशक्तिमान यहोवा कुपित है। इसलिए यह प्रदेश भस्म हो
जायेगा। उस आग में सभी लोग भस्म हो जायेंगें। कोई व्यक्ति अपने
भाई तक को बचाने का जतन नहीं करेगा। 20 तब उनके आस पास,
जो भी कुछ होगा, वे उसे जब दाहिनी ओर से लेंगे, या बाई ओर
से लेंगे, भूखे ही रहेंगे। फिर वे लोग आपस में अपने ही परिवार के
लोगों को खाने लगेंगे। 21 अर्थात् मनश्शे, एप्रैम के विरुद्ध लड़ेगा
और एप्रैम मनश्शे के विरुद्ध लडाई करेगा और फिर दोनों ही यहूदा
के विरुद्ध हो जायेंगे।

यहोवा इस्राएल से अभी भी कुपित है। यहोवा उसके लोगों को दण्ड देने के लिये अभी भी तत्पर है।

10

1 उन नियम बनाने वालों को देखो जो अन्यायपूर्ण नियम बना
कर लिखते हैं। ऐसे नियम बनाने वाले ऐसे नियम बना कर लिखते
हैं जिससे लोगों का जीवन दूभर होता है। 2 वे नियम बनाने वाले
गरीब लोगों के प्रति सच्चे नहीं हैं। वे गरीबों के अधिकार छीनते
हैं। वे लोगों को विधवाओं और अनाथों के यहाँ चोरी करने की
अनुमति देते हैं।

3 अरे ओ, नियम को बनाने वालों, जब तुम्हें, जो काम तुमने किये हैं, उनका हिसाब देना होगा तब तुम क्या करोगे सुदूर देश से तुम्हारा विनाश आ रहा है। सहायता के लिये तुम किस के पास दौडोगे

तुम्हारा धन और तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हारी रक्षा नहीं कर पायेंगे।
4 तुम्हें एक बंदी के समान नीचे झुकना ही होंगा। तुम मुर्दे के समान
धरती में गिर कर दण्डवत प्रणाम करोगे किन्तु उससे तुम्हें कोई
सहायता नहीं मिलेगी। परमेश्वर तब भी कुपित रहेगा। परमेश्वर तुम्हें
दण्ड देने के लिए तब भी तत्पर रहेगा।

5 परमेश्वर कहेगा, “मैं एक छड़ी के रुप में अश्शूर का प्रयोग
करुँगा। मैं क्रोध में भर कर इस्राएल को दण्ड देने के लिए अश्शूर
का प्रयोग करुँगा। 6 ऐसे लोगों के विरुद्ध जो पाप कर्म करते हैं युद्ध
करने के लिये मैं अश्शूर को भेजूँगा। मैं उन लोगों से कुपित हूँ और
उन लोगों से युद्ध करने के लिये मैं अश्शूर को आदेश दूँगा। अश्शूर
उन लोगों को हरा देगा और फिर उनसे उनकी कीमती वस्तुएँ छीन
लेगा। अश्शूर के लिए इस्राएल गलियों में पड़ी उस धूल जैसा होगा
जिसे वह अपने पैरों तले रौंदेगा।

7 “किन्तु अश्शूर यह नहीं समझता है कि मैं उसका प्रयोग करुँगा।
वह यह नहीं सोचता कि वह मेरा एक साधन है। अश्शूर तो बस
दूसरे लोगों को नष्ट करना चाहता है। अश्शूर की तो मात्र यह योजना
है कि वह बहुत सी जातियों को नष्ट कर दे। 8 अश्शूर अपने मन में
कहता है, ‘मेरे सभी व्यक्ति राजाओं के समान हैं। 9 कलनो नगरी
कर्कमीश के जैसी है और हमात नगर अर्पद नगर के जैसा है।
शोमरोन की नगरी दमिश्क नगर के जैसी है। 10 मैंने इन सभी बुरे
राज्यों को पराजित कर दिया है और अब इन पर मेरा अधिकार है।
जिन मूर्तियों की वे लोग पूजा करते हैं, वे यरूशलेम और शोमरोन
की मूर्तियों से अधिक हैं। 11 मैंने शोमरोन और उसकी मूर्तियों को
पराजित कर दिया। मैं यरूशलेम और उसकी मूर्तियों को भी जिन्हें
उसके लोगों ने बनाया है पराजित कर दूँगा।’ ”

12 मेरा स्वामी जब यरूशलेम और सिय्योन पर्वत के लिये, जो
उसकी योजना है, उसकी बातों को करना समाप्त कर देगा, तो यहोवा
अश्शूर को दण्ड देगा। अश्शूर का राजा बहुत अभिमानी है। उसके

अभिमान ने उससे बहुत से बुरे काम करवाये हैं। सो परमेश्वर उसे
दण्ड देगा।
13 अश्शूर का राजा कहा करता है, “मैं बहुत बुद्धिमान हूँ। मैंने
स्वयं अपनी बुद्धि और शक्ति से अनेक महान कार्य किये हैं। मैंने
बहुत सी जातियों को हराया है। मैंने उनका धन छीन लिया है और
उनके लोगों को दास बना लिया है। मैं एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति
हूँ। 14 मैंने स्वयं अपने हाथों से उन सब लोगों की धन दौलत ऐसे ले
ली है जैसे कोई व्यक्ति चिड़ियाँ के घोंसले से अण्डे उठा लेता है।
चिड़ियाँ जो प्राय: अपने घोंसले और अण्डों को छोड जाती है और
उस घोंसले की रखवाली करने के लिये कोई भी नहीं रह जाता।
वहाँ अपने पंखों और अपनी चोंच से शोर मचाने और लड़ाई करने
के लिये कोई पक्षी नहीं होता। इसीलिए लोग अण्डों को उठा लेते
हैं। इसी प्रकार धरती के सभी लोगों को उठा ले जाने से रोकने के
लिए कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं था।”
15 कुल्हाड़ा उस व्यक्ति से अच्छा नहीं होता, जो कुल्हाड़े को
चलाता है। कोई आरा उस व्यक्ति से अच्छा नहीं होता, जो उस
आरे से काटता है। किन्तु अश्शूर का विचार है कि वह परमेश्वर से
भी अधिक महत्वपर्ण और बलशाली है। उसका यह विचार ऐसा ही
है जैसे किसी छड़ी का यह सोचना कि वह उस व्यक्ति से अधिक
बली और महत्वपूर्ण है जो उसे उठाता है और किसी को दण्ड देने
के लिए उसका प्रयोग करता है। 16 अश्शूर का विचार है कि वह
महान है किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा अश्शूर को दुर्बल कर डालने
वाली महामारी भेजेगा और अश्शूर अपने धन और अपनी शक्ति
को वैसे ही खो बैठेगा जैसे कोई बीमार व्यक्ति अपनी शक्ति गवाँ
बैठता है। फिर अश्शूर का वैभव नष्ट हो जायेगा। यह उस अग्नि के
समान होगा जो उस समय तक जलती रहती है जब तक सब कुछ
समाप्त नहीं हो जाता। 17 इस्राएल का प्रकाश (परमेश्वर) एक अग्नि
के समान होगा। वह पवित्रतम लपट के जैसा प्रकाशमान होगा। वह
उस अग्नि के समान होगा जो खरपतवार और काँटों को तत्काल

जला डालती है 18 और फिर बढ़कर बड़े बड़े पेड़ों और अँगूर के
बगीचों को जला देती है और अंत में सब कुछ नष्ट हो जाता है यहाँ
तक कि लोग भी। ऐसा उस समय होगा जब परमेश्वर अश्शूर को
नष्ट करेगा। अश्शूर सड़ते—गलते लट्ठे के जैसा हो जायेगा। 19 जंगल
में हो सकता है थोड़े से पेड़ खड़े रह जायें। पर वे इतने थोंड़े से होंगे
कि उन्हें कोई बच्चा तक गिन सकेगा।

20 उस समय, वे लोग जो इस्राएल में जीवित बचेंगे, यानी याकूब
के वंश के ये लोग उस व्यक्ति पर निर्भर नहीं करते रहेंगे जो उन्हें
मारता पीटता है। वे सचमुच उस यहोवा पर निर्भर करना सीख
जायेंगे जो इस्राएल का पवित्र (परमेश्वर) है।

21 याकूब के वंश के वे बाकी बचे लोग शक्तिशाली परमेश्वर का
फिर अनुसरण करने लगेंगे। 22 तुम्हारे व्यक्ति असंख्य हैं। वे सागर
के रेत कणों के समान हैं; किन्तु उनमें से कुछ ही यहोवा की ओर
फिर वापस मुड़ आने के लिये बचे रहेंगे। वे लोग परमेश्वर की ओर
मुड़ेंगे किन्तु उससे पहले तुम्हारे देश का विनाश हो जायेगा। परमेश्वर
ने घोषणा कर दी है कि वह उस धरती का विनाश करेगा और उसके
बाद उस धरती पर नेकी का आगमन इस प्रकार होगा जैसे कोई
भरपूर नदी बहती है। 23 मेरा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा, इस प्रदेश
को निश्चय ही नष्ट करेगा।

24 मेरा स्वामी सर्वशक्तिशाली यहोवा कहता है, “हे! सिय्योन में
रहने वाले मेरे लोगों, अश्शूर से मत डरो! वह भविष्य में तुम्हें अपनी
छड़ी से इस तरह पीटेगा जैसे पहले मिस्र ने तुम्हें पीटा था। यह ऐसा
होगा जैसे मानो तुम्हें हानि पहुँचाने के लिये अश्शूर किसी लाठी का
प्रयोग कर रहा हो । 25 किन्तु थोड़े ही समय बाद मेरा क्रोध शांत
हो जायेगा, मुझे संतोष हो जायेगा कि अश्शूर ने तुम्हें काफी दण्ड
दे दिया है।”

26 इसके बाद सर्वशक्तिमान यहोवा अश्शूर को कोड़ो से मारेगा।
जैसा पहले यहोवा ने जब ओरेब की चट्टान पर मिद्यानियों को

पराजित किया था, तब हुआ था। वैसा ही उस समय होगा जब यहोवा अश्शूर पर आक्रमण करेगा। पहले यहोवा ने मिस्र को दण्ड दिया था। उसने सागर के ऊपर छड़ी उठायी थी* और मिस्र से अपने लोगों को ले गया था। यहोवा जब अश्शूर से अपने लोगों की रक्षा करेगा, तब भी ऐसा ही होगा।

27 अश्शूर तुम पर विपत्तियाँ लायेगा। वे विपत्तियाँ ऐसे बोझों के समान होंगी, जिन्हें तुम्हें अपने ऊपर एक जुए के रूप में उठाना ही होगा। किन्तु फिर तुम्हारी गर्दन पर से उस जुए को उतार फेंका जायेगा। वह जुआ तुम्हारी शक्ति (परमेश्वर) द्वारा तोड़ दिया जायेगा।

इस्राएल पर अश्शूर की सेना का आक्रमण

28 (अय्यात) के निकट सेनाओं का प्रवेश होगा। मिग्रोन यानी
“खलिहानो” को सेनाएँ रौंद डालेंगी। सेनाएँ इसके खाने की सामग्री
को “कोठियारों” (मिकमाश) में रख देंगी। 29 “पार करने के स्थान”
(माबरा) से सेनाएँ नदी पार करेंगी। वे सेनाएँ जेबा में रात बिताएंगी।
रामा डर जायेगा। शाऊल के गिबा के लोग निकल भागेंगे।
30 हे गल्लीम की पुत्री चिल्ला! हे लैशा सुन! हे, अनातोत मुझे उत्तर
दे! 31 मदमेना के लोग भाग रहे हैं। गेबीम के लोग छिपे हुए हैं।
32 आज सेना नोब में टिकेगी और यरूशलेम के पर्वत सिय्योन पर
चढ़ाई करने की तैयारी करेंगी।
33 देखो! हमारा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा विशाल वृक्ष
(अश्शूर) को काट गिरायेगा। यहोवा अपनी महान शक्ति से ऐसा
करेगा। बड़े और महत्वपूर्ण लोग काट गिराये जायेंगे। वे महत्वहीन
हो जायेंगे। 34 यहोवा अपने कुल्हाड़े से वन को काट डालेगा और
लबानोन के विशाल वृक्ष (मुखिया लोग) गिर पड़ेंगे।

11

शांति का राजा आ रहा है

---

* **10:26:** उसने … उठायी थी निर्गमन 14:1-15:21

1 यिशै के तने (वंश) से एक छोटा अंकुर (पुत्र) फूटना शुरु होगा।
यह अब शाखा यिशै के मूल से फूटेगी। 2 उस पुत्र में यहोवा की
आत्मा होगी। वह आत्मा विवेक, समझबूझ, मार्ग दर्शन और शक्ति
की आत्मा होगी। वह आत्मा इस पुत्र को यहोवा को समझने और
उसका आदर करने में सहायता देगी। 3 यह पुत्र यहोवा का आदर
करेगा और इससे वह प्रसन्न होगा।

यह पुत्र वस्तुएँ जैसी दिखाई दे रही होगी, उसके अनुसार लोगों
का न्याय नहीं करेगा। वह सुनी, सुनाई के आधार पर ही न्याय नहीं
करेगा। 4-5 वह गरीब लोगों का न्याय ईमानदारी और सच्चाई के साथ
करेगा। धरती के दीन जनों के लिये जो कुछ करने का निर्णय वह लेगा, उसमें वह पक्षपात रहित होगा। यदि वह यह निर्णय करता है कि लोगों पर मार पड़े तो वह आदेश देगा और उन लोगों पर मार पड़ेगी। यदि वह निर्णय करता है कि उन लोगों की मृत्यु होनी चाहिये तो वह आदेश देगा और उन दुष्टों को मौत के घाट उतार दिया जाएगा। नेकी और सच्चाई इस पुत्र को शक्ति प्रदान करेंगी। उसके लिए नेकी और सच्चाई एक ऐसे कमर बंद के समान होंगे जिसे वह अपनी कमर के चारों ओर लपेटता है।

6 उसके समय में, भेड़ और भेड़िये शांति से साथ—साथ रहेंगे,
सिंह और बकरी के बच्चों के साथ शांति से पड़े रहेंगे। बछड़े, सिंह
और बैल आपस में शांति के साथ रहेंगे। एक छोटा सा बच्चा उनकी
अगुवाई करेगा। 7 गायें और रीछनियां शांति से साथ—साथ अपना
खाना खाएंगी। उनके बच्चे साथ—साथ बैठा करेंगे और आपस में
एक दूसरे को हानि नहीं पहुँचायेंगे। सिंह गायों के समान घास चरेंगे
8 और यहाँ तक कि साँप भी लोगों को हानि नहीं पहुँचायेंगे। काले
नाग के बिल के पास एक बच्चा तक खेल सकेगा। कोई भी बच्चा
विषधर नाग के बिल में हाथ डाल सकेगा।

9 ये सब बातें दिखाती हैं कि वहाँ सब कहीं शांति होगी। कोई
व्यक्ति किसी दूसरे को हानि नहीं पहुँचायेगा। मेरे पवित्र पर्वत के

लोग वस्तुओं को नष्ट नहीं करना चाहेंगे। क्यों क्योंकि लोग यहोवा को सचमुच जान लेंगे। वे उसके ज्ञान से ऐसे परिपूर्ण होंगे जैसे सागर जल से परिपूर्ण होता है।

10 उस समय यिशै के परिवार में एक विशेष व्यक्ति होगा। यह व्यक्ति एक ध्वजा के समान होगा। यह "ध्वजा" दर्शायेगी कि समस्त राष्ट्रों को उसके आसपास इकट्ठा हो जाना चाहिये। ये राष्ट्र उससे पूछा करेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये और वह स्थान, जहाँ वह होगा, भव्यता से भर जायेगा।

11 ऐसे अवसर पर, मेरा स्वामी परमेश्वर फिर आयेगा और उसके जो लोग बच गये थे उन्हें वह ले जायेगा। यह दूसरा अवसर होगा जब परमेश्वर ने वैसा किया। (ये परमेश्वर के ऐसे लोग हैं जो अश्शूर, उत्तरी मिस्र, दक्षिणी मिस्र, कूश, एलाम, बाबुल, हमात तथा समस्त
संसार के ऐसे ही सुदूर देशों में छूट गये हैं।) 12 परमेश्वर सब लोगों
के लिये संकेत के रूप में झंडा उठायेगा। इस्राएल और यहूदा के लोग अपने—अपने देशों को छोड़ने के लिये विवश किये गये थे। वे लोग धरती पर दूर—दूर फैल गये थे किन्तु परमेश्वर उन्हें परस्पर एकत्र करेगा।

13 उस समय एप्रैम (इस्राएल) यहूदा से जलन नहीं रखेगा। यहूदा
का कोई शत्रु नहीं बचेगा। यहूदा एप्रैम के लिये कोई कष्ट पैदा नहीं
करेगा। 14 बल्कि एप्रैम और यहूदा पलिश्तियों पर आक्रमण करेंगे।
ये दोनों देश उड़ते हुए उन पक्षियों के समान होंगे जो किसी छोटे से जानवर को पकड़ने के लिए झपट्टा मारते हैं। एक साथ मिल कर वे दोनों पूर्व की धन दौलत को लूट लेंगे। एप्रैम और यहूदा एदोम, मोआब और अम्मोनी के लोगों पर नियन्त्रण कर लेंगे।

15 यहोवा कुपित होगा और जैसे उसने मिस्र के सागर को दो भागों में बाँट दिया था, उसी प्रकार परात नदी पर वह अपना हाथ उठायेगा और उस पर प्रहार करेगा। जिससे वह नदी सात छोटी धाराओं में बट जायेगी। ये छोटी जल धाराएँ गहरी नहीं होंगी। लोग

अपने जूते पहने हुए ही पैदल चल कर उन्हें पार कर लेंगे। 16 परमेश्वर
के वे लोग जो वहाँ छूट गये थे अश्शूर को छोड़ देने के लिए रास्ता
पा जायेंगे। यह वैसा ही होगा, जैसा उस समय हुआ था, जब परमेश्वर
लोगों को मिस्र से बाहर निकाल कर लाया था।

12

परमेश्वर का स्तुति गीत

1 उस समय तुम कहोगे:
“हे यहोवा, मैं तेरे गुण गाता हूँ!
तू मुझ से कुपित रहा है
किन्तु अब मुझ पर क्रोध मत कर!
तू मुझ पर अपना प्रेम दिखा।”
2 परमेश्वर मेरी रक्षा करता है।
मुझे उसका भरोसा है।
मुझे कोई भय नहीं है।
वह मेरी रक्षा करता है।
यहोवा याह मेरी शक्ति है।
वह मुझको बचाता है, और मैं उसका स्तुति गीत गाता हूँ।

3 तू अपना जल मुक्ति के झरने से ग्रहण कर।
तभी तू प्रसन्न होगा।
4 फिर तू कहेगा, “यहोवा की स्तुति करो!
उसके नाम की तुम उपासना किया करो!
उसने जो कार्य किये हैं उसका लोगों से बखान करो।
तुम उनको बताओ कि वह कितना महान है!”
5 तुम यहोवा के स्तुति गीत गाओ!
क्यों क्योंकि उसने महान कार्य किये हैं!
इस शुभ समाचार को जो परमेशवर का है,
सारी दुनियाँ में फैलाओ ताकि सभी लोग ये बातें जान जायें।

6 हे सिय्योन के लोगों, इन सब बातों का तुम उद्घोष करो!
वह इस्राएल का पवित्र (शक्तिशाली) ढंग से तुम्हारे साथ है।
इसलिए तुम प्रसन्न हो जाओ!

13

बाबुल को परमेश्वर का सन्देश

1 आमोस के पुत्र यशायाह को परमेश्वर ने बाबुल के बारे में यह
शोक सन्देश प्रकट किया। 2 परमेश्वर ने कहा:

“पर्वत पर ध्वजा उठाओ जिस पर्वत पर कुछ नहीं है।
उन लोगों को पुकारो।
सिपाहियों, अपने हाथ संकेत के रुप में हिलाओ उन लोगों से कहो
कि वे उन द्वार से प्रवेश करे जो बडे लोगों के हैं।”

3 “मैंने लोगों से उन पुरुषों को अलग किया है,
और मैं स्वयं उन को आदेश दूँगा।
मैं क्रोधित हूँ, मैंने अपने उत्तम पुरुषों को लोगों को दण्ड देने के लिये एकत्र किया है।
मुझको इन प्रसन्न लोगों पर गर्व है!

4 “पहाड़ में एक तीव्र शोर हुआ है, तुम उस शोर को सुनो!
ये शोर ऐसा लगता है जैसे बहुत ढेर सारे लोगों का।
बहुत सारे देशों के लोग आकर इकट्ठे हुए हैं।
सर्वशक्तिमान यहोवा अपनी सेना को एक साथ बुला रहा है।
5 यहोवा और यह सेना किसी दूर के देश से आते हैं।
ये लोग क्षितिज के पार से क्रोध प्रकट करने आ रहे हैं।
यहोवा इस सेना का उपयोग ऐसे करेगा जैसे कोई किसी शस्त्र का उपयोग करता है।

यह सेना सारे देश को नष्ट कर देगी।”

6 यहोवा के न्याय का विशेष दिन आने को है। इसलिये रोओ!
और स्वयं अपने लिये दु:खी होओ! समय आ रहा है जब शत्रु तुम्हारी
सम्पत्ति चुरा लेगा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर वैसा करवाएगा। 7 लोग
अपना साहस छोड़ बैठेंगे और भय लोगों को दुर्बल बना देगा। 8 हर
कोई भयभीत होगा। डर से लोगों को ऐसे दुख लगेंगे जैसे किसी
बच्चे को जन्म देने वाली माँ का पेट दुखने लगता है। उनके मुँह लाल
हो जायेंगे, जैसे कोई आग हो। लोग अचरज में पड़ जायेंगे क्योंकि
उनके सभी पड़ोसियों के मुखों पर भी भय दिखाई देगा।

बाबुल के विरुद्ध परमेश्वर का न्याय

9 देखो यहोवा का विशेष दिन आने को है। वह एक भयानक दिन
होगा। परमेश्वर बहुत अधिक क्रोध करके इस देश का विनाश कर
देगा। वह पापियों को विवश करेगा कि वे उस देश को छोड़ दें।
10 आकाश काले पड़ जायेंगे; सूरज, चाँद और तारे नहीं चमकेंगे।

11 परमेशवर कहता है, “मैं इस दुनिया पर बुरी—बुरी बातें घटित
करूँगा। मैं दुष्टों को उनकी दुष्टता का दण्ड दूँगा। मैं अभिमानियों
के अभिमान को मिटा दूँगा। ऐसे लोग जो दूसरे के प्रति नीच हैं, मैं
उनके बड़े बोल को समाप्त कर दूँगा। 12 वहाँ बस थोड़े से लोग ही
बचेंगे। जैसे सोने का मिलना दुर्लभ होता है, वैसे ही वहाँ लोगों का
मिलना दुर्लभ हो जायेगा। किन्तु जो लोग मिलेंगे, वे शुद्ध सोने से
भी अधिक मूल्यवान होंगे। 13 अपने क्रोध से मैं आकाश को हिला
दूँगा। धरती अपनी धुरी से डिगा दी जायेगी।”

यह सब उस समय घटेगा जब सर्वशक्तिमान यहोवा अपना क्रोध
दर्शायेगा। 14 तब बाबुल के निवासी ऐसे भागेंगे जैसे घायल हरिण
भागता है। वे ऐसे भागेंगे जैसे बिना गडेरिये की भेड़ भागती हैं। हर
कोई व्यक्ति भाग कर अपने देश और अपने लोगों की तरफ मुड़

जायेगा। 15 किन्तु बाबुल के लोगों का पीछा उनके शत्रु नहीं छोड़ेगे
और जब शत्रु किसी व्यक्ति को धर पकड़ेगा तो वह उसे तलवार के
घाट उतार देगा। 16 उनके घरों की हर वस्तु चुरा ली जायेगी। उनकी
पत्नियों के साथ कुकर्म किया जायेगा और उनके छोटे—छोटे बच्चों
को लोगों के देखते पीट पीटकर मार डाला जायेगा।

17 परमेश्वर कहता है, “देखो, मैं मादी की सेनाओं से बाबुल
पर आक्रमण कराऊँगा। मादी की सेनाएँ यदि सोने और चाँदी
का भुगतान ले भी लेंगी तो भी वे उन पर आक्रमण करना बंद
नहीं करेंगी। 18 बाबुल के युवकों को सैनिक आक्रमण करके मार
डालेंगे। वे बच्चों तक पर दया नहीं दिखायेंगे। छोटे बालकों तक
के प्रति वे करुणा नहीं करेंगे। 19 बाबुल का विनाश होगा और
यह विनाश सदोम और अमोरा के विनाश के समान ही होगा। इस
विनाश को परमेश्वर करायेगा और वहाँ कुछ भी नहीं बचेगा।

“बाबुल सबसे सुन्दर राजधानी है। बाबुल के निवासियों को
अपने नगर पर गर्व है। 20 किन्तु बाबुल का सौन्दर्य बना नहीं रहेगा।
भविष्य में वहाँ लोग नहीं रहेंगे। अराबी के लोग वहाँ अपने तम्बू नहीं
गाड़ेंगे। गडेरिये चराने के लिये वहाँ अपनी भेड़ों को नहीं लायेंगे।
21 जो पशु वहाँ रहेंगे वे बस मरुभूमि के पशु ही होंगे। बाबुल में
अपने घरों में लोग नहीं रह पायेंगे। घरों में जंगली कुत्ते और भेड़िए
चिल्लाएंगे। घरों के भीतर जंगली बकरे विहार करेंगे। 22 बाबुल के
विशाल भवनों में कुत्ते और गीदड़ रोयेंगे। बाबुल बरबाद हो जायेगा।
बाबुल का अंत निकट है। अब बाबुल के विनाश की मैं और अधिक
प्रतीक्षा नहीं करता रहूँगा।”

14

इस्राएल घर लौटेगा

1 आगे चल कर, यहोवा याकूब पर फिर अपना प्रेम दर्शायेगा।
यहोवा इस्राएल के लोगों को फिर चुनेगा। उस समय यहोवा उन

लोगों को उनकी धरती देगा। फिर गैर यहूदी लोग, यहूदी लोगों के
साथ अपने को जोड़ेंगे। दोनों ही जातियों के लोग एकत्र हो कर
याकूब के परिवार के रूप में एक हो जायेंगे। 2 वे जातियाँ इस्राएल
की धरती के लिये इस्राएल के लोगों को फिर वापस ले लेंगी। दूसरी
जातियों के वे स्त्री पुरुष इस्राएल के दास हो जायेंगे। बीते हुए समय
में उन लोगों ने इस्राएल के लोगों को बलपूर्वक अपना दास बनाया
था। इस्राएल के लोग उन जातियों को हरायेंगे और फिर इस्राएल
उन पर शासन करेगा। 3 यहोवा तुम्हारे श्रम को समाप्त करेगा और
तुम्हें आराम देगा। पहले तुम दास हुआ करते थे, लोग तुम्हें कड़ी
मेहनत करने को विवश करते थे किन्तु यहोवा तुम्हारी इस कड़ी
मेहनत को अब समाप्त कर देगा।

बाबुल के राजा के विषय में एक गीत

4 उस समय बाबुल के राजा के बारे में तुम यह गीत गाने लगोगे:

वह राजा दुष्ट था जब वह हमारा शासक था
किन्तु अब उसके राज्य का अन्त हुआ।
5 यहोवा दुष्ट शासकों का राज दण्ड तोड़ देता है।
यहोवा उनसे उनकी शक्ति छीन लेता है।
6 बाबुल का राजा क्रोध में भरकर लोगों को पीटा करता है।
उस दुष्ट शासक ने लोगों को पीटना कभी बंद नहीं किया।
उस दुष्ट राजा ने क्रोध में भरकर लोगों पर राज किया।
उसने लोगों के साथ बुरे कामों का करना नहीं छोड़ा।
7 किन्तु अब सारा देश विश्राम में है।
देश में शान्ति है।
लोगों ने अब उत्सव मनाना शुरु किया है।
8 तू एक बुरा शासक था,
और अब तेरा अन्त हुआ है।
यहाँ तक की चीड़ के वृक्ष भी प्रसन्न हैं।

लबानोन में देवदार के वृक्ष मगन हैं।
वृक्ष यह कहते हैं, “जिस राजा ने हमें गिराया था।
आज उस राजा का ही पतन हो गया है,
और अब वह राजा कभी खड़ा नहीं होगा।”
9 अधोलोक, यानी मृत्यु का प्रदेश उत्तेजित है क्योंकि तू आ रहा है।
धरती के प्रमुखों की आत्माएँ जगा रहा है।
तेरे लिये अधोलोक है।
अधोलोक तेरे लिये सिंहासन से राजाओं को खड़ा कर रहा है।
तेरी अगुवायी को वे सब तैयार होंगे।
10 ये सभी प्रमुख तेरी हँसी उड़ायेंगे।
वे कहेंगे, “तू भी अब हमारी तरह मरा हुआ है।
तू अब ठीक हम लोगों जैसा है।”
11 तेरे अभिमान को मृत्यु के लोक में नीचे उतारा गया।
तेरे अभिमानी आत्मा की आने की घोषणा तेरी वीणाओं का संगीत करता है।
तेरे शरीर को मक्खियाँ खा जायेंगी।
तू उन पर ऐसे लेटेगा मानों वे तेरा बिस्तर हो।
कीड़े ऐसे तेरी देह को ढक लेंगे मानों कोई कम्बल हों।
12 तेरा स्वरुप भोर के तारे सा था, किन्तु तू आकाश के ऊपर से गिर पड़ा।
धरती के सभी राष्ट्र पहले तेरे सामने झुका करते थे।
किन्तु तुझको तो अब काट कर गिरा दिया गया।
13 तू सदा अपने से कहा करता था कि, “मैं सर्वोच्च परमेश्वर सा बनूँगा।
मैं आकाशों के ऊपर जीऊँगा।
मैं परमेशवर के तारों के ऊपर अपना सिंहासन स्थापित करुँगा।
मैं जफोन के पवित्र पर्वत पर बैठूँगा।
मैं उस छिपे हुए पर्वत पर देवों से मिलूँगा।

14 मैं बादलों के वेदी तक जाऊँगा।
मैं सर्वोच्च परमेश्वर सा बनूँगा।"

15 किन्तु वैसा नहीं हुआ। तू परमेश्वर के साथ ऊपर आकाश में नहीं जा पाया।
तुझे अधोलोक के नीचे गहरे पाताल में ले आया गया।
16 लोग जो तुझे टकटकी लगा कर देखा करते हैं, वे तुझे तेरे लिये सोचा करते हैं।
लोगों को आज यह दिखता है कि तू बस मरा हुआ है,
और लोग कहा करते हैं, "क्या यही वह व्यक्ति है
जिसने धरती के सारे राज्यों में भय फैलाया हुआ है,
17 क्या यह वही व्यक्ति है जिसने नगर नष्ट किये
और जिसने धरती को उजाड़ में बदल दिया
क्या यह वही व्यक्ति है जिसने लोगों को युद्ध में बन्दी बनाया
और उनको अपने घरों में नहीं जाने दिया"
18 धरती का हर राजा शान से मृत्यु को प्राप्त किया।
हर किसी राजा का मकबरा (घर) बना है।
19 किन्तु हे बुरे राजा, तुझको तेरी कब्र से निकाल फेंका दिया गया है।
तू उस शाखा के समान है जो वृक्ष से कट गयी और उसे काट कर दूर फेंक दिया गया।
तू एक गिरी हुई लाश है जिसे युद्ध में मारा गया,
और दूसरे सैनिक उसे रौंदते चले गये।
अब तू ऐसा दिखता है जैसे अन्य मरे व्यक्ति दिखते हैं।
तुझको कफन में लपेटा गया है।
20 बहुत से और भी राजा मरे।
उनके पास अपनी अपनी कब्र हैं।
किन्तु तू उनमें नहीं मिलेगा।
क्योंकि तूने अपने ही देश का विनाश किया।

अपने ही लोगों का तूने वध किया है।
जैसा विनाश तूने मचाया था।

21 उसकी सन्तानों के वध की तैयारी करो।
तुम उन्हें मृत्यु के घाट उतारो क्योंकि उनका पिता अपराधी है।
अब कभी उसके पुत्र नहीं होंगे।
उसकी सन्तानें अब कभी भी संसार को अपने नगरों से नहीं भरेंगी।
तेरी संतानें वैसा करती नहीं रहेगी।
तेरी संतानों को वैसा करने से रोक दिया जायेगा।

22 सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "मैं खड़ा होऊँगा और उन लोगों
के विरुद्ध लड़ूँगा। मैं प्रसिद्ध नगर बाबुल को उजाड़ दूँगा। बाबुल
के सभी लोगों को मैं नष्ट कर दूँगा। मैं उनकी संतानों, पोते—पोतियों
और वंशजों को मिटा दूँगा।" ये सब बातें यहोवा ने स्वयं कही थी।
23 यहोवा ने कहा था, "मैं बाबुल को बदल डालूँगा। उस स्थान में
पशुओं का वास होगा, न कि मनुष्यों का। वह स्थान दलदली प्रदेश
बन जायेगा। मैं 'विनाश की झाड़ू' से बाबुल को बाहर कर दूँगा।"
सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कही थीं।

परमेश्वर अश्शूर को भी दण्ड देगा

24 सर्वशक्तिमान यहोवा ने एक वचन दिया था। यहोवा ने कहा
था, "मैं वचन देता हूँ, कि यें बातें ठीक वैसे ही घटेंगी, जैसे मैंने इन्हें
सोचा है। ये बातें ठीक वैसे ही घटेंगी जैसी कि मेरी योजना है। 25 मैं
अपने देश में अश्शूर के राजा का नाश करुँगा अपने पहाड़ों पर
मैं अश्शूर के राजा को अपने पावों तले कुचलूँगा। उस राजा ने मेरे
लोगों को अपना दास बनाकर उनके कन्धों पर एक जूआ रख दिया
है। यहूदा की गर्दन से वह जूआ उठा लिया जायेगा। उस विपत्ति को
उठाया जायेगा। 26 मैं अपने लोगों के लिये ऐसी ही योजना बना रहा

हूँ। सभी जातियों को दण्ड देने के लिए, मैं अपनी शक्ति का प्रयोग करुँगा।”
27 यहोवा जब कोई योजना बनाता है तो कोई भी व्यक्ति उस योजना को रोक नहीं सकता! यहोवा लोगों को दण्ड देने के लिये जब अपना हाथ उठाता है तो कोई भी व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता।

पलिश्तियों को परमेश्वर का सन्देश

28 यह दुखद सन्देश उस वर्ष दिया गया था जब राजा आहाज की मृत्यु हुई थी।
29 हे, पलिश्तियों के प्रदेशों! तू बहुत प्रसन्न है क्योंकि जो राजा तुझे मार लगाया करता था, आज मर चुका है। किन्तु तुझे वास्तव में प्रसन्न नहीं होना चाहिये। यह सच है कि उसके शासन का अंत हो चुका है। किन्तु उस राजा का पुत्र अभी आकर राज करेगा और वह एक ऐसे साँप के समान होगा जो भयानक नागों को जन्म दिया करता है। यह नया राजा तुम लोगों के लिये एक बड़े फुर्तीले भयानक
नाग के जैसा होगा। 30 किन्तु मेरे दीन जन सुरक्षा पूर्वक खाते पीते
रह पायेंगे। उनकी संतानें भी सुरक्षित रहेंगी। मेरे दीन जन, सो सकेंगे और सुरक्षित अनुभव करेंगे। किन्तु तुम्हारे परिवार को मैं भूख से मार डालूँगा और तुम्हारे सभी बचे हुए लोग मर जायेंगे।

31 हे नगर द्वार के वासियों, रोओ!
नगर में रहने वाले तुम लोग, चीखो—चिल्लाओ!
पलिश्ती के तुम सब लोग भयभीत होंगे।
तुम्हारा साहस गर्म मोम की भाँति पिघल कर ढल जायेगा।

उत्तर दिशा की ओर देखो!
वहाँ धूल का एक बादल है! देखो,
अश्शूर से एक सेना आ रही है!
उस सेना के सभी लोग बलशाली हैं!
32 वह सेना अपने नगर में दूत भेजेंगे।

दूत अपने लोगों से क्या कहेंगे वे घोषणा करेंगे: “पलिश्ती
पराजित हुआ,
किन्तु यहोवा ने सिय्योन को सुदृढ़ बनाया है, और उसके दीन
जन वहाँ रक्षा पाने को गये।”

15

मोआब को परमेश्वर का सन्देश

1 यह बुरा सन्देश मोआब के विषय में है।

एक रात मोआब में स्थित आर के नगर का धन सेनाओं ने लूटा।
उसी रात नगर को तहस नहस कर दिया गया।
एक रात मोआब का किर नाम का नगर सेनाओं ने लूटा।
उसी रात वह नगर तहस नहस किया गया।
2 राजा का घराना और दिबोन के निवासी अपना दुःख रोने को ऊँचे
पर पूजास्थलों में चले गये।
मोआब के निवासी नबो और मेदबा के लिये रोते हैं।
उन सभी लोगों ने अपनी दाढ़ी और सिर अपना शोक दर्शाने
के लिये मुड़ाये थे।
3 मोआब में सब कहीं घरों और गलियों में,
लोग शोक वस्त्र पहनकर हाय हाय करते हैं।
4 हेशबोन और एलाले नगरों के निवासी बहुत ऊँचे स्वर में विलाप
कर रहे हैं।
बहुत दूर यहस की नगरी तक वह विलाप सुना जा सकता है।
यहाँ तक कि सैनिक भी डर गये हैं। वे सैनिक भय से काँप रहे हैं।

5 मेरा मन दुःख से मोआब के लिये रोता है।
लोग कहीं शरण पाने को दौड़ रहे हैं।
वे सुदूर जोआर में जाने को भाग रहे हैं।
लोग दूर के देश एग्लतशलीशिय्या को भाग रहे हैं।

लोग लूहीत की पहाड़ी चढ़ाई पर रोते बिलखाते हुए भाग रहे हैं।
लोग होरोनैम के मार्ग पर और वे बहुत ऊँचे स्वर में रोते बिलखते हुए जा रहे हैं।
6 किन्तु निम्रीम का नाला ऐसे सूख गया जैसे रेगिस्तान सूखा होता है।
वहाँ सभी वृक्ष सूख गये।
कुछ भी हरा नहीं हैं।
7 सो लोग जो कुछ उनके पास है उसे इकट्ठा करते हैं,
और मोआब को छोड़ते हैं।
उन वस्तुओं को लेकर वे नाले (पाप्लर या अराबा) से सीमा पार कर रहे हैं।

8 मोआब में हर कहीं विलाप ही सुनाई देता है।
दूर के नगर एगलैम में लोग बिलख रहे हैं।
बेरेलीम नगर के लोग विलाप कर रहे हैं।
9 दीमोन नगर का जल खून से भर गया है,
और मैं (यहोवा) दीमोन पर अभी और विपत्तियाँ ढाऊँगा।
मोआब के कुछ निवासी शत्रु से बच गये हैं।
किन्तु उन लोगों को खा जाने को मैं सिंहों को भेजूँगा।

16

1 उस प्रदेश के राजा के लिये तुम लोगों को एक उपहार भेजना
चाहिये। तुम्हें रेगिस्तान से होते हुए सिय्योन की पुत्री के पर्वत पर
सेला नगर से एक मेमना भेजना चाहिये।

2 अरी ओ मोआब की स्त्रियों,
अर्नोन की नदी को पार करने का प्रयत्न करो।
वे सहारे के लिये इधर– उधर दौड़ रही हैं।

वे ऐसी उन छोटी चिड़ियों जैसी है जो धरती पर पड़ी हुई है
जब उनका घोंसला गिर चुका।
3 वे पुकार रही हैं, “हमको सहारा दो!
बताओ हम क्या करें! हमारे शत्रुओं से तुम हमारी रक्षा करो।
तुम हमें ऐसे बचाओ जैसे दोपहर की धूप से धरती बचाती है।
हम शत्रुओं से भाग रहे हैं, तुम हमको छुपा लो।
हम को तुम शत्रुओं के हाथों में मत पड़ने दो।”
4 उन मोआब वासियों को अपना घर छोड़ने को विवश किया गया था।
अत: तुम उनको अपनी धरती पर रहने दो।
तुम उनके शत्रुओं से उनको छुपा लो।
यह लूट रुक जायेगी।
शत्रु हार जायेंगे और ऐसे पुरुष जो दूसरों की हानि करते हैं,
इस धरती से उखड़ेंगे।
5 फिर एक नया राजा आयेगा।
यह राजा दाऊद के घराने से होगा।

वह सत्यपूर्ण, करुण और दयालु होगा।
यह राजा न्यायी और निष्पक्ष होगा।
वह खरे और नेक काम करेगा।
6 हमने सुना है कि मोआब के लोग बहुत अभिमानी और गर्वीले हैं।
ये लोग हिंसक हैं और बड़ा बोले भी।
इनका बड़ा बोल सच्चा नहीं है।
7 समूचा मोआब देश अपने अभिमान के कारण कष्ट उठायेगा।
मोआब के सारे लोग विलाप करेंगे।
वे लोग बहुत दु:खी रहेंगे।
वे ऐसी वस्तुओं की इच्छा करेंगेजैसी उनके पास पहले हुआ करती थीं।
वे कीरहरासत में बने हुए अंजीर के पेंड़ों की इच्छा करेंगे।

8 वे लोग बहुत दु:खी रहा करेंगे क्योंकि हेशबोन के खेत और सिबमा
की अँगूर की बेलों में अँगूर नहीं लगा पा रहे हैं।
बाहर के शासकों ने अँगूर की बेलों को काट फेंका है।
याजेर की नगरी से लेकर मरुभूमि में दूर—दूर तक शत्रु की सेनाएँ
फैल गयी हैं।
वे समुद्र के किनारे तक जा पहुँची हैं।
9 मैं उन लोगों के साथ विलाप करुँगा जो याजेर और सिबमा के
निवासी हैं
क्योंकि अंगूर नष्ट किये गये।
मैं हेशबोन और एलाले के लोगों के साथ शोक करुँगा
क्योंकि वहाँ फसल नहीं होगी।
वहाँ गर्मी का कोई फल नहीं होगा।
वहाँ पर आनन्द के ठहाके भी नहीं होंगे।
10 अंगूर के बगीचे में आनन्द नहीं होगा और न ही वहाँ गीत गाये
जायेंगे।
मैं कटनी के समय की सारी खुशी समाप्त कर दूँगा।
दाखमधु बनने के लिये अंगूर तो तैयार है,
किन्तु वे सब नष्ट हो जायेंगे।
11 इसलिए मैं मोआब के लिये बहुत दु:खी हूँ।
मैं कीरहैरेम के लिये बहुत दु:खी हूँ।
मैं उन नगरों के लिये अत्याधिक दु:खी हूँ।
12 मोआब के निवासी अपने ऊँचे पूजा के स्थानों पर जायेंगे।
वे लोग प्रार्थना करने का प्रयत्न करेंगे।
किन्तु वे उन सभी बातों को देखेंगे जो कुछ घट चुकी है,
और वे प्रार्थना करने को दुर्बल हो जायेंगे।

13 यहोवा ने मोआब के बारे में पहले अनेक बार ये बातें कही
थीं 14 और अब यहोवा कहता है, “तीन वर्ष में (उस रीति से जैसे
किराये का मजदूर समय गिनता है) वे सभी व्यक्ति और उनकी वे

वस्तुएँ जिन पर उन्हें गर्व था, नष्ट हो जायेंगी। वहाँ बहुत थोड़े से लोग ही बचेंगे, बहुत से नहीं।”

17

आराम के लिए परमेश्वर का सन्देश

1 यह दमिश्क के लिये दु:खद सन्देश है। यहोवा कहता है कि
दमिश्क के साथ में बातें घटेंगी:

“दमिश्क जो आज नगर है किन्तु कल यह उजड़ जायेगा।
दमिश्क में बस टूटे फूटे भवन ही बचेंगे।
2 अरोएर के नगरों को लोग छोड़ जायेंगे।
उन उजड़े हुए नगरों में भेड़ों की रेवड़े खुली घूमेंगी।
वहाँ कोई उनको डराने वाला नहीं होगा।
3 एप्रैम (इस्राएल) के गढ़ नगर ध्वस्त हो जायेंगे।
दमिश्क के शासन का अन्त हो जायेगा।
जैसे घटनाएँ इस्राएल में घटती हैं वैसी ही घटनाएँ अराम में भी घटेंगी।
सभी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति उठा लिये जायेंगे।” सर्वशक्तिमान यहोवा ने बताया कि ये बातें घटेंगी।
4 उन दिनों याकूब की (इस्राएल की) सारी सम्पति चली जायेगी।
याकूब वैसा हो जायेगा जैसा व्यक्ति रोग से दुबला हो।

5 “वह समय ऐसा होगा जैसे रपाईम घाटी में फसल काटने के
समय होता है। मजदूर उन पौधों को इकट्ठा करते हैं जो खेत में
उपजते हैं। फिर वे उन पौधों की बालों को काटते हैं और उनसे
अनाज के दाने निकालते हैं।
6 “वह समय उस समय के भी समान होगा जब लोग जैतून की
फसल उतारते हैं। लोग जैतून के पेड़ों से जैतून झाड़ते हैं। किन्तु
पेड़ की चोटी पर प्राय: कुछ फल तब भी बचे रह जाते हैं। चोटी की

कुछ शाखाओं पर चार पाँच जैतून के फल छूट जाते हैं। उन नगरों
में भी ऐसा ही होगा।” सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कही थीं।
7 उस समय लोग परमेश्वर की ओर निहारेंगे। परमेश्वर, जिसने
उनकी रचना की है। वे इस्राएल के पवित्र की ओर सहायता के
लिये देखेगें। 8 लोग उन वेदियों पर विश्वास करना समाप्त कर देंगे
जिनको उन्होंने स्वयं अपने हाथों से बनाया था। अशेरा देवी के जिन
खम्भों और धूप जलाने की वेदियों को उन्होंने अपनी उँगलियों से
बनाया था, वे उन पर भरोसा करना बंद कर देंगे। 9 उस समय, सभी
गढ़—नगर उजड़ जायेंगे। वे नगर ऐसे पर्वत और जंगलों के समान
हो जायेंगे, जैसे वे इस्राएलियों के आने से पहले हुआ करते थे। बीते
हुए दिनों में वहाँ से सभी लोग दूर भाग गये थे क्योंकि इस्राएल
के लोग वहाँ आ रहे थे। भविष्य में यह देश फिर उजड़ जायेगा।
10 ऐसा इसलिये होगा क्योंकि तुमने अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को
भुला दिया है। तुमने यह याद नहीं रखा कि परमेश्वर ही तुम्हारा शरण
स्थल है।

तुम सुदूर स्थानों से कुछ बहुत अच्छी अँगूर की बेलें लाये थे।
तुम अंगूर की बेलों को रोप सकते हो किन्तु उन पौधों में बढ़वार
नहीं होगी। 11 एक दिन तुम अपनी अँगूर की उन बेलों को रोपोगे
और उनकी बढ़वार का जतन करोगे। अगले दिन, वे पौधे बढ़ने
भी लगेंगे किन्तु फसल उतारने के समय जब तुम उन बेलों के फल
इकट्ठे करने जाओगे तब देखोगे कि सब कुछ सूख चुका है। एक
बीमारी सभी पौधों का अंत कर देगी।

12 बहुत सारे लोगों का भीषणा नाद सुनो!
    यह नाद सागर के नाद जैसा भयानक है।
लोगों का शोर सुनो।
    ये शोर ऐसा है जैसे सागर की लहरे टकरा उठती हो।
13 लोग उन्हीं लहरों जैसे होंगे।
    परमेश्वर उन लोगों को झिड़की देगा, और वे दूर भाग जायेंगे।

लोग उस भूसे के समान होंगे जिस की पहाड़ी पर हवा उड़ाती फिरती है।
लोग वैसे हो जायेंगे जैसे आँधी उखाड़े जा रही है।
आँधी उसे उड़ाती है और दूर ले जाती है।
14 उस रात लोग बहुत ही डर जायेंगे।
सुबह होने से पहले, कुछ भी नहीं बच पायेगा।
सो शत्रुओं को वहाँ कुछ भी हाथ नहीं आयेगा।
वे हमारी धरती की ओर आयेंगे,
किन्तु वहाँ भी कुछ नहीं होगा।

18

कूश के लिये परमेश्वर का सन्देश

1 उस धरती को देखो जो कूश की नदियों के साथ—साथ फैली
है। इस धरती में कीड़े—मकोड़े भरे पड़े हैं। तुम उनके पंखों की
भिन्नाहट सुन सकते हो। 2 यह धरती लोगों को सरकण्डों की नावों
से सागर के पार भेजती है।

हे तेज़ चलने वाले हरकारो,
एक ऐसी जाति के लोगों के पास जाओ जो लम्बे और शक्तिशाली हैं!
(इन लम्बें शक्तिशाली लोगों से सब कहीं के लोग डरते हैं।
वे एक बलवान जाति के लोग हैं।
उनकी जाति दूसरी जातियों को पराजित कर देती हैं।
वे एक ऐसे देश के हैं जिसे नदियाँ विभाजित करती हैं।)
3 ऐसे उन लोगों को सावधान कर दो कि उनके साथ कोई बुरी घटना घटने को है।
उस जाति के साथ घटती हुई इस घटना को दुनिया के सब लोग देखेंगे।

लोग इसे इस तरह साफ—साफ देखेंगे, जैसे पहाड़ पर लगे हुए झण्डे
को लोग देखते हैं।
इन लम्बे और शक्तिशाली व्यक्तियों के साथ जो बातें घटेंगी,
उनके बारे में इस धरती के सभी निवासी सुनेंगे।
इसको वे इतनी स्पष्टता से सुनेंगे जितनी स्पष्टता से युद्ध से पहले
बजने वाले नरसिंगे की आवाज़ सुनाई देती हैं।

4 यहोवा ने कहा, "जो स्थान मेरे लिये तैयार किया गया है, मैं उस
स्थान पर होऊँगा। मैं चुपचाप इन बातों को घटते हुए देखूँगा। गर्मी
के एक सुहावने दिन दोपहर के समय जब लोग आराम कर रहे
होंगे (यह तब होगा जब कटनी का गर्म समय होगा, वर्षा नहीं होगी,
बस अलख सुबह की ओस ही पड़ेगी।) 5 तभी कोई बहुत भयानक
बात घटेगी। यह वह समय होगा जब फूल खिल चुके होंगे। नये
अँगूर फूट रहे होंगे और उनकी बढ़वार हो रही होगी। किन्तु फसल
उतारने के समय से पहले ही शत्रु आयेगा और इन पौधों को काट
डालेगा। शत्रु आकर अँगूर की लताओं को तोड़ डालेगा और उन्हें
कहीं दूर फेंक देगा। 6 अँगूर की यें बेलें शिकारी पहाड़ी पक्षियों और
जंगली जानवरों के खाने के लिये छोड़ दी जायेंगी। गर्मियों में पक्षी
इन दाख लताओं में बसेरा करेंगे और उस सदी में जंगली पशु इन
दाख लताओं को चरेंगे।" 7 उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा को एक
विशेष भेंट चढ़ाई जायेगी। यह भेंट उन लोगों की ओर से आयेगी,
जो लम्बे और शक्तिशाली हैं। (सब कहीं के लोग इन लोगों से डरते
हैं। ये एक शक्तिशाली जाति के लोग हैं। यह जाति दूसरी जाति के
लोगों को पराजित कर देती है। ये एक ऐसे देश के हैं, जो नदियों
से विभाजित हैं।) यह भेंट यहोवा के स्थान सिय्योन पर्वत पर लायी
जायेगी।

19

मिस्र के लिए परमेश्वर का सन्देश

1 मिस्र के बारे में दु:खद सन्देश: देखो! एक उड़ते हुए बादल
पर यहोवा आ रहा है। यहोवा मिस्र में प्रवेश करेगा और मिस्र के
सारे झूठे देवता भय से थर—थर काँपने लगेंगे। मिस्र वीर था किन्तु
उसकी वीरता गर्म मोम की तरह पिघल कर बह जायेगी।

2 परमेश्वर कहता है, "मैं मिस्र के लोगों को आपस में ही एक दूसरे
के विरुद्ध युद्ध करने के लिये उकसाऊँगा। लोग अपने ही भाइयों
से लड़ेंगे। पड़ोसी, पड़ोसी के विरोध में हो जायेगा। नगर, नगर के
विरोध में और राज्य, राज्य के विरोध में हो जायेंगे। 3 मिस्र के लोग
चक्कर में पड़ जायेंगे। वे लोग अपने झूठे देवताओं और बुद्धिमान
लोगों से पूछेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये। वे लोग अपने ओझाओं
और जादूगरों से पूछताछ करेंगे किन्तु उनकी सलाह व्यर्थ होगी।"
4 सर्वशक्तिमान यहोवा स्वामी का कहना है: "मैं (परमेश्वर) मिस्र को
एक कठोर स्वामी को सौंप दूँगा। एक शक्तिशाली राजा लोगों पर
राज करेगा।"

5 नील नदी का पानी सूख जायेगा। नदी के तल में पानी नहीं
रहेगा। 6 सभी नदियों से दुर्गन्ध आने लगेगी। मिस्र की नहरें सूख
जायेंगी। उनका पानी जाता रहेगा। पानी के सभी पौधे सड़ जायेंगे।
7 वे सभी पौधे जो नदी के किनारे उगे होंगे, सूख कर उड़ जायेंगे।
यहाँ तक कि वे पौधे भी, जो नदी के सबसे चौड़े भाग में होंगे, व्यर्थ
हो जायेंगे।

8 मछुआरे, और वे सभी लोग जो नील नदी से मछलियाँ पकड़ा
करते हैं, दु:खी होकर त्राहि—त्राहि कर उठेंगे। वे अपने भोजन के
लिए नील नदी पर आश्रित हैं किन्तु वह सूख जायेगी। 9 वे लोग
जो कपड़ा बनाया करते हैं, अत्यधिक दु:खी होंगे। इन लोगों को
सन का कपड़ा बनाने के लिए पटसन की आवश्यकता होगी किन्तु
नदी के सूख जाने से सन के पौधों की बढ़वार नहीं हो पायेगी।
10 पानीइकट्ठा करने के लिये बाँध बनाने वाले लोगों के पास काम
नहीं रह जायेगा। सो वे बहुत दु:खी होंगे।

11 सोअन नगर के मुखिया मूर्ख हैं। फिरौन के “बुद्धिमान मन्त्री”
गलत सलाह देते हैं। वे मुखिया लोग कहते हैं कि वे बुद्धिमान हैं।
उनका कहना है कि वे पुराने राजाओं के वंशज हैं। किन्तु जैसा वे
सोचते हैं, वैसे बुद्धिमान नहीं हैं। 12 हे मिस्र, तेरे बुद्धिमान पुरुष कहाँ
हैं उन बुद्धिमान लोगों को सर्वशक्तिमान यहोवा ने मिस्र के लिये जो
योजना बनाई है, उसका पता होना चाहिये। उन लोगों को, जो होने
वाला है, तुम्हें बताना चाहिये।

13 सोअन के मुखिया मूर्ख बना दिये गये हैं। नोप के मुखियाओं ने
झूठी बातों पर विश्वास किया है। सो मुखिया लोग मिस्र को गलत
रास्ते पर ले जाते हैं। 14 यहोवा ने मुखियाओं को उलझन में डाल
दिया है। वे भटक गये हैं और मिस्र को गलत रास्ते पर ले जा रहे
हैं। वे नशे में धुत ऐसे लोगों के समान हैं जो बीमारी के कारण धरती
में लोट रहे हैं। 15 मिस्र के लिए कोई कुछ नहीं कर पाएगा। (फिर
चाहे वे सिर हो अथवा पूँछ, “खजूर की शाखायें हो या सरकंडे।”
अर्थात् “महत्वपूर्ण हो या महत्वहीन लोग।”)

16 उस समय, मिस्र के निवासी भयभीत स्त्रियों के समान हो
जायेंगे। वे सर्वशक्तिमान यहोवा से डरेंगे। यहोवा लोगों को दण्ड
देने के लिए अपना हाथ उठायेगा और लोग डर जायेंगे। 17 मिस्र में
सब लोगों के लिये यहूदा का प्रदेश भय का कारण होगा। मिस्र में
कोई भी यहूदा का नाम सुन कर डर जायेगा। ऐसा इसलिये होगा
क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा ने भयानक घटनायें घटाने की योजना
बनायी है। 18 उस समय, मिस्र में ऐसे पाँच नगर होंगे जहाँ लोग
कनान की भाषा (यहूदी भाषा) बोलेंगे। इन नगरों में एक नगर का
नाम होगा “नाश की नगरी।” लोग सर्वशक्तिमान यहोवा के अनुसरण
की प्रतिज्ञा करेंगे।

19 उस समय मिस्र के बीच में यहोवा के लिये एक वेदी होगी।
मिस्र की सीमापर यहोवा को आदर देने के लिए एक स्मारक
होगा। 20 यह इस बात का प्रतीक होगा कि सर्वशक्तिमान यहोवा
शक्तिमान कार्य करता है। जब कभी लोग सहायता के लिए यहोवा

को पुकारेंगे, यहोवा सहायता भेजेगा। यहोवा लोगों को बचाने और उनकी रक्षा करने के लिये एक व्यक्ति को भेजेगा। वह व्यक्ति उन व्यक्तिओं को उन दूसरे लोगों से बचायेगा जो उनके साथ बुरी बातें करते हैं।

21 सचमुच उस समय, मिस्र के लोग यहोवा को जानेंगे। वे लोग
परमेश्वर से प्रेम करेंगे। वे लोग परमेश्वर की सेवा करेंगे और बहुत
सी बलियाँ चढ़ायेंगे। वे लोग यहोवा की मनौतियाँ मानेंगे और उन
मनौतियों का पालन करेंगे।
22 यहोवा मिस्र के लोगों को दण्ड देगा।
फिर यहोवा उन्हें (चंगा) क्षमा कर देगा और वे यहोवा की ओर लौट
आयेंगे। यहोवा उनकी प्रार्थनाएँ सुनेगा और उन्हें क्षमा कर देगा।

23 उस समय, वहाँ एक ऐसा राजमार्ग होगा जो मिस्र से अश्शूर
जायेगा। फिर अस्शूर से लोग मिस्र में जायेंगे और मिस्र से अश्शूर में।
मिस्र अश्शूर के लोगों के साथ परमेश्वर की उपासना करेगा।
24 उस
समय, इस्राएल, अश्शूर और मिस्र आपस में एक हो जायेंगे और
पृथ्वी पर शासन करेंगे। यह शासन धरती के लिये वरदान होगा।
25 सर्वशक्तिमान यहोवा इन देशों को आशीर्वाद देगा। वह कहेगा,
"हे मिस्र के लोगों, तुम मेरे हो। अश्शूर, तुझे मैंने बनाया है। इस्राएल,
मैं तेरा स्वामी हूँ। तुम सब धन्य हो!"

20

अश्शूर मिस्र और कूश को हरायेगा

1 सर्गोन अश्शूर का राजा था। सर्गोन ने तर्तान को नगर के विरुद्ध
युद्ध करने के लिए अशदोद भेजा। तर्तान ने वहाँ जा कर नगर पर
कब्जा कर लिया।
2 उस समय आमोस के पुत्र यशायाह के द्वारा
यहोवा ने कहा, "जा, और अपनी कमर से शोक वस्त्र उतार फेंक।
अपने पैरों की जूतियाँ उतार दे।" यशायाह ने यहोवा की आज्ञा का
पालन किया और वह बिना कपड़ों और बिना जूतों के इधर–उधर
घूमा।

3 फिर यहोवा ने कहा, "यशायाह तीन साल तक बिना कपड़ों
और बिना जूतियाँ पहने इधर—उधर घूमता रहा है। मिस्र और कूश
के लिए यह एक संकेत है कि 4 अश्शूर का राजा मिस्र और कूश को
हरायेगा। अश्शूर वहाँ के बंदियों को लेकर, उनके देशों से दूर ले
जायेगा। बूढ़े व्यक्ति और जवान लोग बिना कपड़ों और नंगे पैरों ले
जाये जायेंगे। वे पूरी तरह से नंगे होंगे। मिस्र के लोग लज्जित होंगे।
5 जो लोग सहायता के लिये कूश की ओर देखा करते थे, वे टूट
जायेंगे। जो लोग मिस्र की महिमा से चकित थे वे लज्जित होंगे।"
6 समुद्र के पास रहने वाले, वे लोग कहेंगे, "हमने सहायता के
लिये उन देशों पर विश्वास किया। हम उनके पास दौड़े गये ताकि
वे हमें अश्शूर के राजा से बचा लें किन्तु उन देशों को देखो कि उन
देशों पर ही जब कब्जा कर लिया गया तब हम कैसे बच सकते थे"

21

परमेश्वर का बाबुल को सन्देश

1 सागर के मरुप्रदेश के बारे में दु:खद सन्देश।

मरुप्रदेश से कुछ आने वाला है।
यह नेगव से आती हवा जैसा आ रही है।
यह किसी भयानक देश से आ रही है।
2 मैंने कुछ देखा है जो बहुत ही भयानक है और घटने ही वाला है।
मुझे गद्दार तुझे धोखा देते हुए दिखते हैं।
मैं लोगों को तुम्हारा धन छीनते हुए देखता हूँ।

एलाम, तुम जाओ और लोगों से युद्ध करो!
मादै, तुम अपनी सेनाएँ लेकर नगर को घेर लो तथा उसको पराजित करो!
मैं उस बुराई का अन्त करुँगा जो उस नगर में है।
3 मैंने यें भयानक बातें देखी और अब मैं बहुत डर गया हूँ।

डर के मारे पेट में दर्द हो रहा है।
यह दर्द प्रसव की पीड़ा जैसा है।
जो बातें मैं सुनता हूँ, वे मुझे बहुत डराती है।
जो बातें मैं देख रहा हूँ, उनके कारण मैं भय के मारे काँपने लगता हूँ।
4 मैं चिन्तित हूँ और भय से थर—थर काँप रहा हूँ।
मेरी सुहावनी शाम भय की रात बन गयी है।

5 लोग सोचते हैं, सब कुछ ठीक है।
लोग कहते हैं,
“चौकी तैयारी करो और उस पर आसन बिछाओ, खाओ, पिओ!”
किन्तु मेरा कहना है, “मुखियाओं! खड़े होओ और युद्ध की तैयारी करो।”
उसी समय सैनिक कह रहे हैं, “पहरेदारों को तैनात करो!
अधिकारियों, खड़े हो जाओ और अपनी ढालों को झलकाओ!”

6 मेरे स्वामी ने मुझे ये बातें बतायी हैं, “जा और नगर की रक्षा के
लिए किसी व्यक्ति को ढूँढ। 7 यदि वह रखवाला घुड़सवारों की,
गधों की अथवा ऊँटों की पंक्तियों को देखें तो उसे सावधानी के
साथ सुनना चाहिये।” 8 सो फिर वह पहरेदार जोर से बोला पहरेदार
ने कहा,

“मेरे स्वामी, मैं हर दिन चौकीदारी के बुर्ज पर चौकीदारी करता आया हूँ।
हर रात मैं खड़ा हुआ पहरा देता रहा हूँ। किन्तु...
9 देखो! वे आ रहे हैं!
मुझे घुड़सवारों की पंक्तियाँ दिखाई दे रही हैं।”

फिर सन्देशवाहक ने कहा,
"बाबुल पराजित हुआ,
बाबुल धरती पर ध्वस्त किया गया।
उसके मिथ्या देवों की सभी मूर्तियाँ
धरती पर लुढ़का दी गई और वे चकनाचूर हो गई हैं।"

10 यशायाह ने कहा, "हे खलिहान में अनाज की तरह रौंदे गए मेरे
लोगों, मैंने सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर से जो कुछ
सुना है, सब तुम्हें बता दिया है।"

एदोम को परमेश्वर का सन्देश

11 दूमा के लिये दुःखद सन्देश:

सेईर से मुझको किसी ने पुकारा।
उसने मुझ से कहा, "हे पहरेदार, रात अभी कितनी शेष बची है
अभी और कितनी देर यह रात रहेगी!"

12 पहरेदार ने कहा,
"भोर होने को है किन्तु रात फिर से आयेगी।
यदि तुझे कोई बात पूछनी है तो
लौट आ और मुझसे पूछ ले।"

अरब के लिये परमेश्वर का सन्देश

13 अरब के लिये दुःखद सन्देश।

हे ददानी के काफिले,
तू रात अरब के मरुभूमि में कुछ वृक्षों के पास गुजार ले।
14 कुछ प्यासे यात्रियों को पीने को पानी दो।
तेमा के लोगों, उन लोगों को भोजन दो जो यात्रा कर रहे हैं।

15 वे लोग ऐसी तलवारों से भाग रहे थे
जो उनको मारने को तत्पर थे।
वे लोग उन धनुषों से बचकर भाग रहे थे
जो उन पर छूटने के लिये तने हुए थे।
वे भीषण लड़ाई से भाग रहे थे।

16 मेरे स्वामी यहोवा ने मुझे बताया था कि ऐसी बातें घटेंगी।
यहोवा ने कहा था, "एक वर्ष में (एक ऐसा ढँग जिससे मजदूर किराये
का समय को गिनता है।) केदार का वैभव नष्ट होजायेगा। 17 उस
समय केदार के थोड़े से धनुषधारी, प्रतापी सैनिक ही जीवित बच
पायेंगे।" इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझे ये बातें बताई थीं।

22

यरूशलेम के लिये परमेश्वर का सन्देश

1 दिव्य दर्शन की घाटी के बारे में दु:खद सन्देश:

तुम लोगों के साथ क्या हुआ है
कयों तुम अपने घरों की छतों पर छिप रहे हो
2 बीते समय में यह नगर बहुत व्यस्त नगर था।
यह नगर बहुत शोरगुल से भरा और बहुत प्रसन्न था।
किन्तु अब बातें बदल गई।
तुम्हारे लोग मारे गये किन्तु तलवारों से नहीं,
और वे मारे गये
किन्तु युद्ध में लड़ते समय नहीं।
3 तुम्हारे सभी अगुवे एक साथ कहीं भाग गये
किन्तु उन्हें पकड़ कर बन्दी बनाया गया, जब वे बिना धनुष के थे।
तुम्हारे सभी अगुवे कहीं दूर भाग गये
किन्तु उन्हें पकड़ा और बन्दी बनाया गया।

4 मैं इसलिए कहता हूँ, “मेरी तरफ मत देखो,
बस मुझको रोने दो!
यरूशलेम के विनाश पर मुझे सान्त्वना देने के लिये
मेरी ओर मत लपको।”

5 यहोवा ने एक विशेष दिन चुना है। उस दिन वहाँ बलवा और
भगदड़ मच जायेगा। दिव्य दर्शन की घाटी में लोग एक दूसरे को रौंद
डालेंगे। नगर की चार दीवारी उखाड़ फेंकी जायेगी। घाटी के लोग
पहाड़ पर के लोगों के ऊपर चिल्लायेंगे। 6 एलाम के घुड़सवार सैनिक
अपनी—अपनी तरकसें लेकर घोड़ों पर चढ़े युद्ध को प्रस्थान करेंगे।
किर के लोग अपनी ढालों से ध्वनि करेंगे। 7 तुम्हारी इस विशेष
घाटी में सेनाएँ आ जुटेंगी। घाटी रथों से भर जायेगी। घुड़सवार
सैनिक नगर द्वारों के सामने तैनात किये जायेंगे। 8 उस समय यहूदा
के लोग उन हथियारों का प्रयोग करना चाहेंगे जिन्हें वे जंगल के
महल में रखा करते हैं। यहूदा की रक्षा करने वाली चहारदीवारी को
शत्रु उखाड़ फेंकेगा।

9-11 दाऊदर के नगर की चहारदीवारी तड़कने लगेगी और उसकी
दरारें तुम्हें दिखाई देंगी। सो तुम मकानों को गिनने लगोगे और दीवार
की दरारों को भरने के लिये तुम उन मकानों के पत्थरों का उपयोग
करोगे। उन दुहरी दीवारों के बीच पुराने तालाब का जल बचा कर
रखने के लिये तुम एक स्थान बनाओगे, और वहाँ पानी को एकत्र
करोगे।

यह सब कुछ तुम अपने आपको बचाने के लिये करोगे। फिर
भी उस परमेशवर पर तुम्हारा भरोसा नहीं होगा जिसने इन सब
वस्तुओं को बनाया है। तुम उसकी ओर (परमेश्वर) नहीं देखोगे
जिसने बहुत पहले इन सब वस्तुओं की रचना की थी। 12 सो, मेरा
स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा लोगों से उनके मरे हुए मित्रों के लिए
विलाप करने और दु:खी होने के लिये कहेगा। लोग अपने सिर मुँड़ा

लेंगे और शोक वस्त्र धारण करेंगे। 13 किन्तु देखो! अब लोग प्रसन्न
हैं। लोग खुशियाँ मना रहे हैं। वे लोग कह रहे हैं:

मवेशियों को मारो, भेड़ों का वध करो।
हम उत्सव मनायेंगे।
तुम अपना खाना खाओ और अपना दाखमधु पियो।
खाओ और पियो क्योंकि कल तो हमें मर जाना है।

14 सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें मुझसे कही थीं और मैंने उन्हें
अपने कानों सुना था: "तुम बुरे काम करने के अपराधी हो और मैं
निश्चय के साथ कहता हूँ कि इस अपराध के क्षमा किये जाने से
पहले ही तुम मर जाओगे।" मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये
बातें कही थीं।

शेबना के लिये परमेश्वर का सन्देश:

15 मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझसे ये बातें कहीं: "उस
शेबना नाम के सेवक के पास जाओ।" वह महल का प्रबन्ध–
अधिकारी है। 16 उस से पूछना, "तू यहाँ क्या कर रहा है क्या यहाँ
तेरे परिवार का कोई व्यक्ति गड़ा हुआ है यहाँ तू एक कब्र क्यों बना
रहा है" यशायाह ने कहा, "देखो इस आदमी को! एक ऊँचे स्थान
पर यह अपनी कब्र बना रहा है। अपनी कब्र बनाने के लिये यह
चट्टान को काट रहा है।

17-18 "हे पुरुष, यहोवा तुझे कुचल डालेगा। यहोवा तुझे बाँध
कर एक छोटी सी गेंद की तरह गोल बना कर किसी विशाल देश
में फेंक देगा और वहाँ तेरी मौत हो जायेगी।"

यहोवा ने कहा, "तुझे अपने रथों पर बड़ा अभिमान था। किन्तु
उस दूर देश में तेरे नये शासक के पास और भी अच्छे रथ हैं। उसके
महल में तेरे रथ महत्वपूर्ण नहीं दिखाई देंगे। 19 यहाँ मैं तुझे तेरे
महत्त्वपूर्ण काम से धकेल बाहर करूँगा। तेरे महत्त्वपूर्ण काम से
तेरा नया मुखिया तुझे दूर कर देगा। 20 उस समय मैं अपने सेवक

एल्याकीम को जो हिल्कियाह का पुत्र है, बुलाऊँगा 21 और तेरा
चोगा लेकर उस सेवक को पहना दूँगा। तेरा राजदण्ड भी मैं उसे दे
दूँगा। जो महत्त्वपूर्ण काम तेरे पास हैं, मैं उसे भी उस ही को दे दूँगा।
वह सेवक यरूशलेम के लोगों और यहूदा के परिवार के लिए पिता
के समान होगा।

22 "यहूदा के भवन की चाबी मैं उस पुरुष के गले में डाल दूँगा।
यदि वह किसी द्वार को खोलेगा तो वह द्वार खुला ही रहेगा। कोई भी
व्यक्ति उसे बंद नहीं कर पायेगा। यदि वह किसी द्वार को बंद करेगा
तो वह द्वार बंद हो जायेगा। कोई भी व्यक्ति उसे खोल नहीं पायेगा।
वह सेवक अपने पिता के घर में एक सिंहासन के समान होगा।
23 मैं उसे एक ऐसी खूँटी के समान सुदृढ बनाऊँगा जिसे बहुत सख़्त
तख्ते में ठोका गया है। 24 उसके पिता के घर की सभी माननीय
और महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ उसके ऊपर लटकेंगी। सभी वयस्क और
छोटे बच्चे उस पर निर्भर करेंगे। वे लोग ऐसे होंगे जैसे छोटे—छोटे
पात्र और बड़ी—बड़ी सुराहियाँ उसके ऊपर लटक रहीं हों।

25 "उस समय, वह खूँटी (शेबना) जो अब एक बड़े कठोर तख्ते
में गाड़ी हुई खूँटी है, दुर्बल हो कर टूट जायेगी। वह खूँटी धरती
पर गिर पड़ेगी और उस खूँटी पर लटकी हुई सभी वस्तुएँ नष्ट हो
जायेंगी। तब वह प्रत्येक बात जो मैंने उस सन्देश में बताई थी, घटित
होगी।" (ये बातें घटेंगी क्योंकि इन्हें यहोवा ने कहा है।)

23

लबानोन को परमेश्वर का सन्देश

1 सोर के विषय में दु:खद सन्देश:

हे तर्शीश के जहाज़ों, दु:ख मनाओ!
 तुम्हारा बन्दरगाह उजाड़ दिया गया है।
(इन जहाज़ो पर जो लोग थे, उन्हें यह समाचार उस समय बताया
 गया था जब वे कित्तियों के देश से अपने रास्ते जा रहे थे।)

2 हे समुद्र के निकट रहने वाले लोगों,
रुको और शोक मनाओ!
हे, सीदोन के सौदागरों शोक मनाओ।
सिदोन तेरे सन्देशवाहक समुद्र पार जाया करते थे।
उन लोगों ने तुझे धन दौलत से भर दिया।
3 वे लोग अनाज की तलाश में समुद्रों में यात्रा करते थे।
सोर के वे लोग नील नदी के आसपास जो अनाज पैदा होता था, उसे मोल ले लिया करते थे और फिर उस अनाज को दूसरे देशों में बेचा करते थे।
4 हे सीदोन, तुझे शर्म आनी चाहिए।
क्योंकि अब सागर और सागर का किला कहता है:
मैं सन्तान रहित हूँ। मुझे प्रसव की वेदना का ज्ञान नहीं है।
मैंने किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया।
मैंने युवती व युवक को पाल कर बड़े नहीं किया।
5 मिस्र सोर का समाचार सुनेगा
और यह समाचार मिस्र को दु:ख देगा।
6 तेरे जलयान तर्शीश को लौट जाने चाहिए।
हे सागरतट वासियों! दु:ख में डूब जाओ।
7 बीते दिनों में तुमने सोर नगर का रस लिया।
यह नगरी शुरु से ही विकसित होती रही।
उस नगर के कुछ लोग कहीं दूर बसने को चले गये।
8 सोर के नगर ने बहुत सारे नेता पैदा किये।
वहाँ के व्यापारी राजपुत्रों के समान होते हैं और वे लोग वस्तुएँ खरीदते व बेचते हैं।
वे हर कहीं आदर पाते हैं।
सो किसने सोर के विरुद्ध योजनाएँ रची हैं।
9 हाँ, सर्वशक्तिमान यहोवा ने वे योजनाएँ बनायी थी।
उसने ही उन्हें महत्त्वपूर्ण न बनाने का निश्चय किया था।
10 हे तर्शीश के जहाज़ो तुम अपने देश को लौट जाओ।

तुम सागर को ऐसे पार करो जैसे वह छोटी सी नदी हो।
कोई भी व्यक्ति अब तुम्हें नहीं रोकेगा।
11 यहोवा ने अपना हाथ सागर के ऊपर फैलाया है और राज्यों को कँपा दिया।
यहोवा ने कनान (फिनिसियाँ) के बारे में आदेश दे दिया है कि उसके गढ़ियों को नष्ट कर दिया जाये।
12 यहोवा कहता है, हे! सीदोन की कुँवारी पुत्री, तुझे नष्ट किया जायेगा।
अब तू और अधिक आनन्द न मना पायेगी।
किन्तु सोर के निवासी कहते हैं, "हमको कित्ती बचायेगा।"
किन्तु यदि तुम सागर को पार कर कित्तीमजाओ वहाँ भी तुम चैन का स्थान नहीं पाओगे।
13 अत: सोर के निवासी कहा करते हैं, "बाबुल के लोग हम को बचायेंगे!"
किन्तु तुम बाबुल के लोगों को धरती पर देखो।
एक देश के रुप में आज बाबुल का कोई अस्तित्व नहीं है।
बाबुल के ऊपर अश्शूर ने चढ़ाई की और उस के चारों ओर बुर्जियाँ बनाई।
सैनिकों ने सुन्दर घरों का सब धन लूट लिया।
अश्शूर ने बाबुल को जंगली पशुओं का घर बना दिया।
उन्होंने बाबुल को खण्डहरों में बदल दिया।
14 सो तर्शीश के जलयानों तुम विलाप करो।
तुम्हारा सुरक्षा स्थान (सोर) नष्ट हो जायेगा।

15 सत्तर वर्ष तक लोग सोर को भूल जायेंगे। (यह समय, किसी राजा के शासन काल के बराबर समय माना जाता था।) सत्तर वर्ष के बाद, सोर एक वेश्या के समान हो जायेगा। इस गीत में:

16 "हे वेश्या! जिसे पुरुषों ने भुला दिया।

तू अपनी वीणा उठा और इस नगर में घूम।
तू अपने गीत को अच्छी तरह से बजा, तू अक्सर अपना गीत गाया कर।
तभी तुझको लोग फिर से याद करेंगे।"

17 सत्तर वर्ष के बाद, परमेश्वर सोर के विषय में फिर विचार करेगा
और वह उसे एक निर्णय देगा। सोर में फिर से व्यापार होने लगेगा।
धरती के सभी देशों के लिये सोर एक वेश्या के समान हो जायेगा।
18 किन्तु सोर जिस धन को कमायेगा, उसको रख नहीं पायेगा।
सोर का अपने व्यापार से हुआ लाभ यहोवा के लिये बचाकर रखा
जायेगा। सोर उस लाभ को उन लोगों को दे देगा जो यहोवा की
सेवा करते हैं। इसलिये यहोवा के सेवक भर पेट खाना खायेंगे और
अच्छे कपड़े पहनेंगे।

24

परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देगा

1 देखो! यहोवा इस धरती को नष्ट करेगा। यहोवा भूचालों के
द्वारा इस धरती को मरोड़ देगा। यहोवा लोगों को कहीं दूर जाने को
विवश करेगा। 2 उस समय, हर किसी के साथ एक जैसी घटनाएँ
घटेगी, साधारण मनुष्य और याजक एक जैसे हो जायेंगे। स्वामी
और सेवक एक जैसे हो जायेंगे। दासियाँ और उनकी स्वामिनियाँ
एक समान हो जायेंगी। मोल लेने वाले और बेचने वाले एक जैसे
हो जायेंगे। कर्जा लेने वाले और कर्जा देने वाले लोग एक जैसे हो
जायेंगे। धनवान और ऋणी लोग एक जैसे हो जायेंगे। 3 सभी लोगों
को वहाँ से धकेल बाहर किया जायेगा। सारी धन—दौलत छीन ली
जायेंगी। ऐसा इसलिये घटेगा क्योंकि यहोवा ने ऐसा ही आदेश दिया
है। 4 देश उजड़ जायेगा और दु:खी होगा। दुनिया ख़ाली हो जायेगी
और वह दुर्बल हो जायेगी। इस धरती के महान नेता शक्तिहीन हो
जायेंगे।

5 इस धरती के लोगों ने इस धरती को गंदा कर दिया है। ऐसा
कैसा हो गया लोगों ने परमेश्वर की शिक्षा के विरोध में गलत काम
किये। (इसलिये ऐसा हुआ) लोगों ने परमेश्वर के नियमों का पालन
नहीं किया। बहुत पहले लोगों ने परमेश्वर के साथ एक वाचा की
थी। किन्तु परमेश्वर के साथ किये उस वाचा को लोगों ने तोड़ दिया।
6 इस धरती के रहने वाले लोग अपराधी हैं। इसलिये परमेश्वर ने
इस धरती को नष्ट करने का निश्चय किया। उन लोगों को दण्ड दिया
जायेगा और वहाँ थोड़े से लोग ही बच पायेंगे।

7 अँगूर की बेलें मुरझा रही हैं। नयी दाखमधु की कमी पड़
रही है। पहले लोग प्रसन्न थे। किन्तु अब वे ही लोग दु:खी हैं।
8 लोगों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करना छोड़ दिया है। प्रसन्नता की
सभी ध्वनियाँ रुक गयी हैं। खंजरिओं और वीणाओं का आनन्दपूर्ण
संगीत समाप्त हो चुका है। 9 अब लोग जब दाखमधु पीते हैं, तो
प्रसन्नता के गीत नहीं गाते। अब जब व्यक्ति दाखमधु पीते है, तब
वह उसे कड़वी लगती है।

10 इस नगर का एक अच्छा सा नाम है, “गड़बड़ से भरा”, इस
नगर का विनाश किया गया। लोग घरों में नहीं घुस सकते। द्वार
बंद हो चुके हैं। 11 गलियों में दुकानों पर लोग अभी भी दाखमधु
को पूछते हैं किन्तु समूची प्रसन्नता जा चुकी है। आनन्द तो दूर कर
दिया गया है। 12 नगर के लिए बस विनाश ही बच रहा है। द्वार तक
चकनाचूर हो चुके हैं।

13 फसल के समय लोग जैतून के पेड़ से जैतून को गिराया करेंगे।
किन्तु केवल कुछ ही जैतून पेड़ों पर बचेंगे।
जैसे अंगूर की फसल उतारने के बाद थोड़े से अंगूर बचे रह जाते हैं।
यह ऐसा ही इस धरती के राष्ट्रों के साथ होगा।
14 बचे हुए लोग चिल्लाने लग जायेंगे।

पश्चिम से लोग यहोवा की महानता की स्तुति करेंगे और वे,
प्रसन्न होंगे।
15 वे लोग कहा करेंगे, “पूर्व के लोगों, यहोवा की प्रशंसा करो!
दूर देश के लोगों, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का
गुणगान करो।”
16 इस धरती पर हर कहीं हम परमेश्वर के स्तुति गीत सुनेंगे।
इन गीतों में परमेश्वर की स्तुति होगी।
किन्तु मैं कहता हूँ, “मैं बरबाद हो रहा हूँ।
मैं जो कुछ भी देखता हूँ सब कुछ भयंकर है।
गद्दार लोग, लोगों के विरोधी हो रहे हैं,
और उन्हें चोट पहुँचा रहे हैं।”
17 मैं धरती के वासियों पर खतरा आते देखता हूँ।
मैं उनके लिये भय, गके और फँदे देख रहा हूँ।
18 लोग खतरे की सुनकर डर से काँप जायेंगे।
कुछ लोग भाग जायेंगे किन्तु वे गके
और फँदों में जा गिरेंगे और उन गकों से कुछ चढ़कर बच निकल
आयेंगे।
किन्तु वे फिर दूसरे फँदों में फँसेंगे।
ऊपर आकाश की छाती फट जायेगी
जैसे बाढ़ के दरवाजे खुल गये हो।
बाढ़े आने लगेंगी और धरती की नींव डगमग हिलने लगेंगी।
19 भूचाल आयेगा
और धरती फटकर खुल जायेगी।
20 संसार के पाप बहुत भारी हैं।
उस भार से दबकर यह धरती गिर जायेगी।
यह धरती किसी झोपड़ी सी काँपेगी
और नशे में धुत्त किसी व्यक्ति की तरह धरती गिर जायेगी।
यह धरती बनी न रहेगी।

21 उस समय यहोवा सबका न्याय करेगा।
उस समय यहोवा आकाश में स्वर्ग की सेनाएँ
और धरती के राजा उस न्याय का विषय होंगे।
22 इन सबको एक साथ एकत्र किया जायेगा।
उनमें से कुछ काल कोठरी में बन्द होंगे
और कुछ कारागार में रहेंगे।
किन्तु अन्त में बहुत समय के बाद इन सबका न्याय होगा।
23 यरूशलेम में सिय्योन के पहाड़ पर यहोवा राजा के रूप में राज्य करेगा।
अग्रजों के सामने उसकी महिमा होगी।
उसकी महिमा इतनी भव्य होगी कि चाँद घबरा जायेगा,
सूरज लज्जित होगा।

25

परमेश्वर का एक स्तुति—गीत

1 हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है।
मैं तेरे नाम की स्तुति करता हूँ
और मैं तुझे सम्मान देता हूँ।
तूने अनेक अद्भुत कार्य किये हैं।
जो भी शब्द तूने बहुत पहले कहे थे वे पूरी तरह से सत्य हैं।
हर बात वैसी ही घटी जैसे तूने बतायी थी।
2 तूने नगर को नष्ट किया।
वह नगर सुदृढ़ प्राचीरों से संरक्षित था।
किन्तु अब वह मात्र पत्थरों का ढेर रह गया।
परदेसियों का महल नष्ट कर दिया गया।
अब उसका फिर से निर्माण नहीं होगा।
3 सामर्थी लोग तेरी महिमा करेंगे।
क्रूर जातियों के नगर तुझसे डरेंगे।

4 यहोवा निर्धन लोगों के लिये जो जरुरतमंद हैं, तू सुरक्षा का स्थान
है।
अनेक विपत्तियाँ उनको पराजित करने को आती हैं किन्तु तू
उन्हें बचाता है।
तू एक ऐसा भवन है जो उनको तूफानी वर्षा से बचाता है
और तू एक ऐसी हवा है जो उनको गर्मी से बचाती है।
विपत्तियाँ भयानक आँधी और घनघोर वर्षा जैसी आती हैं।
वर्षा दीवारों से टकराती हैं और नीचे बह जाती है किन्तु मकान
में जो लोग हैं, उनको हानि नहीं पहुँचती है।
5 नारे लगाते हुए शत्रु ने ललकारा।
घोर शत्रु ने चुनौतियाँ देने को ललकारा।
किन्तु तूने हे परमेश्वर, उनको रोक लिया।
वे नारे ऐसे थे जैसे गर्मी किसी खुश्क जगह पर।
तूने उन क्रूर लोगों के विजय गीत ऐसे रोक दिये थे जैसे सघन मेघों
की छाया गर्मी को दूर करती है।

अपने सेवकों के लिए परमेश्वर का भोज

6 उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा इस पर्वत के सभी लोगों के
लिये एक भोज देगा। भोज में उत्तम भोजन और दाखमधु होगा।
दावत में नर्म और उत्तम माँस होगा।
7 किन्तु अब देखो, एक ऐसा पर्दा है जो सभी जातियों और सभी
व्यक्तियों को ढके है। इस पर्दे का नाम है, “मृत्यु।” 8 किन्तु मृत्यु
का सदा के लिये अंत कर दिया जायेगा और मेरा स्वामी यहोवा
हर आँख का हर आँसू पोंछ देगा। बीते समय में उसके सभी लोग
शर्मिन्दा थे। यहोवा उन की लज्जा का इस धरती पर से हरण कर
लेगा। यह सब कुछ घटेगा क्योंकि यहोवा ने कहा था, ऐसा हो।

9 उस समय लोग ऐसा कहेंगे,
“देखो यह हमारा परमेश्वर है!

यह वही है जिसकी हम बाट जोह रहे थे।
यह हमको बचाने को आया है।
हम अपने यहोवा की प्रतीक्षा करते रहे।
अत: हम खुशियाँ मनायेंगे और प्रसन्न होंगे कि यहोवा ने हमको बचाया है।”
10 इस पहाड़ पर यहोवा की शक्ति है
मोआब पराजित होगा।
यहोवा शत्रु को ऐसे कुचलेगा जैसे भूसा कुचला जाता है
जो खाद के ढेर में होता है।
11 यहोवा अपने हाथ ऐसे फैलायेगा जैसे कोई तैरता हुआ व्यक्ति फैलाता है।
तब यहोवा उन सभी वस्तुओं को एकत्र करेगा जिन पर लोगों को गर्व है।
यहोवा उन सभी सुन्दर वस्तुओं को बटोर लेगा जिन्हें उन्होंने बनाये थे
और वह उन वस्तुओं को फेंक देगा।
12 यहोवा लोगों की ऊँची दीवारों और सुरक्षा स्थानों को नष्ट कर देगा।
यहोवा उनको धरती की धूल में पटक देगा।

26

परमेश्वर का एक स्तुति—गीत

1 उस समय, यहूदा के लोग यह गीत गायेंगे:

यहोवा हमें मुक्ति देता है।
हमारी एक सुदृढ़ नगरी है।
हमारे नगर का सुदृढ़ परकोटा और सुरक्षा है।
2 उसके द्वारों को खोलो ताकि भले लोग उसमें प्रवेश करें।
वे लोग परमेश्वर के जीवन की खरी राह का पालन करते हैं।

3 हे यहोवा, तू हमें सच्ची शांति प्रदान करता है।
तू उनको शान्ति दिया करता है,
जो तेरे भरोसे हैं और तुझ पर विश्वास रखते हैं।

4 अत: सदैव यहोवा पर विश्वास करो।
क्यों क्योंकि यहोवा याह ही तुम्हारा सदा सर्वदा के लिये शरणस्थल होगा!
5 किन्तु अभिमानी नगर को यहोवा ने झुकाया है
और वहाँ के निवासियों को उसने दण्ड दियाहै।
यहोवा ने उस ऊँचे बसी नगरी को धरती पर गिराया।
उसने इसे धूल में मिलाने गिराया है।
6 तब दीन और नम्र लोग नगरी के खण्डहरों को अपने पैर तले रौंदेंगे।

7 खरापन खरे लोगों के जीने का ढंग है।
खरे लोग उस राह पर चलते हैं जो सीधी और सच्ची होती है।
परमेश्वर, तू उस राह को चलने के लिये सुखद व सरल बनाता है।
8 किन्तु हे परमेश्वर! हम तेरे न्याय के मार्ग की बाट जोह रहे हैं।
हमारा मन तुझे और तेरे नाम को स्मरण करना चाहता है।
9 मेरा मन रात भर तेरे साथ रहना चाहता है और मेरे अन्दर की आत्मा हर नये दिन की प्रात:
में तेरे साथ रहना चाहता है।
जब धरती पर तेरा न्याय आयेगा, लोग खरा जीवन जीना सीख जायेंगे।
10 यदि तुम केवल दुष्ट पर दया दिखाते रहो तो वह कभी भी अच्छे कर्म करना नहीं सीखेगा।
दुष्ट जन चाहे भले लोगों के बीच में रहे लेकिन वह तब भी बुरे कर्म करता रहेगा।
वह दुष्ट कभी भी यहोवा की महानता नहीं देख पायेगा।
11 हे यहोवा तू उन्हें दण्ड देने को तत्पर है किन्तु वे इसे नहीं देखते।

हे यहोवा तू अपने लोगों पर अपना असीम प्रेम दिखाता है
जिसे देख दुष्ट जन लज्जित हो रहे हैं।
तेरे शत्रु अपने ही पापों की आग में जलकर भस्म होंगे।
12 हे यहोवा, हमको सफलता तेरे ही कारण मिली है।
सो कृपा करके हमें शान्ति दे।

यहोवा अपने लोगों को नया जीवन देगा

13 हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है
किन्तु पहले हम पर दूसरे देवता राज करते थे।
हम दूसरे स्वामियों से जुड़े हुए थे
किन्तु अब हम यह चाहते हैं कि लोग बस एक ही नाम याद करें वह है तेरा नाम।
14 अब वे पहले स्वामी जीवित नहीं हैं।
वे भूत अब अपनी कब्रों से कभी भी नहीं उठेंगे।
तूने उन्हें नष्ट करने का निश्चय किया था
और तूने उनकी याद तक को मिटा दिया।
15 हे यहोवा, तूने जाति को बढ़ाया।
जाति को बढ़ाकर तूने महिमा पायी।
तूने प्रदेश की सीमाओं को बढ़ाया।
16 हे यहोवा, तुझे लोग दु:ख में याद करते हैं,
और जब तू उनको दण्ड दिया करता है
तब लोग तेरी मूक प्रार्थनाएँ किया करते हैं।
17 हे यहोवा, हम तेरे कारण ऐसे होते हैं
जैसे प्रसव पीड़ा को झेलती स्त्री हो
जो बच्चे को जन्म देते समय रोती—बिलखती और पीड़ा भोगती है।
18 इसी तरह हम भी गर्भवान होकर पीड़ा भोगतेहैं।
हम जन्म देते हैं किन्तु केवल वायु को।
हम संसार को नये लोग नहीं दे पाये।

हम धरती परउद्धार को नहीं ला पाये।
19 यहोवा कहता है,
मरे हुए तेरे लोग फिर से जी जायेंगे!
मेरे लोगों की देह मृत्यु से जी उठेगी।
हे मरे हुए लोगों, हे धूल में मिले हुओं,
उठो और तुम प्रसन्न हो जाओ।
वह ओस जो तुझको घेरे हुए है,
ऐसी है जैसे प्रकाश में चमकती हुई ओस।
धरती उन्हें फिर जन्म देगी जो अभी मरे हुए हैं।

न्याय: पुरस्कार या दण्ड

20 हे मेरे लोगों, तुम अपने कोठरियों में जाओ।
अपने द्वारों को बन्द करो
और थोड़े समय के लिये अपने कमरों में छिप जाओ।
तब तक छिपे रहो जब तक परमेश्वर का क्रोध शांत नहीं होता।
21 यहोवा अपने स्थान को तजेगा
और वह संसार के लोगों के पापों का न्याय करेगा।
उन लोगों के खून को धरती दिखायेगी जिनको मारा गया था।
धरती मरे हुए लोगों को और अधिक ढके नहीं रहेगी।

27

1 उस समय, यहोवा लिब्यातान का न्याय करेगा जो एक दुष्ट सर्प है।
हे यहोवा अपनी बड़ी तलवार,
अपनी सुदृढ़ और शक्तिशाली तलवार, कुंडली मारे सर्प लिब्यातान को मारने में उपयोग करेगा।
यहोवा सागर के विशालकाय जीव को मार डालेगा।
2 उस समय, वहाँ खुशियों से भरा अंगूर का एक बाग होगा।
तुम उसके गीत गाओ।

3 “मैं यहोवा, उस बाग का ध्यान रखूँगा।
मैं बाग को उचित समय पर सीचूँगा।
मैं बगीचे की रात दिन रखवाली करुँगा ताकि कोई भी उस को हानि न पहुँचा पाये।
4 मैं कुपित नहीं होऊँगा।
यदि काँटे कँटेली मुझे वहाँ मिले तो मैं वैसे रौंदूगा
जैसे सैनिक रौंदता चला जाता है और उनको फूँक डालूँगा।
5 लेकिन यदि कोई व्यक्ति मेरी शरण में आये
और मुझसे मेल करना चाहे तो वह चला आये
और मुझ से मेल कर ले।
6 आने वाले दिनों में याकूब (इस्राएल) के लोग उस पौधे के समान होंगे जिसकी जड़े उत्तम होती हैं।
याकूब का विकास उस पनपते पौधे सा होगा जिस पर बहार आई हो।
फिर धरती याकूब के वंशजों से भर जायेगी जैसे पेड़ों के फलों से वह भर जाती है।”

परमेश्वर इस्राएल को खोज निकालता है

7 यहोवा ने अपने लोगों को उतना दण्ड नहीं दिया है जितना उसने उनके शत्रुओं को दिया है। उसके लोग उतने नहीं मरे हैं जितने वे लोग मरे हैं जो इन लोगों को मारने के लिए प्रयत्नशील थे।

8 यहोवा इस्राएल को दूर भेज कर उसके साथ अपना विवाद सुलझा लेगा। यहोवा ने इस्राएल को उस तेज हवा के झोंके सा उड़ा दिया जो रेगिस्तान की गर्म लू के समान होता है।

9 याकूब का अपराध कैसे क्षमा किया जायेगा उसके पापों को कैसे दूर किया जाएगा ये बातें घटेंगी: वेदी की शिलाएँ चकनाचूर हो कर धूल में मिल जायेंगी; झूठे देवताओं के स्तम्भ और उनकी पूजा की वेदियाँ तहस—नहस कर दी जायेंगी।

10 यह सुरक्षित नगरी उजड़ गई है। सब लोग कहीं दूर भाग गए
हैं। वह नगर एक खुली चरागाह जैसा हो गया है। जवान मवेशी यहाँ
घास चर रहे हैं। मवेशी अँगूर की बेलों की शाखों से पत्तियाँ चर रहे
हैं। 11 अँगूर की बेलें सूख रहीं है। शाखाएँ कट कर गिर रही हैं और
स्त्रियाँ उन शाखाओं से धन का काम ले रही हैं।

लोग इसे समझ नहीं रहे हैं। इसीलिए उनका स्वामी परमेश्वर उन्हें
चैन नहीं देगा। उनका रचयिता उनके प्रति दयालु नहीं होगा।

12 उस समय, यहोवा दूसरे लोगों से अपने लोगों को अलग करने
लगेगा। परात नदी से वह इस कार्य का आरम्भ करेगा।

परात नदी से लेकर मिस्र की नदी तक यहोवा तुम इस्राएलियों
को एक एक करके इकट्ठा करेगा। 13 अश्शूर में अभी मेरे बहुत से
लोग खोये हुए हैं। मेरे कुछ लोग मिस्र को भाग गये हैं। किन्तु उस
समय एक विशाल भेरी बजाई जायेगी और वे सभी लोग वापस
यरूशलेम आजायेंगे और उस पवित्र पर्वत पर यहोवा के सामने वे
सभी लोग झुक जायेंगे।

28

उत्तर इस्राएल को चेतावनी

1 शोमरोन को देखो!
एप्रैम के मदमस्त लोग उस नगर पर गर्व करते हैं।
वह नगर पहाड़ी पर बसा है जिसके चारों तरफ एक सम्पन्न घाटी
है।
शोमरोन के वासी यह सोचा करते हैं कि उनका नगर फूलों के
मुकुट सा है।
किन्तु वे दाखमधु से धुत्त हैं
और यह “सुन्दर मुकुट” मुरझाये पौधे सा है।

2 देखो, मेरे स्वामी के पास एक व्यक्ति है जो सुदृढ़ और वीर है।

वह व्यक्ति इस देश में इस प्रकार आयेगा जैसे ओलों और
वर्षा का तूफान आता है।
वह देश में इस प्रकार आयेगा जैसे बाढ़ आया करती है।
वह शोमरोन के मुकुट को धरती पर उतार फेंकेगा।
3 नशे में धुत्त एप्रैम के लोग अपने "सुन्दर मुकुट" पर गर्व करते हैं
किन्तु वह नगरी पाँव तले रौंदी जायेगी। 4 वह नगर पहाड़ी
पर बसा है जिस के चारों तरफ एक सम्पन्न घाटी है किन्तु
वह "फूलों का सुन्दर मुकुट" बस एक मुरझाता हुआ पौधा
है।
वह नगर गर्मी में अंजीर के पहले फल के समान होगा।
जब कोई उस पहली अंजीर को देखता है तो जल्दी से तोड़कर उसे
चट कर जाता है।

5 उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा "सुन्दर मुकुट" बनेगा। वह
उन बचे हुए अपने लोगों के लिये "फूलों का शानदार मुकुट" होगा।
6 फिर यहोवा उन न्यायाधीशों को बुद्धि प्रदान करेगा जो उसके
अपने लोगों का शासन करते हैं। नगर द्वारों पर युद्धों में लोगों को
यहोवा शक्ति देगा। 7 किन्तु अभी वे मुखिया लोग मदमत्त हैं। याजक
और नबी सभी दाखमधु और सुरा से धुत्त हैं। वे लड़खड़ाते हैं और
नीचे गिर पड़ते हैं। नबी जब अपने सपने देखते हैं तब वे पिये हुए
होते हैं। न्यायाधीश जब न्याय करते हैं तो वे नशे में डूबे हुए होते
हैं। 8 हर खाने की मेज उल्टी से भरी हुई है। कहीं भी कोई स्वच्छ
स्थान नहीं रहा है।

परमेश्वर अपने लोगों की सहायता करना चाहता है

9 वे कहा करते हैं, यह व्यक्ति कौन है यह किसे शिक्षा देने की
कोशिश कर रहा है वह अपने सन्देश किसे समझा रहा है क्या उन
बच्चों को जिनका अभी—अभी दूध छुड़ाया गया है क्या उन बच्चों
को जिन्हें अभी—अभी अपनी माताओं की छाती से दूर किया गया

है 10 इसीलिए यहोवा उन से इस प्रकार बोलता है जैसे वे दूध मुँहे बच्चे हों।

सौ लासौ सौ लासौ
काव लाकाव काव लाकाव
ज़ेईर शाम ज़ेईर शाम।

11 फिर यहोवा उन लोगों से बात करेगा उसके होंठ काँपते हुए होंगे और वह उन लोगों से बातें करने में दूसरी विचित्र भाषा का प्रयोग करेगा।

12 यहोवा ने पहले उन लोगों से कहा था, "यहाँ विश्राम का एक स्थान है। थके मांदे लोगों को यहाँ आने दो और विश्राम पाने दो। यह शांति का ठौर है।" किन्तु लोगों ने परमेश्वर की सुननी नहीं चाही।
13 सो परमेश्वर के वचन किसी विचित्र भाषा के जैसे हो जाएँगे।

"सौ लासौ सौ लासौ
काव लाकाव काव लाकाव
ज़ेईर शाम ज़ेईर शाम।"

सो लोग जब चलेंगे तो पीछे की ओर लुढ़क जाएँगे और जख्मी होंगे। लोगों को फँसा लिया जाएगा और वे पकड़े जाएँगे।

परमेश्वर के न्याय से कोई नहीं बच सकता

14 हे, यरूशलेम के आज्ञा नहीं माननेवाले अभिमानी मुखियाओं,
तुम यहोवा का सन्देश सुनो। 15 तुम लोग कहते हो, "हमने मृत्यु के
साथ एक वाचा किया है। शेओल (मृत्यु का प्रदेश) के साथ हमारा एक अनुबन्ध है। इसलिए हम दण्डित नहीं होंगे। दण्ड हमें हानि पहुँचाये बिना हमारे पास से निकल जायेगा। अपनी चालाकियों और अपनी झूठों के पीछे हम छिप जायेंगे।"

16 इन बातों के कारण मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "मैं एक पत्थर—एक कोने का पत्थर—सिय्योन में धरती पर गाड़ूँगा। यह

एक अत्यन्त मूल्यवान पत्थर होगा। इस अति महत्त्वपूर्ण पत्थर पर ही हर किसी वस्तु का निर्माण होगा। जिसमें विश्वास होगा, वह कभी घबराएगा नहीं।

17 "लोग दीवार की सीध देखने के लिये जैसे सूत डाल कर देखते हैं, वैसे ही मैं जो उचित है उसके लिए न्याय और खरेपन का प्रयोग करूँगा। "तुम दुष्ट लोग अपनी झूठों और चालाकियों के पीछे अपने को छुपाने का जतन कर रहे हो, किन्तु तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। यह दण्ड ऐसा ही होगा जैसे तुम्हारे छिपने के स्थानों को नष्ट करने के
लिए कोई तूफान या कोई बाढ़ आ रही हो। 18 मृत्यु के साथ तुम्हारे
वाचा को मिटा दिया जायेगा। अधोलोक के साथ हुआ तुम्हारा सन्धि भी तुम्हारी सहायता नहीं करेगा।

"जब भयानक दण्ड तुम पर पड़ेगा तो तुम कुचले जाओगे। 19 वह
हर बार जब आएगा तुम्हें वहाँ ले जाएगा। तुम्हारा दण्ड भयानक होगा। तुम्हें सुबह दर सुबह और दिन रात दण्ड मिलेगा।

"तब तुम इस कहानी को समझोगे: 20 कोई पुरुष एक ऐसे बिस्तर
पर सोने का जतन कर रहा था जो उसके लिये बहुत छोटा था। उसके पास एक कंबल था जो इतना चौड़ा नहीं था कि उसे ढक ले। सो वह बिस्तर और वह कम्बल उसके लिए व्यर्थ रहे और देखो तुम्हारा वाचा भी तुम्हारे लिये ऐसा ही रहेगा।"

21 यहोवा वैसे ही युद्ध करेगा जैसे उसने पराजीम नाम के पहाड़ पर किया था। यहोवा वैसे ही कुपित होगा जैसे वह गिबोन की घाटी में हुआ था। तब यहोवा उन कामों को करेगा जो उसे निश्चय ही करने हैं। यहोवा कुछ विचित्र काम करेगा। किन्तु वह अपने काम को पूरा कर देगा। उसका काम किसी एक अजनबी का काम
है। 22 अब तुम्हें इन बातों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। यदि
तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे बन्धन की रस्सियाँ और अधिक कस जायेंगी। सर्वशक्तिमान यहोवा ने इस समूचे प्रदेश को नष्ट करने की ठान ली है।

जो शब्द मैंने सुने थे, अटल हैं। सो वे बातें अवश्य घटित होंगी।

यहोवा खरा दण्ड देता है

23 जो सन्देश मैं तुम्हें सुना रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनो। 24 क्या कोई
किसान अपने खेत को हर समय जोतता रहता है नहीं! क्या वह
माटी को हर समय संवारता रहता है नहीं! 25 किसान अपनी धरती
को तैयार करता है, और फिर उसमें बीज अलग अलग डालता है।
किसान अलग—अलग बीजों की रुपाई, ढंग से करता है। किसान
सौंफ के बीज बिखेरता है। किसान अपने खेत पर जीरे के बीज
बिखेरता है और एक किसान कठिये गेंहूँ को बोता है। एक किसान
खास स्थान पर जौ लगाता है। एक किसान कठिये गेंहूँ के बीजों
को खेत की मेंड़ पर लगाता है।

26 उसका परमेश्वर उसको शिक्षा देता है और अच्छे प्रकार से उसे
निर्देश देता है। 27 क्या कोई किसान तेज़ दाँतदार तख़्तों का प्रयोग
सौंफ के दानों को गहाने के लिये करता है नहीं! क्या कोई किसान
जीरे को गहाने के लिए किसी छकड़े का प्रयोग करता है नहीं! एक
किसान इन मसालों के बीजों के छिलके उतारने के लिये एक छोटे
से डण्डे का प्रयोग ही करता है। 28 रोटी के लिए अनाज को पीसा
जाता है, पर लोग उसे सदा पीसते ही तो नहीं रहते। अनाज को
दलने के लिए कोई घोड़ों से जुती गाड़ी का पहिया अनाज पर फिरा
सकता है किन्तु वह अनाज को पीस—पीस कर एक दम मैदा जैसा
तो नहीं बना देता। 29 सर्वशक्तिमान यहोवा से यह पाठ मिलता है।
यहोवा अद्‌भुत सलाह देता है। यहोवा सचमुच बहुत बुद्धिमान है।

29

यरूशलेम के प्रति परमेश्वर का प्रेम

1 परमेशवर कहता है, "अरीएल को देखो! अरीएल वह स्थान हैं
जहाँ दाऊद ने छावनी डाली थी। वर्ष दो वर्ष साथ उत्सवों के पूरे
चक्र तक गुजर जाने दो। 2 तब मैं अरीएल को दण्ड दूँगा। वह नगरी

दु:ख और विलाप से भर जायेगी। वह एक ऐसी मेरी बलि वेदी होगी
जिस पर इस नगरी के लोग बलि चढ़ायेंगे!
3 "अरीएल तेरे चारों तरफ मैं सेनाएँ लगाऊँगा। मैं युद्ध के लिये तेरे
विरोध में बुर्ज बनाऊँगा। 4 मैं तुझ को हरा दूँगा और धरती पर गिरा
दूँगा। तू धरती से बोलेगा। मैं तेरी आवाज ऐसे सुनूँगा जैसे धरती से
किसी भूत की आवाज उठ रही हो। धूल से मरी—मरी तेरी दुर्बल
आवाज आयेगी।"
5 तेरे शत्रु धूल के कण की भाँति नगण्य होंगे। वहाँ बहुत से
क्रूर व्यक्ति भूसे की तरह आँधी में उड़ते हुए होंगे। 6 सर्वशक्तिमान
यहोवा मेघों के गर्जन से, धरती की कम्पन से, और महाध्वनियों से
तेरे पास आयेगा। यहोवा दण्डित करेगा। यहोवा तूफान, तेज आँधी
और अग्नि का प्रयोग करेगा जो जला कर सभी नष्ट कर देगी। 7 फिर
बहुत बहुत देशों का अरीएल के साथ नगर और उसके किले के
विरोध में लड़ना रात के स्वप्न सा होगा। जो अचानक विलीन होता
है। 8 किन्तु उन सेनाओं को भी यह एक स्वप्न जैसा होगा। वे सेनाएँ
वे वस्तु न पायेंगी जिनको वे चाहते हैं। यह वैसा ही होगा जैसे भूखा
व्यक्ति भोजन का स्वप्न देखे और जागने पर वह अपने को वैसा
ही भूखा पाये। यह वैसा ही होगा जैसे कोई प्यासा पानी का स्वप्न
देखे और जब जागे तो वह अपने को प्यासा का प्यासा ही पाये।
सिय्योन के विरोध में लड़ते हुए सभी देश सचमुच ऐसे ही होंगे। यह
बात उन पर खरी उतरेगी। देशों को वे वस्तु नहीं मिलेगी जिनकी
उन्हें चाह है।

9 आश्चर्यचकित हो जाओ और अचरज मे भर जाओ।
तुम सभी धुत्त होगे किन्तु दाखमधु से नहीं।
देखो और अचरज करो!
तुम लड़खड़ाओगे और गिर जाओगे किन्तु सुरा से नहीं।
10 यहोवा ने तुमको सुलाया है।
यहोवा ने तुम्हारी आँखें बन्द कर दी। (नबी तुम्हारी आँखें है।)

तुम्हारी बुद्धि पर यहोवा ने पर्दा डाल दिया है। (नबी तुम्हारी
बुद्धि हैं।)

11 मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि ये बातें घटेंगी। किन्तु तुम मुझे नहीं
समझ रहे। मेरे शब्द उस पुस्तक के समान है, जो बन्द हैं और जिस
पर एक मुहर लगी है। 12 तुम उस पुस्तक को एक ऐसे व्यक्ति को दे
सकते हो जो पढ़ पुस्तक है और उस व्यक्ति से कह सकते हो कि
वह उस पुस्तक को पढ़े। किन्तु वह व्यक्ति कहेगा, "मैं पुस्तक को
पढ़ नहीं सकता क्योंकि यह बन्द है और मैं इसे खोल नहीं सकता।"
अथवा तुम उस पुस्तक को किसी भी ऐसे व्यक्ति को दे सकते हो
जो पढ़ नहीं सकता, और उस व्यक्ति से कह सकते हो कि वह उस
पुस्तक को पढ़े। तब वह व्यक्ति कहेगा, "मैं इस किताब को नहीं
पढ़ सकता क्योंकि मैं पढ़ना नहीं जानता।"

13 मेरा स्वामी कहता है, "ये लोग कहते हैं कि वे मुझे प्रेम करते
हैं। अपने मुख के शब्दों से वे मेरे प्रति आदर व्यक्त करते हैं। किन्तु
उनके मन मुझ से बहुत दूर है। वह आदर जिसे वे मेरे प्रति दिखाते
हैं, बस कोरे मानव नियम हैं जिन्हें उन्होंने कंठ कर रखा हैं। 14 सो
मैं इन लोगों को शक्ति से पूर्ण और अचरज भरी बातें करते हुए
आश्चर्यचकित करता रहूँगा। उनके बुद्धिमान पुरुष अपना विवेक
छोड़ बैठेंगे। उनके बुद्धिमान पुरुष समझने में असमर्थ हो जायेंगे।"

15 धिक्कार है उन लोगों को जो यहोवा से बातें छिपाने का जतन
करेंगे। वे सोचते हैं कि यहोवा तो समझेगा नहीं। वे लोग अन्धेरे में
पाप करते हैं। वे लोग अपने मन में कहा करते हैं, "हमें कोई देख
नहीं सकता। हम कौन हैं, इसे कोई व्यक्ति नहीं जानेगा।"

16 तुम भ्रम में पड़े हो। तुम सोचा करते हो, कि मिट्टी कुम्हार के
बराबर है। तुम सोचा करते हो कि कृति अपने कर्ता से कह सकती
है "तूने मेरी रचना नहीं की है!" यह वैसा ही है, जैसे घड़े का अपने

बनाने वाले कुम्हार से यह कहना, "तू समझता नहीं है तू क्या कर रहा है।"

एक उत्तम समय आ रहा है

17 यह सच है: कि लबानोन थोड़े दिनों बाद, अपने विशाल ऊँचे
पेड़ों को लिये सपाट जुते खेतों में बदल जायेगा और सपाट खेत
ऊँचे–ऊँचे पेड़ों वाले सघन वनों का रुप ले लेंगे। 18 पुस्तक के
शब्दों को बहरे सुनेंगे, अन्धे अन्धेरे और कोहरे में से भी देख लेंगे।
19 यहोवा दीन जनों को प्रसन्न करेगा। दीन जन इस्राएल के उस
पवित्रतम में आनन्द मनायेंगे।
20 ऐसा तब होगा जब नीच और क्रूर व्यक्ति समाप्त हो जायेंगे।
ऐसा तब होगा जब बुरा काम करने में आनन्द लेने वाले लोग चले
जायेंगे। 21 (वे लोग दूसरे लोगों के बारे में झूठ बोला करते हैं। वे
न्यायालय में लोगों को फँसाने का यत्न करते हैं। वे भोले भाले लोगों
को नष्ट करने में जुटे रहते हैं।)
22 सो यहोवा ने याकूब के परिवार से कहा। (यह वही यहोवा है
जिसने इब्राहीम को मुक्त किया था।) यहोवा कहता है, "अब याकूब
(इस्राएल के लोग) को लज्जित नहीं होना होगा। अब उसका मुँह
कभी पीला नहीं पड़ेगा। 23 वह अपनी सभी संतानों को देखेगा और
कहेगा कि मेरा नाम पवित्र है। इन संतानो को मैंने अपने हाथों से
बनाया है और ये संतानें मानेंगी कि याकूब का पवित्र (परमेश्वर)
वास्तव में पवित्र है और यें सन्ताने इस्राएल के परमेशवर को आदर
देंगी। 24 वे लोग जो गलतियाँ करते रहे हैं, अब समझ जायेंगे। वे
लोग जो शिकायत करते रहे हैं अब निर्देशों को स्वीकार करेंगे।"

30

इस्राएल को परमेश्वर पर विश्वास रखना चाहिये, मिस्र पर नहीं

1 यहोवा ने कहा, "मेरे इन बच्चों को देखो, ये मेरी बात नहीं मानते।
ये योजनाएँ बनाते हैं किन्तु मेरी सहायता नहीं लेना चाहते। ये दूसरी
जातियों के साथ समझौता करते हैं जबकि मेरी आत्मा उन समझौतों

को नहीं चाहती। ये लोग अपने सिर पर पाप का बोझ बढ़ाते चले
आ रहे हैं। 2 ये बच्चे सहायता के लिये मिस्र की ओर चले जा रहे
हैं, किन्तु ये मुझ से कुछ नहीं पूछते कि क्या ऐसा करना उचित है।
उन्हें उम्मीद है कि फिरौन उन्हें बचा लेगा। वे चाहते हैं कि वे मिस्र
उन्हें बचा ले।

3 "किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि मिस्र में शरण लेने से तुम्हारा बचाव
नहीं होगा। मिस्र तुम्हारी रक्षा करने में समर्थ नहीं होगा। 4 तुम्हारे
अगुआ सोअन में गये हैं और तुम्हारे राजदूत हानेस को चले गये हैं।
5 किन्तु उन्हें निराशा ही हाथ लगेगी। वे एक ऐसे राष्ट्र पर विश्वास
कर रहे हैं जो उन्हें नहीं बचा पायेगी। मिस्र बेकार है, मिस्र कोई
सहायता नहीं देगा। मिस्र के कारण उन्हें अपमानित और लज्जित
होना पड़ेगा।"

यहूदा को परमेश्वर का सन्देश

6 दक्षिण के पशुओं के लिए दु:खद सन्देश:

नेगव विपत्तियों और खतरों से भरा एका देश है। यह प्रदेश सिंहों,
नागों और उड़ने वाले साँपों से भरा पड़ा है। किन्तु कुछ लोग नेगव
से होते हुए यात्रा कर रहे हैं—वे मिस्र की ओर जा रहे हैं। उन लोगों
ने गधों की पीठों पर अपनी धन दौलत लादी हुई है। उन लोगों ने
अपना खज़ाना ऊँटों की पीठों पर लाद रखा है अर्थात् ये लोग एक
ऐसे देश पर भरोसा रखे हैं जो उन्हें नहीं बचा सकता। 7 मिस्र ही वह
बेकार का देश है। मिस्र की सहायता बेकार है। इसलिये मैं मिस्र
को एक ऐसा रहाब कहता हूँ जो निठल्ला पड़ा रहता है।

8 अब इसे एक चिन्ह पर लिख दो ताकि सभी लोग इसे देख
सकें। इसे एक पुस्तक में लिख दो। इन्हे अन्तिम दिनों के लिये
लिख दो। ये बातें सुदूर भविष्य के साक्षी होंगी:

9 ये लोग उन बच्चों के जैसे हैं जो अपने माता—पिता की बात
नहीं मानते। वे झूठे हैं और यहोवा की शिक्षाओं को सुनना तक

नहीं चाहते। 10 वे नबियों से कहा करते हैं, "हमें जो करना चाहिये,
उनके बारे में दर्शन मत किया करो! हमें सच्चाई मत बताओ! हमसे
ऐसी अच्छी अच्छी बातें कहो, जो हमें अच्छी लगे! हमारे लिये
केवल अच्छी बातें ही देखो। 11 जो बातें सचमुच घटने को हैं,
उन्हें देखना बन्द करो! हमारे रास्ते से हट जाओ! इस्राएल के
उस पवित्र परमेश्वर के बारे में हमें बताना बन्द करो।"

यहूदा की सहायता केवल परमेश्वर से आती है

12 इस्राएल का पवित्र (परमेश्वर) कहता है, "तुम लोगों ने यहोवा
से इस सन्देश को स्वीकार करने से मना कर दिया है। तुम लोग
सहायता के लिये लड़ाई—झगड़ों और झूठ पर निर्भर रहना चाहते
हो। 13 तुम क्योंकि इन बातों के लिए अपराधी हो, इसलिए तुम एक
ऐसी ऊँची दीवार के समान हो जिसमें दरारें आ चुकी हैं। वह दीवार
ढह जायेगी और छोटे—छोटे टुकड़ों में टूट कर ढेर हो जायेगी।
14 तुम मिट्टी के उस बड़े बर्तन के समान हो जाओगे जो टूट कर
छोटे—छोटे टुकड़ों में बिखर जाता है। ये टुकड़ें बेकार होते हैं। इन
टुकड़ों से तुम न तो आग से जलता कोयला ही उठा सकते हो और
न ही किसी जोहड़ से पानी।"

15 इस्राएल का वह पवित्र, मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "यदि
तुम मेरी ओर लौट आओ तो तुम बच जाओगे। यदि तुम मुझ पर
भरोसा रखोगे तभी तुम्हें तुम्हारा बल प्राप्त होगा किन्तु तुम्हें शांत
रहना होगा।"

किन्तु तुम तो वैसा करना ही नहीं चाहते! 16 तुम कहते हो, "नहीं,
हमें घोड़ों की आवश्यकता है जिन पर चढ़ कर हम दूर भाग जायें!"
यह सच है—तुम घोड़ों पर चढ़ कर दूर भाग जाओगे किन्तु शत्रु
तुम्हारा पीछा करेगा और वह तुम्हारे घोड़ों से अधिक तेज़ होगा।
17 एक शत्रु ललकारेगा और तुम्हारे हज़ारों लोग भाग खड़े होंगे।
पाँच शत्रु ललकारेंगे और तुम्हारे सभी लोग उनके सामने से भाग

जायेंगे। वहाँ तुम ऐसे ही अकेले बचे रह जाओगे, जैसे पहाड़ी पर
लगा तुम्हारे झण्डे का डण्डा।

परमेश्वर अपने लोगों की सहायता करेगा

18 यहोवा तुम पर अपनी करुणा दर्शाना चाहता है। यहोवा बाट
जोह रहा है। यहोवा तुम्हें सुख चैन देने के लिए तैयार खड़ा है।
यहोवा खरा परमेश्वर है और हर वह व्यक्ति जो यहोवा की सहायता
की प्रतीक्षा में है, धन्य (आनन्दित) होगा।
19 हाँ, हे सिय्योन पर्वत पर रहने वालो, हे यरूशलेम के निवासियों,
तुम लोग रोते बिलखते नहीं रहोगे। यहोवा तुम्हारे रोने को सुनेगा
और वह तुम पर दया करेगा। यहोवा तुम्हारी सुनेगा और वह तुम्हारी
सहायता करेगा।
20 यद्यपि मेरा यहोवा परमेश्वर तुम्हें दु:ख और कष्ट दे सकता
है ऐसे ही जैसे मानों वह ऐसा रोटी—पानी हो, जिसे तुम हर दिन
खाते—पीते हो। किन्तु वास्तव में परमेश्वर तो तुम्हारा शिक्षक है,
और वह तुमसे छिपा नहीं रहेगा। तुम स्वयं अपनी आँखों से अपने
उस शिक्षक को देखोगे। 21 तब यदि तुम बुरे काम करोगे और बुरा
जीवन जीओगे (दाहिनी ओर अथवा बायीं ओर) तो तुम अपने पीछे
एक आवाज़ को कहते सुनोगे, "खरी राह यह है। तुझे इसी राह में
चलना है।"
22 तुम्हारे पास चाँदी सोने से मढ़े मूर्ति हैं। उन झूठे देवों ने तुमको
बुरा (पापपूर्ण) बना दिया है। लेकिन तुम उन झूठे देवों की सेवा
करना छोड़ दोगे। तुम उन देवों को कूड़े कचरे और मैले चिथड़ों के
समान दूर फेंक दोगे।
23 उस समय, यहोवा तुम्हारे लिये वर्षा भेजेगा। तुम खेतों में बीज
बोओगे, और धरती तुम्हारे लिये भोजन उपजायेगी। तुम्हें भरपूर
उपज मिलेगा। तुम्हारे पशुओं के लिए खेतों में भरपूर चारा होगा।
तुम्हारे पशुओं के लिये वहाँ बड़ी—बड़ी चरागाहें होंगी। 24 तुम्हारे
मवेशियों और तुम्हारे गधों को जैसे चारे की आवश्यकता होगी, वह

सब उन्हें मिलेगा। खाने की इतनी बहुतायत होगी कि तुम्हें अपने
पशुओं के खाने के लिए भी फावड़ों और पंजों से चारा को फैलाना
होगा। 25 हर पर्वत और पहाड़ियों पर पानी से भरी जलधाराएँ होंगी।
ये बातें तब घटेंगी जब बहुत से लोग मर चुकेंगे और मीनारें ढह
चुकेंगी।

26 उस समय चाँद की चाँदनी सूरज की धूप सी उजली हो जायेगी।
सूर्य का प्रकाश आज से सात गुणा अधिक उज्ज्वल हो जायेगा। सूर्य
एक दिन में उतना प्रकाश देने लगेगा जितना वह पूरे सप्ताह में देता
है। ये बातें उस समय घटेंगी जब यहोवा अपनी टूटे लोगों की मरहम
पट्टी करेगा और सजा के कारण जो चोटें उन्हें आई हैं, उन्हें अच्छा
करेगा।

27 देखो! दूर से यहोवा का नाम आ रहा है। उसका क्रोध एक ऐसी
अग्नि के समान है जो धुएँ के काले बादलों से युक्त है। यहोवा का
मुख क्रोध से भरा हुआ है। उसकी जीभ एक जलती हुई लपट जैसी
है। 28 यहोवा की साँस (आत्मा) एक ऐसी विशाल नदी के समान
है जो तब तक चढ़ती रहती है, जब तक वह गले तक नहीं पहुँच
जाती। यहोवा सभी राष्ट्रों का न्याय करेगा। यह वैसा ही होगा जैसे
वह उन्हें विनाश की छलनी से छान डाले। यहोवा उनका नियन्त्रण
करेगा। यह नियन्त्रण वैसा ही होगा, जैसे पशु पर नियन्त्रण पाने के
लिए लगाम लगायी जाती है। वह उन्हें उनके विनाश की ओर ले
जाएगा।

29 उस समय, तुम खुशी के गीत गाओगे। वह समय उन रातों के
जैसा होगा जब तुम अपने उत्सव मनाना शुरु करते हो। तुम उन
व्यक्तियों के समान प्रसन्न होओगे जो इस्राएल की चट्टान यहोवा के
पर्वत पर जाते समय बांसुरी को सुनते हुए प्रसन्न होते हैं।

30 यहोवा सभी लोगों को अपनी महान वाणी सुनने को विवश
करेगा। यहोवा लोगों को क्रोध के साथ नीचे आती हुई अपनी
शक्तिशाली भुजा देखने को विवश करेगा। यह भुजा उस महा अग्नि

के समान होगी जो सब कुछ भस्म कर डालती है। यहोवा की शक्ति
उस आंधी के जैसी होगी जो तेज़ वर्षा और ओलों के साथ आती है।
31 अश्शूर जब यहोवा की आवाज़ सुनेगा तो वह डर जायेगा। यहोवा
लाठी से अश्शूर पर वार करेगा। 32 यहोवा अश्शूर को पीटेगा और
यह पिटाई ऐसी होगी जैसे कोई नगाड़ों और वीणाओं पर संगीत
बजा रहा हो। यहोवा अपने शक्तिशाली भुजा (शक्ति) से अश्शूर को
पराजित करेगा।

33 तोपेत को बहुत पहले से ही तैयार कर लिया गया है। राजा के लिये यह तैयार है। यह भट्टी बहुत गहरी और बहुत चौड़ी बनायी गयी है। वहाँ लकड़ी का एक बहुत बड़ा ढेर और आग मौजूद है। यहोवा की आत्मा जलती हुई गंधक की नदी के रुप में आयेगी और इसे भस्म कर के नष्ट कर देगी।

31

इस्राएल को परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा रखना चाहिये

1 उन लोगों को धिक्कार है जो सहायता पाने के लिये मिस्र की ओर उतर रहे हैं। ये लोग घोड़े चाहते हैं। उनका विचार है, घोड़े उन्हें बचा लेंगे। लोगों को आशा है कि मिस्र के रथ और घुड़सवार सैनिक उन्हें बचा लेंगे। लोग सोचते हैं कि वे सुरक्षित इसलिये हैं कि वह एक विशाल सेना है। लोग इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) पर भरोसा नहीं रखते। लोग यहोवा से सहायता नहीं माँगते।

2 किन्तु, यहोवा ही बुद्धिमान है और वह यहोवा ही है जो उन पर विपत्तियाँ ढायेगा। लोग यहोवा के आदेश को नहीं बदल पायेंगे। यहोवा बुरे लोगों (यहूदा) के विरुद्ध खड़ा होगा और युद्ध करेगा। यहोवा उन लोगों (मिस्र) के विरुद्ध युद्ध करेगा, जो उन्हें सहायता पहुँचाने का यत्न करते हैं।

3 मिस्र के लोग मात्र मनुष्य हैं परमेश्वर नहीं। मिस्र के घोड़े मात्र पशु हैं, आत्मा नहीं। यहोवा अपना हाथ आगे बढ़ायेगा और सहायक

(मिस्र) पराजित हो जायेगा और सहायता चाहने वाले लोगों (यहूदा) का पतन होगा। वे सभी लोग साथ साथ मिट जायेंगे।

4 यहोवा ने मुझ से यह कहा, "जब कोई सिंह अथवा सिंह का कोई बच्चा किसी पशु को खाने के लिये पकड़ता है तो वह मरे हुए पशु पर खड़ा हो जाता है और दहाड़ता है। उस समय उस शक्तिशाली सिंह को कोई भी डरा नहीं पाता। यदि चरवाहे आयें और उस सिंह का हॉका करने लगे तो भी वह सिंह डरेगा नहीं। लोग कितना ही शोर करते रहें, किन्तु वह सिंह नहीं भागेगा।"

इसी प्रकार सर्वशक्तिमान यहोवा सिय्योन पर्वत पर उतरेगा।
उस पर्वत पर यहोवा युद्ध करेगा। 5 सर्वशक्तिमान यहोवा वैसे ही
यरूशलेम की रक्षा करेगा जैसे अपने घोंसलों के ऊपर उड़ती हुई चिड़ियाँ। यहोवा उसे बचायेगा और उसकी रक्षा करेगा। यहोवा ऊपर से होकर निकल जायेगा और यरूशलेम की रक्षा करेगा।

6 हे, इस्राएल के वंशज। तुमने परमेश्वर से विद्रोह किया। तुम्हें
परमेश्वर की ओर मुड़ आना चाहिये। 7 तब लोग उन सोने चाँदी की
मूर्तियों को पूजना छोड़ेंगे जिन्हें तुमने बनाया है। उन मूर्तियों को बनाकर तुमने सचमुच पाप किया था।

8 यह सच है कि तलवार के द्वारा अश्शूर को हरा दिया जायेगा। किन्तु वह तलवार किसी मनुष्य की तलवार नहीं होगी। अश्शूर नष्ट हो जायेगा किन्तु वह विनाश किसी मनुष्य की तलवार के द्वारा नहीं किया जायेगा। अश्शूर परमेश्वर की तलवार से भाग निकलेगा। वह उस तलवार से भागेगा। किन्तु उसके जवान पुरुषों को पकड़कर
दास बना लिया जायेगा। 9 घबराहट में उनका शरण दाता गायब हो
जायेगा। उनके नेता पराजित कर दिये जायेंगे और वे अपने झण्डे को छोड़ देंगे।

ये सभी बातें यहोवा ने कही थी। यहोवा की अग्नि स्थल (वेदी) सिय्योन पर है और यहोवा की भट्टी (वेदी) यरूशलेम में है।

32

मुखियाओं को खरा और सच्चा होना चाहिए

1 मैं जो बातें बता रहा हूँ, उन्हें सुनो! किसी राजा को ऐसे राज
करना चाहिये जिससे भलाई आये। मुखियाओं को लोगों का नेतृत्व
करते समय निष्पक्ष निर्णय लेने चाहिये। 2 यदि ऐसा होगा तो राजा
उस स्थान के समान हो जायेगा जहाँ लोग आँधी और वर्षा से बचने
के लिये आश्रय लेते हैं। यह सूखी धरती में जलधाराओं के समान
होगा। यह ऐसा ही होगा जैसे गर्म प्रदेश में किसी बड़ी चट्टान की
ठण्डी छाया। 3 फिर लोगों की वे आँखे जो देख सकती हैं, वे बंद
नहीं रहेगी। उन के कान जो सुनते हैं, वे वास्तव में उस पर ध्यान
देंगे। 4 वे लोग जो उतावले हैं, वे सही फैसले लेंगे। वे लोग जो अभी
साफ़ साफ़ नहीं बोल पाते हैं, वे साफ़ साफ़ और जल्दी जल्दी बोलने
लगेंगे। 5 मूर्ख लोग महान व्यक्ति नहीं कहलायेंगे। लोग षड़यन्त्र
करने वालों को सम्मान योग्य नहीं कहेंगे।

6 एक मूर्ख व्यक्ति तो मूर्खतापूर्ण बातें ही कहता है और वह अपने
मन में बुरी बातों की ही योजनाएँ बनाता है। मूर्ख व्यक्ति अनुचित
कार्य करने की ही सोचता है। मूर्ख व्यक्ति यहोवा के बारे में ग़लत
बातें कहता है। मूर्ख व्यक्ति भूखों को भोजन नहीं करने देता। मूर्ख
व्यक्ति प्यासे लोगों को पानी नहीं पीने देता। 7 वह मूर्ख व्यक्ति बुराई
को एक हथियार के रुप में इस्तेमाल करता है। वह निर्धन लोगों
से झूठ के जरिए बरबाद करने के लिये बुरे बुरे रास्ते बताता रहता
है। उसकी यें झूठी बातें गरीब लोगों को निष्पक्ष न्याय मिलने से दूर
रखती हैं।

8 किन्तु एक अच्छा मुखिया अच्छे काम करने की योजना बनाता
है और उसकी वे अच्छी बातें ही उसे एक अच्छा नेता बनाती हैं।

बुरा समय आ रहा है

9 तुममें से कुछ स्त्रियाँ अभी खुश हैं। तुम सुरक्षित अनुभव करती
हो। किन्तु तुम्हें खड़े होकर जो वचन मैं बोल रहा उन्हें सुनना

चाहिये। 10 स्त्रियों तुम अभी सुरक्षित अनुभव करती हो किन्तु एक
वर्ष बाद तुम पर विपत्ति आने वाली है। क्यों क्योंकि तुम अगले वर्ष
अँगूर इकट्ठे नहीं करोगी—इकट्ठे करने के लिये अँगूर होंगे ही नहीं।

11 स्त्रियों, अभी तुम चैन से हो, किन्तु तुम्हें डरना चाहिये! स्त्रियों,
अभी तुम सुरक्षित अनुभव करती हो, किन्तु तुम्हें चिन्ता करनी
चाहिये! अपने सुन्दर वस्त्रों को उतार फेंको और शोक वस्त्रों को
धारण कर लो। उन वस्त्रों को अपनी कमर पर लपेट लो। 12 अपनी
शोक से भरी छातियों पर उन शोक वस्त्रों को पहन लो।

विलाप करो क्योंकि तुम्हारे खेत उजड़े हुए हैं। तुम्हारे अँगूर के
बगीचे जो कभी अँगूर दिया करते थे, अब खाली पड़े हैं। 13 मेरे
लोगों की धरती के लिये विलाप करो। विलाप करो, क्योंकि वहाँ
बस काँटे और खरपतवार ही उगा करेंगे। विलाप करो इस नगर के
लिये और उन सब भवनों के लिये जो कभी आनन्द से भरे हुए थे।

14 लोग इस प्रमुख नगर को छोड़ जायेंगे। यह महल और ये मिनारें
वीरान छोड़ दिये जायेंगे। वे जानवरों की माँद जैसे हो जाएँगे। नगर
में जंगली गधे विहार करेंगे। वहाँ भेड़े घास चरती फिरेंगी।

15 तब तक ऐसा ही होता रहेगा, जब तक परमेश्वर ऊपर से हमें
अपनी आत्मा नहीं देगा। अब धरती पर कोई अच्छाई नहीं है। यह
रेगिस्तान सी बनी हुई हैं किन्तु आने वाले समय में यह रेगिस्तान
उपजाऊ मैदान हो जायेगा। 16 यह उपजाऊ मैदान एक हरे भरे वन
जैसा बन जायेगा। चाहे जंगल हो चाहे उपजाऊ धरती, हर कहीं
न्याय और निष्पक्षता मिलेगी। 17 वह नेकी सदा—सदा के लिये
शांति और सुरक्षा को लायेगी। 18 मेरे लोग शांति के इस सुन्दर
क्षेत्र में निवास करेंगे। मेरे लोग सुरक्षा के तम्बुओं में रहा करेंगे। वे
निश्चिंतता के साथ शांतिपूर्ण स्थानों में निवास करेंगे।

19 किन्तु यें बातें घटें इससे पहले उस वन को गिरना होगा। उस
नगर को पराजित होना होगा। 20 तुममें से कुछ लोग हर जलधारा
के निकट बीज बोतेहो। तुम अपने मवेशियों और अपने गधों को

इधर–उधर चरने के लिए खुला छोड़ देते हो।तुम लोग बहुत प्रसन्न रहोगे।

33

बुराई से और अधिक बुराई ही पैदा होती है

1 देखो, तुम लोग लड़ाई करते हो और उन लोगों की वस्तुएँ लूटते
हो और वह भी ऐसे लोगों कि जिन्होंने कभी कोई तुम्हारी वस्तु नहीं
चोरी की। तुम ऐसे लोगों को धोखा देते रहे जिन्होंने कभी तुम्हें
धोखा नहीं दिया। इसलिये जब तुम चोरी करना बन्द कर दोगे तो
दूसरे लोग तुम्हारी वस्तुऐं चोरी करना शुरु कर देंगे। जब तुम लोगों
को धोखा देना बंद कर दोगे तो लोग तुम्हें धोखा देना आरम्भ कर
देंगे। तब तुम कहोगे।

2 हे यहोवा, हम पर दया कर।
हमने तेरे सहारे की बाट जोही है।
हे यहोवा, हर सुबह तू हमको शक्ति दे।
जब हम विपत्ति में हो, तू हम को बचा ले।
3 तेरी शक्तिशाली ध्वनि से लोग डरा करते हैं और वे तुझ से दूर भाग जाते हैं।
तेरी महानता के कारण राष्ट्र दूर भाग जाते हैं।

4 तुम लोग युद्ध में चोरी किया करते हो। वे सभी वस्तुएँ तुमसे ले
ली जायेंगी। अनगिनत लोग आयेंगे और तुम्हारी धन–दौलत तुमसे
छीन लेंगे। यह उस समय का जैसा होगा जब टिड्डी दल आता है
और तुम्हारी सभी फसलों को चट कर जाता है।

5 यहोवा बहुत महान है। वह बहुत ऊँचे स्थान पर रहता है। यहोवा
सिय्योन को खरेपन और सच्चाई से परिपूर्ण करता है।

6 हे यरूशलेम, तू सम्पन्न है। तू परमेश्वर के ज्ञान और विवेक से
सम्पन्न है। तू मुक्ति से भरपूर है। तू यहोवा का आदर करता है और
वही आदर तुझे सम्पन्न बनाता है। इसीलिए तू जान सकता है कि तू
सदा बना रहेगा।

7 किन्तु सुनो! वीर पुरुष बाहर पुकार रहे हैं और सन्देशवाहक
जो शांति लाते हैं, ज़ोर—ज़ोर से बोल रहे हैं। 8 रास्ते नष्ट हो गये हैं।
गलियों में कोई नहीं चल फिर रहा है। लोगों ने जो सन्धियाँ की थी,
वे उन्होंने तोड़ दिये हैं। लोग साक्षियों के प्रमाण पर विश्वास करने से
मना करते हैं। कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति का आदर नहीं करता।
9 धरती बीमार है और मर रही है। लबानोन मर रहा है और शारोन
की घाटी सूखी और उजाड़ है। बाशान और कर्मेल जो कभी एक
सुन्दर वृक्ष के समान विकसित हो रहे थे, अब उन वृक्षों का विकास
रुक गया है।

10 यहोवा कहता है, "मैं अब खड़ा होऊँगा और अपनी महानता
दर्शाऊँगा। अब मैं लोगों के लिए महत्वपूर्ण बनूँगा। 11 तुम लोगों ने
बेकार के काम किये हैं। वे चीजें भूसे और सूखी घास के जैसे हैं।
वे बेकार हैं। तुम्हारी आत्मा अग्नि के समान हो जायेगी और तुम्हें
जला डालेगी। 12 लोग तब तक जलते रहेंगे जब तक उनकी हड्डियाँ
जल कर चूने जैसी नहीं हो जातीं। लोग काँटों और सूखी झाड़ियों
के समान जल्दी ही जल जायेंगे।

13 "दूर देशों के लोगों, जो काम मैंने किये हैं, तुम उनके बारे में
सुनते हो। हे मेरे पास के लोगों, तुम मेरी शक्ति को समझते हो।"

14 सिय्योन में पापी डरे हुए हैं। वे लोग जो बुरे काम किया करते
हैं, डर से थर—थऱ काँप रहे हैं। वे कहते हैं, "क्या इस विनाशकारी
आग से हम में से कोई बच सकता है कौन रह सकता है इस आग
के निकट जो सदा—सदा के लिये जलती रहती है"

15 वे लोग ही इस आग में से बच पायेंगे जो अच्छे हैं, सच्चे हैं।
वे लोग पैसे के लिये दूसरों को हानि नहीं पहुँचाना चाहते। वे लोग

घूस नहीं लेते। दूसरे लोगों की हत्याओं की योजना को वे सुनने
तक से मना कर देते हैं। बुरे काम करने की योजनाओं को वे देखना
भी नहीं चाहते। 16 ऐसे लोग ऊँचे स्थानों पर सुरक्षा पूर्वक निवास
करेंगे। ऊँची चट्टान की गढ़ियों में वे सुरक्षित रहेंगे। ऐसे लोगों के
पास सदा ही खाने को भोजन और पीने को जल रहेगा।

17 तुम्हारी आँखे उस राजा (परमेश्वर) का, उसकी सुंदरता में दर्शन
करेंगी। तुम उस महान धरती को देखोगे। 18-19 बीते हुए दिनों में
तुमने जो कष्ट उठाये हैं, तुम उनके बारे में सोचोगे। तुम सोचोगे,
"दूसरे देशों के वे लोग कहाँ हँ वे लोग ऐसी बोली बोला करते थे,
जिसे हम समझ नहीं सकते थे। दूसरे देशों के वे सेवक और कर
एकत्र करने वाले कहाँ है वे गुप्तचर जिन्होंने हमारी सुरक्षा मिनारों
का लेखा जोखा लिया था, कहाँ हैं वे सब समाप्त हो गये!"

परमेश्वर यरूशलेम को बचायेगा

20 हमारे धर्मिक उत्सवों की नगरी, सिय्योन को देखो। विश्राम
निवास के उस सुन्दरस्थान यरूशलेम को देखो। यरूशलेम उस
तम्बू के समान है जिसे कभी उखाड़ा नहीं जायेगा। वे खूँटे जो उसे
अपने स्थान पर थामे रखते हैं, कभी उखाड़े नहीं जायेंगें। उसके
रस्से कभी टूटेंगे नहीं। 21-23 वहाँ हमारे लिए शक्तिशाली यहोवा
विस्तृत झरनों और नदियों वाले एक स्थान के समान होगा। किन्तु
उन नदियों पर कभी शत्रु की नौकाएँ अथवा शक्तिशाली जहाज़ नहीं
होंगे। उन नौकाओं पर काम करने वाले तुम लोग रस्सियों को नहीं
थामे रख सके। तुम मस्तूल को मजबूत नहीं बनाये रख सके। सो
तुम अपनी पालों को भी नहीं खोल पाओगे। क्यों क्योंकि यहोवा
हमारा न्यायकर्ता है। यहोवा हमारे लिए नियम बनाता है। यहोवा
हमारा राजा है। वह हमारी रक्षा करता है। इसी से यहोवा हमें बहुत
सा धन देगा। यहाँ तक कि अपाहिज लोग भी युद्ध में बहुत सा धन
जीत लेंगे। 24 वहाँ रहने वाला कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कहेगा, "मैं

रोगी हूँ।” वहाँ रहने वाले लोग ऐसे लोग हैं जिनके पाप क्षमा कर दिये गये हैं।

34

परमेश्वर अपने शत्रुओं को दण्ड देगा

1 हे सभी देशों के लोगों, पास आओ और सुनो! तुम सब लोगों
को ध्यान से सुनना चाहिये। हे धरती और धरती पर के सभी लोगों,
हे जगत और जगत की सभी वस्तुओं, तुम्हें इन बातों पर कान देना
चाहिये। 2 यहोवा सभी देशों और उनकी सेनाओं पर कुपित है।
यहोवा उन सबको नष्ट कर देगा। वह उन सभी को मरवा डालेगा।
3 उनकी लाशें बाहर फेंक दी जायेंगी। लाशों से दुर्गन्ध उठेगी और
पहाड़ के ऊपर से खून नीचे को बहेगा। 4 आकाश चर्म पत्र के
समान लपेट कर मूंद दिये जायेंगे। ग्रह—तारे मर कर किसी अँगूर
की बेल या अंजीर के पत्तों के समान गिरने लगेंगे। आकाश के सभी
तारे पिघल जायेंगे। 5 यहोवा कहता है, “ऐसा उस समय होगा जब
आकाश में मेरी तलवार खून में सन जायेगी।”

देखो! यहोवा की तलवार एदोम को काट डालेगी। यहोवा ने उन
लोगों को अपराधी ठहराया है सो उन लोगों को मरना ही होगा।
6 क्यों क्योंकि यहोवा ने निश्चय किया कि बोस्रा और एदोम के नगरों
में मार काट का एक समय आएगा। 7 सो मेढे, मवेशी और हट्टे कट्टे
जंगली बैल मारे जायेंगे। धरती उनके खून से भर जायेगी। मिट्टी
उनकी चर्बी से पट जायेगी।

8 ऐसी बातें घटेंगी क्योंकि यहोवा ने दण्ट देने का एक समय
निश्चित कर लिया है। यहोवा ने एक वर्ष ऐसा चुन लिया है जिसमें
लोग अपने उन बुरे कामों के लिये जो उन्होंने सिय्योन के विरुद्ध
किये हैं, अवश्य ही भुगतान कर देंगे। 9 एदोम की नदियाँ ऐसी हो
जायेंगी जैसे मानो वे गर्म तारकोल की हों। एदोम की धरती जलती
हुई गंधक और तारकोल के समान हो जायेगी। 10 वे आगे रात दिन
जला करेंगी। कोई भी व्यक्ति उस आग को रोक नहीं पायेगा। एदोम

से सदा धुँआ उठा करेगा। वह धरती सदा—सदा के लिये नष्ट हो
जायेगी। उस धरती से होकर फिर कभी कोई नहीं गुज़रा करेगा।
11 वह धरती परिंदों और छोटे—छोटे जानवरों की हो जायेंगी। वहाँ
उल्लू और कौवों का वास होगा। परमेश्वर उस धरती को सूनी उजाड़
भूमि में बदल देगा। यह वैसी ही हो जायेगी जैसी यह सृष्टि से पहले
थी। 12 स्वतन्त्र व्यक्ति और मुखिया लोग समाप्त हो जायेंगे। उन
लोगों को शासन करने के लिए वहाँ कुछ भी नहीं बचेगा।

13 वहाँ के सभी सुन्दर भवनों में काँटे और जंगली झाड़ियाँ उग
आयेंगी। जंगली कुत्ते और उल्लू उन मकानों में वास करेंगे। परकोटों
से युक्त नगरों को जंगली जानवर अपना निवास बना लेंगे। वहाँ
जो घास उगेगी उसमें बड़े—बड़े पक्षी रहेंगे। 14 वहाँ जंगली बिल्लयाँ
और लकड़बघ्घे साथ रहा करेंगे तथा जंगली बकरियाँ वहाँ अपने
मित्रों को बुलायेंगी। रात के जीव जन्तु वहाँ अपने लिए आश्रय
खोजते फिरेंगे और वहीं विश्राम करने के लिए अपनी जगह बना
लेंगे। 15 साँप वहाँ अपने घर बना लेंगे। वहाँ साँप अपने अण्डे दिया
करेंगें। अण्डे फूटेंगे और उन अन्धकारपूर्ण स्थानों से रेंगते हुए साँप
के बच्चे बाहर निकलेंगे। वँहा मरी वस्तुओं को खाने वाले पक्षी एक
के बाद एक इकट्ठे होते चले जाएँगे।

16 यहोवा के चर्म पत्र को देखो। पढ़ो उसमें क्या लिखा है। कुछ
भी नहीं छुटा है। उस चर्म पत्र में लिखा है कि वे सभी पशु पक्षी इकट्ठे
हो जायेंगे। इसलिए परमेश्वर के मुख ने यह आदेश दिया और उसकी
आत्मा ने उन्हें एक साथ इकट्ठा कर दिया। परमेश्वर की आत्मा उन्हें
परस्पर एकत्र करेगी। 17 परमेश्वर उनके साथ क्या करेगा, यह उसने
निश्चय कर लिया है। इसके बाद परमेश्वर ने उनके लिए एक जगह
चुनी। परमेश्वर ने एक रेखा खींची और उन्हें उनकी धरती दिखा दी।
इसलिए वह धरती सदा सदा पशुओं की हो जायेगी। वे वहाँ वर्ष
दर रहते चले जायेंगे।

35

परमेश्वर अपने लोगों को सुख देगा

1 सूखा रेगिस्तान बहुत खुशहाल हो जायेगा। रेगिस्तान प्रसन्न होगा
और एक फूल के समान विकसित होगा। 2 वह रेगिस्तान खिलते
हुये फलों से भर उठेगा और अपनी प्रसन्नता दर्शाने लगेगा। ऐसा लगेगा जैसे रेगिस्तान आनन्द में भरा नाच रहा है। यह रेगिस्तान ऐसा सुन्दर हो जायेगा जैसा लबानोन का वन है, कर्मेल का पहाड़ है और शारोन की घाटी है। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि सभी लोग यहोवा की महिमा का दर्शन करेंगे। लोग हमारे परमेश्वर की महानता को देखेंगे।

3 दुर्बल बाँहों को फिर से शक्तिपूर्ण बनाओ। दुर्बल घुटनों को
मज़बूत करो। 4 लोग डरे हुए हैं और असमंजस में पड़े हैं। उन
लोगों से कहो, "शक्तिशाली बनो! डरो मत!" देखो, तुम्हारा परमेश्वर आयेगा और तुम्हारे शत्रुओं को जो उन्होंने किया है, उसका दण्ड देगा। वह आयेगा और तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल देगा और तुम्हारी रक्षा
करेगा। 5 फिर तो अन्धे देखने लगेंगे। उनकी आँखें खुल जायेंगी।
फिर तो बहरे लोग सुन सकेंगे। उन के कान खुल जायेंगे। 6 लूले–
लंगड़े लोग हिरन की तरह नाचने लगेंगे और ऐसे लोग जो अभी गूंगे हैं, प्रसन्न गीत गाने में अपनी वाणी का उपयोग करने लगेंगे। ऐसा उस समय होगा जब मरूभूमि में पानी के झरने बहने लगेंगे।
सूखी धरती पर झरने बह चलेंगे। 7 लोग अभी जल के रूप में मृग
मरीचिका को देखते हैं किन्तु उस समय जल के सच्चे सरोवर होंगे। सूखी धरती पर कुएँ हो जायेंगे। सूखी धरती से जल फूट बहेगा। जहाँ एक समय जंगली जानवरों का राज था, वहाँ लम्बे लम्बे पानी के पौधे उग आयेंगे।

8 उस समय, वहाँ एक राह बन जायेगी और इस राजमार्ग का
नाम होगा "पवित्र मार्ग"। उस राह पर अशुद्ध लोगों को चलने की अनुमति नहीं होगी। कोई भी मूर्ख उस राह पर नहीं चलेगा। बस

परमेश्वर के पवित्र लोग ही उस पर चला करेंगे। 9 उस सड़क पर
कोई खतरा नहीं होगा। लोगों को हानि पहुँचाने के लिये उस सड़क
पर शेर नहीं होंगे। कोई भी भयानक जन्तु वहाँ नहीं होगा। वह सड़क
उन लोगों के लिए होगी जिन्हें परमेश्वर ने मुक्त किया है।

10 परमेश्वर अपने लोगों को मुक्त करेगा और वे लोग फिर लौट
कर वहाँ आयेंगे। लोग जब सिय्योन पर आयेंगे तो वे प्रसन्न होंगे। वे
सदा सदा के लिए प्रसन्न हो जायेंगे। उनकी प्रसन्नता उनके माथों पर
एक मुकुट के समान होगी। वे अपनी प्रसन्नता और आनन्द से पूरी
तरह भर जायेंगे। शोक और दु:ख उनसे दूर बहुत दूर चले जायेंगे।

36

अश्शूर का यहूदा पर आक्रमण

1 हिजकिय्याह यहूदा का राजा था और सन्हेरीब अश्शूर का राजा
था। हिजकिय्याह के शासन के चौदहवें वर्ष में सन्हेरीब ने यहूदा के
किलाबन्द नगरों से युद्ध किया और उसने उन नगरों को हरा दिया।
2 सन्हेरीब ने अपने सेनापति को यरूशलेम से लड़ने को भेजा। वह
सेनापति लाकीश को छोड़कर यरूशलेम में राजा हिजकिय्याह के
पास गया। वह अपने साथ एक शक्तिशाली सेना को भी ले गया
था। वह सेनापति अपनी सेना के साथ नहर के पास वाली सड़क
पर गया। (यह सड़क उस नहर के पास है जो ऊपर वाले पोखर से
आती है।)

3 यरूशलेम के तीन व्यक्ति सेनापति से बात करने के लिये बाहर
निकल कर गये। ये लोग थे हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम, आसाप
का पुत्र योआह और शेब्ना। एल्याकीम महल का सेवक था। योआह
कागज़ात को संभाल कर रखने का काम करता था और शेब्ना राजा
का सचिव था।

4 सेनापति ने उनसे कहा, “तुम लोग, राजा हिजकिय्याह से जाकर
ये बातें कहो: महान राजा, अश्शूर का राजा कहता है:

“ ‘तुम अपनी सहायता के लिये किस पर भरोसा रखते हो 5 मैं
तुम्हें. बताता हूँ कि यदि युद्ध में तुम्हारा विश्वास शक्ति और कुशल
योजनाओं पर है तो वह व्यर्थ है। वे कोरे शब्दों के अतिरिक्त कुछ
नहीं हैं। इसलिए तुम मुझ से युद्ध क्यों कर रहे हो 6 अब मैं तुमसे
पूछता हूँ, तुम सहायता पाने के लिये किस पर भरोसा करते हो
क्या तुम सहायता के लिये मिस्र पर निर्भर हो मिस्र तो एक टूटी
हुई लाठी के समान है। यदि तुम सहारा पाने को उस पर टिकोगे
तो वह तुम्हें बस हानि ही पहुँचायेगी और तुम्हारे हाथ में एक छेद
बना देगी। मिस्र के राजा फिरौन पर किसी भी व्यक्ति के द्वारा
सहायता पाने के लिये भरोसा नहीं किया जा सकता।

7 “ ‘किन्तु हो सकता है तुम कहो, “हम सहायता पाने के लिये
अपने यहोवा परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।” किन्तु मेरा कहना
है कि हिजकिय्याह ने यहोवा की वेदियों को और पूजा के ऊँचे
स्थानों को नष्ट कर दिया है। यह सत्य है, सही है यह सत्य है कि
यहूदा और यरूशलेम से हिजकिय्याह ने ये बातें कही थीं: “तुम
यहाँ यरूशलेम में बस एक इसी वेदी पर उपासना किया करोगे।”

8 “ ‘यदि तुम अब भी मेरे स्वामी से युद्ध करना चाहते हो तो
अश्शूर का राजा तुमसे यह सौदा करना चाहेगा: राजा का कहना
है, ‘यदि युद्ध में तुम्हारे पास घुड़सवार पूरे हैं तो मैं तुम्हें दो हजार
घोड़े दे दूँगा।’ 9 किन्तु इतना होने पर भी तुम मेरे स्वामी के ऐक
सेवक तक को नहीं हरा पाओगे। उसके किसी छोटे से छोटे
अधिकारी तक को तुम नहीं हरा पाओगे। इसलिए तुम मिस्र के
घुड़सवार और रथों पर अपना भरोसा क्यों बनाये रखते हो।

10 “ ‘और अब देखो जब मैं इस देश में आया था और मैंने
युद्ध किया था, यहोवा मेरे साथ था। जब मैंने नगरों को उजाड़ा,
यहोवा मेरे साथ था। यहोवा मुझसे कहा करता था, “खड़ा हो।
इस नगरी में जा और इसे ध्वस्त कर दे।’ ””

11 यरूशलेम के तीनों व्यक्तियों, एल्याकीम, शेब्ना और योआह
ने सेनापति से कहा, “कृपा करके हमारे साथ अरामी भाषा में ही
बात कर। क्योंकि इसे हम समझ सकते हैं। तू यहूदी भाषा में हमसे
मत बोल। यदि तू यहूदी भाषा का प्रयोग करेगा तो नगर परकोटे
पर के सभी लोग तुझे समझ जायेंगे।”

12 इस पर सेनापति ने कहा, “मेरे स्वामी ने मुझे ये बातें बस तुम्हें
और तुम्हारे स्वामी हिजकिय्याह को ही सुनाने के लिए नहीं भेजा
है। मेरे स्वामी ने मुझे इन बातों को उन्हें बताने के लिए भेजा है
जो लोग नगर परकोटे पर बैठे हैं। उन लोगों को न तो पूरा खाना
मिलता है और न पानी। सो उन्हें अपने मलमूत्र को तुम्हारी ही तरह
खाना—पीना होगा।”

13 फिर सेनापति ने खड़े हो कर ऊँचे स्वर में कहा। वह यहूदी
भाषा में बोला। 14 सेनापति ने कहा, “महासम्राट अश्शूर के राजा के
शब्दों को सुनो:

“ ‘तुम अपने आप को हिजकिय्याह के द्वारा मूर्ख मत बनने
दो, वह तुम्हें बचा नहीं पायेगा। 15 हिजकिय्याह जब यह कहता
है, “यहोवा में विश्वास रखो! यहोवा अश्शूर के राजा से हमारी
रक्षा करेगा। यहोवा अश्शूर के राजा को हमारे नगर को हराने
नहीं देगा तो उस पर विश्वास मत करो।”

16 “ ‘हिजकिय्याह के इन शब्दों की अनसुनी करो। अश्शूर के
राजा की सुनो! अश्शूर के राजा का कहना है, “हमे एक सन्धि
करनी चाहिये। तुम लोग नगर से बाहर निकल कर मेरे पास
आओ। फिर हर व्यक्ति अपने घर जाने को स्वतन्त्र होगा। हर
व्यक्ति अपने अँगूर की बेलों से अँगूर खाने को स्वतन्त्र होगा
और हर व्यक्ति अपने अंजीर के पेंड़ों के फल खाने को स्वतन्त्र
होगा। स्वयं अपने कुँए का पानी पीने को हर व्यक्ति स्वतन्त्र
होगा। 17 जब तक मैं आकर तुम्हें तुम्हारे ही जैसे एक देश में न

ले जाऊँ, तब तक तुम ऐसा करते रह सकते हो। उस नये देश में तुम अच्छा अनाज और नया दाखमधु पाओगे। उस धरती पर तुम्हें रोटी और अँगूर के खेत मिलेंगे।”

18 “ ‘हिजकिय्याह को तुम अपने को मूर्ख मत बनाने दो। वह कहता है, “यहोवा हमारी रक्षा करेगा।” किन्तु मैं तुमसे पूछता हूँ क्या किसी दूसरे देश का कोई भी देवता वहाँ के लोगों को अश्शूर के राजा की शक्ति से बचा पाया नहीं! हमने वहाँ के हर
व्यक्ति को हरा दिया। 19 हमात और अर्पाद के देवता आज कहाँ हैं उन्हें हरा दिया गया है। सपर्वेम के देवता कहाँ हैं वे हरा दिये गये हैं और क्या शोमरोन के देवता वहाँ के लोगों को मेरी शक्ति
से बचा पाये नहीं। 20 किसी भी देश अथवा जाति के ऐसे किसी भी एक देवता का नाम मुझे बताओ जिसने वहाँ के लोगों को मेरी शक्ति से बचाया है। मैंने उन सब को हरा दिया। इसलिए देखो मेरी शक्ति से यरूशलेम को यहोवा नहीं बचा पायेगा।’ ”

21 यरूशलेम के लोग एक दम चुप रहे। उन्होंने सेनापति को कोई उतर नहीं दिया। हिजकिय्याह ने लोगों को आदेश दिया था कि वे सेनापति को कोई उत्तर न दें।

22 इसके बाद महल के सेवक (हिल्किय्याह के पुत्र एल्याकीम) राजा के सचिव (शेब्ना) और दफतरी (आसाप के पुत्र योआह) ने अपने वस्त्र फाड़ डाले। इससे यह प्रकट होता है कि वे बहुत दु:खी थे वे तीनों व्यक्ति हिजकिय्याह के पास गये और सेनापति ने जो कुछ उनसे कहा था, वह सब उसे कह सुनाया।

37

हिजकिय्याह की परमेश्वर से प्रार्थना

1 हिजकियाह ने जब सेनापति का सन्देश सुना तो उसने अपने वस्त्र फाड़ लिये। फिर विशेष शोक वस्त्र धारण करके वह यहोवा के मन्दिर में गया।

2 हिजकिय्याह ने महल के सेवक एल्याकीम को राजा के सचिव
शेब्ना को और याजकों के अग्रजों को आमोस के पुत्र यशायाह नबी
के पास भेजा। इन तीनों ही लोगों ने विशेष शोक—वस्त्र पहने हुए
थे। 3 इन लोगों ने यशायाह से कहा, "राजा हिजकिय्याह ने कहा
है कि आज का दिन शोक और दु:ख का एक विशेष दिन होगा।
यह दिन एक ऐसा दिन होगा जैसे जब एक बच्चा जन्म लेता है।
किन्तु बच्चे को जन्म देने वाली माँ में जितनी शक्ति होनी चाहिये
उसमें उतनी ताकत नहीं होती। 4 सम्भव है तुम्हारा परमेश्वर यहोवा,
सेनापति द्वारा कही बातों को सुन ले। अश्शूर के राजा ने सेनापति
को साक्षात परमेश्वर को अपमानित करने भेजा है। हो सकता है
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उन बुरी अपमानपूर्ण बातों को सुन लिया
है और वह उन्हें इसका दण्ड देगा। कृपा करके इस्राएल के उन
थोड़े से लोगों के लिये प्रार्थना करो जो बचे हुए हैं"

5 हिजकिय्याह के सेवक यशायाह के पास गये। 6 यशायाह ने
उनसे कहा, "अपने मालिक को यह बता देना: यहोवा कहता है,
'तुमने सेनापति से जो सुना है, उन बातों से मत डरना। अश्शूर के
राजा के "लड़कों" ने मेरा अपमान करने के लिये जो बुरी बातें कही
हैं, उन से मत डरना। 7 देखो अश्शूर के राजा को मैं एक अफवाह
सुनावाऊँगा। अश्शूर के राजा को एक ऐसी रपट मिलेगी जो उसके
देश पर आने वाले खतरे के बारे मे होगी। इससे वह अपने देश वापस
लौट जायेगा। उस समय मैं उसे, उसके अपने ही देश में तलवार से
मौत के घाट उतार दूँगा।' "

अश्शूर की सेना का यरूशलेम को छोड़ना

8 अश्शूर के राजा को एक सूचना मिली, सूचना में कहा गया था,
"कूश का राजा तिर्हाका तुझसे युद्ध करने आ रहा है।" 9 सो अश्शूर
का राजा लाकीश को छोड़ कर लिबना चला गया। सेनापति ने यह
सुना और वह लिबना नगर को चला गया जहाँ अश्शूर का राजा
युद्ध कर रहा था।

फिर अश्शूर के राजा ने हिजकिय्याह के पास दूत भेजे। 10 राजा
ने उन दूतों से कहा, “यहूदा के राजा हिजकिय्याह से तुम ये बातें
कहना:

‘जिस देवता पर तुम्हारा विश्वास है, उससे तुम मूर्ख मत बनो।
ऐसा मत कहो, “अश्शूर के राजा से परमेश्वर यरूशलेम को
पराजित नहीं होने देगा।” 11 देखो, तुम अश्शूर के राजाओं के बारे
में सुन ही चुके हो। उन्होंने हर किसी देश में लोगों के साथ क्या
कुछ किया है। उन्हें उन्होंने बुरी तरह हराया है। क्या तुम उनसे
बच पाओगे नहीं, कदापि नहीं! 12 क्या उन लोगों के देवताओं ने
उनकी रक्षा की थी नहीं! मेरे पूर्वजों ने उन्हें नष्ट कर दिया था।
मेरे लोगों ने गोजान, हारान और रेसेप के नगरों को हरा दिया था
और उन्होंने एदेन के लोगों जो तलस्सार में रहा करते थे, उन्हें भी
हरा दिया था। 13 हमात और अर्पाद के राजा कहाँ गये सपर्वैम
का राजा आज कहाँ है हेना और इव्वा के राजा अब कहाँ हैं
उनका अंत कर दिया गया! वे सभी नष्ट कर दिये गये!”

हिजकिय्याह की परमेश्वर से प्रार्थना

14 हिजकिय्याह ने उन लोगों से वह सन्देश ले लिया और
उसे पढ़ा। फिर हिजकिय्याह यहोवा के मन्दिर में चला गाय।
हिजकिय्याह ने उस सन्देश को खोला और यहोवा के सामने
रख दिया। 15 फिर हिजकिय्याह यहोवा से प्रार्थना करने लगा।
हिजकिय्याह बोला: 16 “इस्राएल के परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा,
तू राजा के समान करुब (स्वर्गदूतों) पर विराजता है। तू और बस
केवल तू ही परमेश्वर है, जिसका धरती के सभी राज्यों पर शासन
है। तूने स्वर्गों और धरती की रचना की है। 17 मेरी सुन! अपनी
आँखें खोल और देख, कान लगाकर सुन इस सन्देश के शब्दों को,
जिसे सन्हेरीब ने मुझे भेजा है। इसमें तुझ साक्षात परमेश्वर के बारे
में अपमानपूर्ण बुरी–बुरी बातें कही हैं। 18 हे यहोवा, अश्शूर के
राजाओं ने वास्तव में सभी देशों और वहाँ की धरती को तबाह

कर दिया है। 19 अश्शूर के राजाओं ने उन देशों के देवताओं को
जला डाला है किन्तु वे सच्चे देवता नहीं थे। वे तो केवल ऐसे मूर्ती
थे जिन्हें लोगों ने बनाया था। वे तो कोरी लकड़ी थे, कोरे पत्थर
थे। इसलिये वे समाप्त हो गये। वे नष्ट हो गये। 20 सो अब हे हमारे
परमेश्वर यहोवा। अब कृपा करके अश्शूर के राजा की शक्ति से
हमारी रक्षा कर। ताकि धरती के सभी राज्यों को भी पता चल जाये
कि तू यहोवा है और तू ही हमारा एकमात्र परमेश्वर है!"

हिजकिय्याह को परमेश्वर का उत्तर

21 फिर आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह
सन्देश भेजा, "यह वह है जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने कहा,
'अश्शूर के राजा सन्हेरीब के बारे में तूने मुझसे प्रार्थना की है।'
22 "सो मुझे यहोवा ने जो सन्हेरीब के विरोध में कहा, वह यह है:

'सिय्योन की कुवाँरी पुत्री (यरूशलेम के लोग)
तुझे तुच्छ जानती है।
वह तेरी हँसी उड़ाती है।
यरूशलेम की पुत्री तेरी हँसी उड़ाती है।
23 तूने मेरे लिये मेरे विरोध में बुरी बातें कही।
तू बोलता रहा।
तू अपनी आवाज मेरे विरोध में उठायी थी!
तूने मुझ इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) को अभिमान भी आँखों
से घूरा था।
24 मेरे स्वामी यहोवा के विषय में तूने बुरी बातें कहलवाने के लिये
तूने अपने सेवकों का प्रयोग किया।
तूने कहा, "मैं बहुत शक्तिशाली हूँ! मेरे पास बहुत से रथ हैं।
मैंने अपनी शक्ति से लबानोन को हराया जब मैं अपने रथों को
लबानोन के महान पर्वत के ऊँचे शिखरों के ऊपर ले आया।
मैंने लबानोन के सभी महान पेड़ काट डाले।

मैं उच्चतम शिखर से लेकर
गहरे जंगलों तक प्रवेश कर चुका हूँ।
25 मैंने विदेशी धरती पर कुँए खोदे और पानी पिया।
मैंने मिस्र की नदियाँ सुखा दी और उस देश पर चल कर गया है!”
26 ‘ये वह जो तूने कहा।
क्या तूने यह नहीं सुना कि परमेश्वर ने क्या कहा
मैंने (परमेश्वर ने) बहुत बहुत पहले ही यह योजना बना ली थी।
बहुत—बहुत पहले ही मैंने इसे तैयार कर लिया था
अब इसे मैंने घटित किया है।
मैंने ही तुम्हें उन नगरों को नष्ट करने दिया
और मैंने ही तुम्हें उन नगरों को पत्थरों के ढेर में बदलने दिया।
27 उन नगरों के निवासी कमजोर थे।
वे लोग भयभीत और लज्जित थे।
वे खेत के पौधे के जैसे थे,
वे नई घास के जैसे थे।
वे उस घास के समान थे जो मकानों की छतों पर उगा करती है।
वह घास लम्बी होने से पहले ही रेगिस्तान की गर्म हवा से झुलसा दी जाती है।
28 तेरी सेना और तेरे युद्धों के बारे में मैं सब कुछ जानता हूँ।
मुझे पता है जब तूने विश्राम किया था।
जब तू युद्ध के लिये गया था, मुझे तब का भी पता है।
तू युद्ध से घर कब लौटा, मैं यह भी जानता हूँ।
मुझे इसका भी ज्ञान है कि तू मुझ पर क्रोधित है।
29 तू मुझसे खुश नहीं है
और मैंने तेरे अहंकारपूर्ण अपमानों को सुना है।
सो मैं तुझे दण्ड दूँगा।
मैं तेरी नाक मे नकेल डालूँगा।

मैं तेरे मुँह पर लगाम लगाऊँगा और तब मैं तुझे विवश करुँगा कि
तू जिस मार्ग से आया था,
उसी मार्ग से मेरे देश को छोड़ कर वापस चला जा!' "

30 इस पर यहोवा ने हिजकिय्याह से कहा, "हिजकिय्याह, तुझे
यह दिखाने के लिये कि ये शब्द सच्चे हैं, मैं तुझे एक संकेत दूँगा।
इस वर्ष तू खाने के लिए कोई अनाज नहीं बोयेगा। सो इस वर्ष तू
पिछले वर्ष की फसल से यूँ ही उग आये अनाज को खायेगा। अगले
वर्ष भी ऐसी ही होगा किन्तु तीसरे वर्ष तू उस अनाज को खायेगा
जिसे तूने उगाया होगा। तू अपनी फसलों को काटेगा। तेरे पास खाने
को भरपूर होगा। तू अँगूर की बेलें रोपेगा और उनके फल खायेगा।
31 "यहूदा के परिवार के कुछ लोग बच जायेंगे। वे ही लोग बढ़ते
हुए एक बहुत बड़ी जाति का रुप ले लेंगे। वे लोग उन वृक्षों के समान
होंगे जिनकी जड़ें धरती में बहुत गहरी जाती हैं और जो बहुत तगड़े
हो जाते हैं और बहुत से फल (संतानें) देते हैं। 32 यरूशलेम से कुछ
ही लोग जीवित बचकर बाहर जा पाएँगे। सिय्योन पर्वत से बचे हुए
लोगों का एक समूह ही बाहर जा जाएगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा
का सुदृढ़ प्रेम ही ऐसा करेगा।
33 सो यहोवा ने अश्शूर के राजा के बारे में यह कहा,

"वह इस नगर में नहीं आ पायेगा,
वह इस नगर पर एक भी बाण नहीं छोड़ेगा,
वह अपनी ढालों का मुहँ इस नगर की ओर नहीं करेगा।
इस नगर के परकोटे पर हमला करने के लिए वह मिट्टी का
टीला खड़ा नहीं करेगा।
34 उसी रास्ते से जिससे वह आया था, वह वापस अपने नगर को
लौट जायेगा।
इस नगर में वह प्रवेश नहीं करेगा।

यह सन्देश यहोवा की ओर से है।
35 यहोवा कहता है, मैं बचाऊँगा और इस नगर की रक्षा करुँगा।
मैं ऐसा स्वयं अपने लिये और अपने सेवक दाऊद के लिए
करुँगा।"

36 सो यहोवा के दूत ने अश्शूर की छावनी में जा कर एक लाख
पचासी हज़ार सैनिकों को मार डाला। अगली सुबह जब लोग उठे,
तो उन्होंने देखा कि उनके चारों ओर मरे हुए सैनिकों की लाशें
बिखरी हैं। 37 इस पर अश्शूर का राजा सन्हेरीब वापस लौट कर
अपने घर नीनवे चला गया और वहीं रहने लगा।
38 एक दिन, जब सन्हेरीब अपने देवता निस्रोक के मन्दिर में
उसकी पूजा कर रहा था, उसी समय उसके पुत्र अद्रम्मेलेक और
शरेसेर ने तलवार से उसकी हत्या कर दी और फिर वे अरारात को
भाग खड़े हुए। इस प्रकार सन्हेरीब का पुत्र एसर्हद्दोन अश्शूर का
नया राजा बन गया।

38

हिजकिय्याह की बीमारी

1 उस समय के आसपास हिजकिय्याह बहुत बीमार पड़ा। इतना
बीमार कि जैसे वह मर ही गया हो। सो आमोस का पुत्र यशायाह
उससे मिलने गया। यशायाह ने राजा से कहा, "यहोवा ने तुम्हें ये
बातें बताने के लिये कहा है: 'शीघ्र ही तू मर जायेगा। सो जब तू मरे,
परिवार वाले क्या करें, यह तुझे उन्हें बता देना चाहिये। अब तू फिर
कभी अच्छा नहीं होगा।' "
2 हिजकिय्याह ने उस दीवार की तरफ करवट ली जिसका मुँह
मन्दिर की तरफ था। उसने यहोवा की प्रार्थना की, उसने कहा, 3 "हे
यहोवा, कृपा कर, याद कर कि मैंने सदा तेरे सामने विश्वासपूर्ण और
सच्चे हृदय के साथ जीवन जिया है। मैंने वे बातें की हैं जिन्हें तू उत्तम
कहता है।" इसके बाद हिजकिय्याह ने ऊँचे स्वर में रोना शुरु कर
दिया।

4 यशायाह को यहोवा से यह सन्देश मिळा: 5 “हिजकिय्याह के
पास जा और उससे कह दे: ये बातें वे हैं जिन्हें तुम्हारे पिता दाऊद
का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘मैंने तेरी प्रार्थना सुनी है और तेरे
दु:ख भरे आँसू देखे हैं। तेरे जीवन में मैं पन्द्रह वर्ष और जोड़ रहा हूँ।
6 अश्शूर के राजा के हाथों से मैं तुझे छुड़ा डालूँगा और इस नगर
की रक्षा करुँगा।’ ”

7 तुझे यह बताने के लिए कि जिन बातों को वह कहता है,
उन्हें वह पूरा करेगा। यहोवा की ओर से यह संकेत है: 8 “देख,
आहाज़ की धूप घड़ी की वह छाया जो अंशों पर पड़ी हैं, मैं उसे
दस अंश पीछे हटा दूँगा। सूर्य की वह छाया दस अंश तक पीछे
चली जायेगी।”

9 यह हिजकिय्याह का वह पत्र है जो उसने बीमारी से अच्छा
होने के बाद लिखा था:

10 मैंने अपने मन में कहा कि मैं तब तक जीऊँगा जब तक बूढ़ा
होऊँगा।
किन्तु मेरा काल आ गया था कि मैं मृत्यु के द्वार से गुजरुँ।
अब मैं अपना समय यहीं पर बिताऊँगा।
11 इसलिए मैंने कहा, “मैं यहोवा याह को फिर कभी जीवितों की
धरती पर नहीं देखूँगा।
धरती पर जीते हुए लोगों को मैं नहीं देखूँगा।
12 मेरा घर, चरवाहे के अस्थिर तम्बू सा उखाड़ कर गिराया जा रहा
है और मुझसे छीना जा रहा है।
अब मेरा वैसा ही अन्त हो गया है जैसे करघे से कपड़ा लपेट
कर काट लिया जाता है।
क्षणभर में तूने मुझ को इस अंत तक पहुँचा दिया!
13 मैं भोर तक अपने को शान्त करता रहा।
वह सिंह की नाई मेरी हड्डियों को तोड़ता है।
एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालता है!

14 मैं कबूतर सा रोता रहा। मैं एक पक्षी जैसा रोता रहा।
मेरी आँखें थक गयी तो भी मैं लगातर आकाश की तरफ निहारता रहा।
मेरे स्वामी, मैं विपत्ति में हूँ मुझको उबारने का वचन दे।”
15 मैं और क्या कह सकता हूँ मेरे स्वामी ने मुझ को बताया है जो कुछ भी घटेगा,
और मेरा स्वामी ही उस घटना को घटित करेगा।
मैंने इन विपत्तियों को अपनी आत्मा में झेला है इसलिए मैं जीवन भर विनम्र रहूँगा।
16 हे मेरे स्वामी, इस कष्ट के समय का उपयोग फिर से मेरी चेतना को सशक्त बनाने में कर।
मेरे मन को सशक्त और स्वस्थ होने में मेरी सहायता कर!
मुझको सहारा दे कि मैं अच्छा हो जाऊँ! मेरी सहायता कर कि मैं फिर से जी उठूँ!
17 देखो! मेरी विपत्तियाँ समाप्त हुई! अब मेरे पास शांति है।
तू मुझ से बहुत अधिक प्रेम करता है! तूने मुझे कब्र में सड़ने नहीं दिया।
तूने मेरे सब पाप क्षमा किये! तूने मेरे सब पाप दूर फेंक दिये।
18 तेरी स्तुति मरे व्यक्ति नहीं गाते!
मृत्यु के देश में पड़े लोग तेरे यशगीत नहीं गाते।
वे मरे हुए व्यक्ति जो कब्र में समायें हैं, सहायता पाने को तुझ पर भरोसा नहीं रखते।
19 वे लोग जो जीवित हैं जेसा आज मैं हूँ तेरा यश गाते हैं।
एक पिता को अपनी सन्तानों को बताना चाहिए कि तुझ पर भरोसा किया जा सकता है।
20 इसलिए मैं कहता हूँ:
“यहोवा ने मुझ को बचाया है सो हम अपने जीवन भर यहोवा के मन्दिर में गीत गायेंगे और बाजे बजायेंगे।”

21 * फिर इस पर यशायाह ने कहा, “अंजीरों को आपस में
मसलवा कर उसके फोड़ों पर बाँध। इससे वह अच्छा हो जायेगा।”
22 † किन्तु हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा, “यहोवा की ओर
से ऐसा कौन सा संकेत है जो प्रमाणित करता है कि मैं अच्छा हो
जाऊँगा कौन सा ऐसा संकेत है जो प्रमाणित करता है कि मैं यहोवा
के मन्दिर में जाने योग्य हो जाऊँगा”

39

बाबुल के सन्देश वाहक

1 उस समय, बलदान का पुत्र मरोदक बलदान बाबुल का राजा
हुआ करता था। मरोदक ने हिजकिय्याह के पास पत्र और उपहार
भेजे। मरोदक ने उसके पास इसलिये उपहार भेजे थे कि उसने
सुना था कि हिजकिय्याह बीमार था और फिर अच्छा हो गया
था। 2 इन उपहारों को पाकर हिजकिय्याह बहुत प्रसन्न हुआ।
इसलिये हिजकिय्याह ने मरोदक के लोगों को अपने ख़ज़ाने की
मूल्यवान वस्तुएँ दिखाई। हिजकिय्याह ने उन लोगों को अपनी सारी
सम्पत्ति दिखाई। चाँदी, सोना, मूल्यवान तेल और इत्र उन्हें दिखाये।
हिजकिय्याह ने उन्हें युद्ध में काम आने वाली तलवारें और ढालें भी
दिखाई। हिजकिय्याह ने उन्हें वे सभी वस्तुएँ दिखाई जो उसने जमा
कर रखी थीं। हिजकिय्याह ने अपने घर की और अपने राज्य की
हर वस्तु उन्हें दिखायी।

3 यशायाह नबी राजा हिजकिय्याह के पास गया और उससे बोला,
“ये लोग क्या कह रहे हैं ये लोग कहाँ से आये हैं”

हिजकिय्याह ने कहा, “ये लोग दूर देश से मेरे पास आये हैं। ये
लोग बाबुल से आये हैं।”

4 इस पर यशायाह ने उससे पूछा, “उन्होंने तेरे महल में क्या देखा”

---

* **38:21:** छपे हूए हिब्रू पाठ में पद 21 अंत में दी गयी है। † **38:22:** यह बाइसवां पद छपे हुए हिब्रू पाठ में अंत में दिया गया हैं।

हिजकिय्याह ने कहा, “मेरे महल की हर वस्तु उन्होंने देखी। मैंने
अपनी सारी सम्पत्ति उन्हें दिखाई थी।”
5 यशायाह ने हिजकिय्याह से यह कहा: “सर्वशक्तिमान यहोवा
के शब्दों को सुनो। 6 ‘भविष्य में जो कुछ तेरे घर में हैं, वह सब कुछ
बाबुल ले जाया जायेगा। और तेरे बुजुर्गों की वह सारी धन दौलत
जो अचानक उन्होंने एकत्र की है, ले ली जायेगी। तेरे पास कुछ नहीं
छोड़ा जायेगा। सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह कहा है। 7 बाबुल का
राजा तेरे पुत्रों को ले जायेगा। वे पुत्र जो तुझसे पैदा होंगे। तेरे पुत्र
बाबुल के राजा के महल में हाकिम बनेंगे।’ ”
8 हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, “यहोवा के इन वचनों का
सुनना मेरे लिये बहुत उत्तम होगा।” (हिजकिय्याह ने ऐसा इसलिए
कहा क्योंकि उसका विचार था, “जब मैं राजा होऊँगा, तब शांति
रहेगी और कोई उत्पात नहीं होगा।”)

40

इस्राएल के दण्ड का अंत

1 तुम्हारा परमेश्वर कहता है,
“चैन दे, चैन दे मेरे लोगों को!
2 तू दया से बातें कर यरूशलेम से!
यरूशलेम को बता दे,
‘तेरी दासता का समय अब पूरा हो चुका है।
तूने अपने अपराधों की कीमत दे दी है।’
यहोवा ने यरूशलेम के किये हुए पापों का दुगना दण्ड उसे
दिया है!”

3 सुनो! एक व्यक्ति का जोर से पुकारता हुआ स्वर:
“यहोवा के लिये बियाबान में एक राह बनाओ!
हमारे परमेश्वर के लिये बियाबान में एक रास्ता चौरस करो!
4 हर घाटी को भर दो।

हर एक पर्वत और पहाड़ी को समतल करो।
टेढ़ी—मेढ़ी राहों को सीधा करो।
उबड़—खाबड़ को चौरस बना दो।
5 तब यहोवा की महिमा प्रगट होगी।
सब लोग इकट्ठे यहोवा के तेज को देखेंगे।
हाँ, यहोवा ने स्वयं ये सब कहा है।”

6 एक वाणी मुखरित हुई, उसने कहा, “बोलो!”
सो व्यक्ति ने पूछा, “मैं क्या कहूँ” वाणी ने कहा, “लोग सर्वदा जीवित नहीं रहेंगे।
वे सभी रेगिस्तान के घास के समान है।
उनकी धार्मिकता जंगली फूल के समान है।
7 एक शक्तिशाली आँधी यहोवा की ओर से उस घास पर चलती है,
और घास सूख जाती है, जंगली फूल नष्ट हो जाता है। हाँ सभी लोग घास के समान हैं।
8 घास मर जाती है और जंगली फूल नष्ट हो जाता है।
किन्तु हमारे परमेश्वर के वचन सदा बने रहते हैं।”

मुक्ति: परमेश्वर का सुसन्देश

9 हे, सिय्योन, तेरे पास सुसन्देश कहने को है,
तू पहाड़ पर चढ़ जा और ऊँचे स्वर से उसे चिल्ला!
यरूशलेम, तेरे पास एक सुसन्देश कहने को है।
भयभीत मत हो, तू ऊँचे स्वर में बोल!
यहूदा के सारे नगरों को तू ये बातें बता दे: “देखो, ये रहा तुम्हारा परमेश्वर!”
10 मेरा स्वामी यहोवा शक्ति के साथ आ रहा है।
वह अपनी शक्ति का उपयोग लोगों पर शासन करने में लगायेगा।
यहोवा अपने लोगों को प्रतिफल देगा।
उसके पास देने को उनकी मजदूरी होगी।

11 यहोवा अपने लोगों की वैसे ही अगुवाई करेगा जैसे कोई गड़ेरिया
अपने भेड़ों की अगुवाई करता है।
यहोवा अपने बाहु को काम में लायेगा और अपनी भेड़ों को
इकट्ठा करेगा।
यहोवा छोटी भेड़ों को उठाकर गोद में थामेगा, और उनकी माताऐं
उसके साथ—साथ चलेंगी।
संसार परमेश्वर ने रचा: वह इसका शासक है

12 किसने अँजली में भर कर समुद्र को नाप दिया किसने हाथ से
आकाश को नाप दिया
किसने कटोरे में भर कर धरती की सारी धूल को नाप दिया
किसने नापने के धागे से पर्वतों
और चोटियों को नाप दिया यह यहोवा ने किया था!
13 यहोवा की आत्मा को किसी व्यक्ति ने यह नहीं बताया कि उसे
क्या करना था।
यहोवा को किसी ने यह नहीं बताया कि उसे जो उसने किया
है, कैसे करना था।
14 क्या यहोवा ने किसी से सहायता माँगी?
क्या यहोवा को किसी ने निष्पक्षता का पाठ पढ़ाया है?
क्या किसी व्यक्ति ने यहोवा को ज्ञान सिखाया है?
क्या किसी व्यक्ति ने यहोवा को बुद्धि से काम लेना सिखाया
है? नहीं!
इन सभी बातों का यहोवा को पहले ही से ज्ञान है!
15 देखो, जगत के सारे देश घड़े में एक छोटी बूंद जैसे हैं।
यदि यहोवा सुदूरवर्ती देशों तक को लेकर अपनी तराज़ू पर
धर दे, तो वे छोटे से रजकण जैसे लगेंगे।
16 लबानोन के सारे वृक्ष भी काफी नहीं है कि उन्हें यहोवा के लिये
जलाया जाये।
लबानोन के सारे पशु काफी नहीं हैं कि उनको उसकी एक
बलि के लिये मारा जाये।
17 परमेश्वर की तुलना में विश्व के सभी राष्ट्र कुछ भी नहीं हैं।

परमेश्वर की तुलना में विश्व के सभी राष्ट्र बिल्कुल मूल्यहीन हैं।

परमेश्वर क्या है लोग कल्पना भी नहीं कर सकते

18 क्या तुम परमेश्वर की तुलना किसी भी वस्तु से कर सकते हो नहीं! क्या तुम परमेश्वर का चित्र बना सकते हो नहीं!
19 कुन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो पत्थर और लकड़ी की मूर्तियाँ बनाते हैं और उन्हें देवता कहते हैं।
एक कारीगर मूर्ति को बनाता है।
फिर दूसरा कारीगर उस पर सोना मढ़ देता है और उसके लिये चाँदी की जंजीरे बनता है!
20 सो वह व्यक्ति आधार के लिये एक विशेष प्रकार की लकड़ी चुनता है जो सड़ती नहीं है।
तब वह एक अच्छे लकड़ी चुनता है जो सड़ती नहीं है।
तब वह एक अच्छे लकड़ी के कारीगर को ढूँढता है।
वह कारीगर एक ऐसा "देवता" बनाता है जो ढुलकता नहीं है!
21 निश्चय ही, तुम सच्चाई जानते हो, बोलो निश्चय ही तुमने सुना है!
निश्चय ही बहुत पहले किसी ने तुम्हें बताया है! निश्चय ही तुम जानते हो कि धरती को किसने बनाया है!
22 यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है!
वही धरती के चक्र के ऊपर बैठता है!
उसकी तुलना में लोग टिड्डी से लगते हैं।
उसने आकाशों को किसी कपड़े के टुकड़े की भाँति खोल दिया।
उसने आकाश को उसके नीचे बैठने को एक तम्बू की भाँति तान दिया।
23 सच्चा परमेश्वर शासकों को महत्त्वहीन बना देता है।
वह इस जगत के न्यायकर्ताओं को पूरी तरह व्यर्थ बना देता है!

24 वे शासक ऐसे हैं जेसे वे पौधे जिन्हें धरती में रोपा गया हो,
किन्तु इससे पहले की वे अपनी जड़े धरती में जमा पाये,
परमेश्वर उन को बहा देता है
और वे सूख कर मर जाते हैं।
आँधी उन्हें तिनके सा उड़ा कर ले जाती है।
25 "क्या तुम किसी से भी मेरी तुलना कर सकते हो नहीं!
कोई भी मेरे बराबर का नहीं है।"

26 ऊपर आकाशों को देखो।
किसने इन सभी तारों को बनाया
किसने वे सभी आकाश की सेना बनाई
किसको सभी तारे नाम—बनाम मालूस हैं
सच्चा परमेश्वर बहुत ही सुदृढ़ और शक्तिशाली है
इसलिए कोई तारा कभी निज मार्ग नहीं भूला।

27 हे याकूब, यह सच है!
हे इस्राएल, तुझको इसका विश्वास करना चाहिए!
सो तू क्यों ऐसा कहता है कि "जैसा जीवन मैं जीता हूँ उसे यहोवा नहीं देख सकता!
परमेश्वर मुझको पकड़ नहीं पायेगा और न दण्ड दे पायेगा।"

28 सचमुच तूने सुना है और जानता है कि यहोवा परमेश्वर बुद्धिमान है।
जो कुछ वह जानता है उन सभी बातों को मनुष्य नहीं सीख सकता।
यहोवा कभी थकता नहीं,
उसको कभी विश्राम की आवश्यकता नहीं होती।
यहोवा ने ही सभी दूरदराज के स्थान धरती पर बनाये।
यहोवा सदा जीवित है।
29 यहोवा शक्तिहीनों को शक्तिशाली बनने में सहायता देता है।

वह ऐसे उन लोगों को जिनके पास शक्ति नहीं है, प्रेरित करता है कि वह शक्तिशाली बने।
30 युवक थकते हैं और उन्हें विश्राम की जरुरत पड़ जाती है।
यहाँ तक कि किशोर भी ठोकर खाते हैं और गिरते हैं।
31 किन्तु वे लोग जो यहोवा के भरोसे हैं फिर से शक्तिशाली बन जाते हैं।
जैसे किसी गरुड़ के फिर से पंख उग आते हैं।
ये लोग बिना विश्राम चाहे निरंतर दौड़ते रहते हैं।
ये लोग बिना थके चलते रहते हैं।

41

यहोवा सृजनहार है: वह अमर है

1 यहोवा कहा करता है,
"सुदूरवर्ती देशों, चुप रहो और मेरे पास आओ!
जातियों, फिर से सुदृढ़ बनों।
मेरे पास आओ और मुझसे बातें करो।
आपस में मिल कर हम
निश्चय करें कि उचित क्या है।
2 किसने उस विजेता को जगाया है, जो पूर्व से आयेगा
कौन उससे दूसरे देशों को हरवाता और राजाओं को अधीन कर देता
कौन उसकी तलवारों को इतना बढ़ा देता है
कि वे इतनी असंख्य हो जाती जितनी रेत—कण होते हैं
कौन उसके धनुषों को इतना असंख्य कर देता जितना भूसे के छिलके होते हैं
3 यह व्यक्ति पीछा करेगा और उन राष्ट्रों का पीछा बिना हानि उठाये करता रहेगा
और ऐसे उन स्थानों तक जायेगा जहाँ वह पहले कभी गया ही नहीं।

4 कौन ये सब घटित करता है किसने यह किया
किसने आदि से सब लोगों को बुलाया मैं यहोवा ने इन सब बातों को किया!
मैं यहोवा ही सबसे पहला हूँ।
आदि के भी पहले से मेरा अस्तित्व रहा है,
और जब सब कुछ चला जायेगा तो भी मैं यहाँ रहूँगा।
5 सुदूरवर्ती देश इसको देखें
और भयभीत हों।
दूर धरती के छोर के लोग
फिर आपस में एक जुट होकर
भय से काँप उठें!

6 “एक दूसरे की सहायता करेंगें। देखो! अब वे अपनी शक्ति
बढ़ाने के लिए एक दूसरे की हिम्मत बढ़ा रहे हैं। 7 मूर्ति बनानें के
लिए एक कारीगर लकड़ी काट रहा है। फिर वह व्यक्ति सुनार को
उत्साहित कर रहा है। एक कारीगर हथौड़ें से धातु का पतरा बना
रहा है। फिर वह कारीगर निहायी पर काम करनेवाले व्यक्ति को
प्रेरित कर रहा है। यह अखिरी कारीगर कह रहा है, काम अच्छा
है किन्तु यह धातु पिंड कहीं उखड़ न जाये। इसलिए इस मूर्ति को
आधार पर कील से जड़ दों! उससे मूर्ति गिरेगी नहीं, वह कभी
हिलडुल तक नहीं पायेगो।”

यहोवा ही हमारी रक्षा कर सकता है

8 यहोवा कहता है: “किन्तु तू इस्राएल, मेरा सेवक है।
याकूब, मैंने तुझ को चुना है
तू मेरे मित्र इब्राहीम का वंशज है।
9 मैंने तुझे धरती के दूर देशों से उठाया।
मैंने तुम्हें उस दूर देश से बुलाया।
मैंने कहा, ‘तू मेरा सेवक है।’

मैंने तुझे चुना है
    और मैंने तुझे कभी नहीं तजा है।
10 तू चिंता मत कर, मैं तेरे साथ हूँ।
    तू भयभीत मत हो, मैं तेरा परमेश्वर हूँ।
मैं तुझे सुदृढ़ करूँगा।
    मैं तुझे अपने नेकी के दाहिने हाथ से सहारा दूँगा।
11 देख, कुछ लोग तुझ से नाराज हैं किन्तु वे लजायेंगे।
    जो तेरे शत्रु हैं वे नहीं रहेंगे, वे सब खो जायेंगे।
12 तू ऐसे उन लोगों की खोज करेगा जो तेरे विरुद्ध थे।
    किन्तु तू उनको नहीं पायेगा।
वे लोग जो तुझ से लड़े थे, पूरी तरह लुप्त हो जायेंगे।
13 मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ।
    मैंने तेरा सीधा हाथ थाम रखा है।
मैं तुझ से कहता हूँ कि मत डर! मैं तुझे सहारा दूँगा।
14 मूल्यवान यहूदा, तू निर्भय रह! हे मेरे प्रिय इस्राएल के लोगों।
    भयभीत मत रहो।”
    सचमुच मैं तुझको सहायता दूँगा।

स्वयं यहोवा ही ने यें बातें कहीं थी।

इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) ने
    जो तुम्हारी रक्षा करता है, कहा था:
15 देख, मैंने तुझे एक नये दाँवने के यन्त्र सा बनाया है।
    इस यन्त्र में बहुत से दाँते हैं जो बहुत तीखे हैं।
किसान इसको अनाज के छिलके उतारने के काम में लाते है।
    तू पर्वतों को पैरों तले मसलेगा और उनको धूल में मिला देगा।
तू पर्वतों को ऐसा कर देगा जैसे भूसा होता है।

16 तू उनको हवा में उछालेगा और हवा उनको उड़ा कर दूर ले
जायेगी और उन्हें कहीं छितरा देगी।
तब तू यहोवा में स्थित हो कर आनन्दित होगा।
तुझको इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) पर पहुत गर्व होगा।

17 गरीब जन, और जरुरत मंद जल ढूँढ़ते हैं किन्तु उन्हें जल नहीं
मिलता है।
वे प्यासे हैं और उनकी जीभ सूखी है। मैं उनकी विनतियों का
उत्तर दूँगा।
मैं उनको न ही तजूँगा और न ही मरने दूँगा।
18 मैं सूखे पहाड़ों पर नदियाँ बहा दूँगा।
घाटियों में से मैं जलस्रोत बहा दूँगा।
मैं रेगिस्तान को जल से भरी झील में बदल दूँगा।
उस सूखी धरती पर पानी के सोते मिलेंगे।
19 मरुभूमि में देवदार के, कीकार के, जैतून के, सनावर के, तिघारे
के, चीड़ के पेड़ उगेंगे!
20 लोग ऐसा होते हुए देखेंगे और वे जानेंगे कि
यहोवा की शक्ति ने यह सब किया है।
लोग इनको देखेंगे और समझना शुरु करेंगे कि
इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) ने यह बातें की हैं।”

यहोवा की झूठे देवताओं को चेतावनी

21 याकूब का राजा यहोवा कहता है, “आ, और मुझे अपनी
युक्तियाँ दे। अपना प्रमाण मुझे दिखा और फिर हम यह निश्चय करेंगे
कि उचित बातें क्या हैं 22 तुम्हारे मूर्तियों को हमारे पास आकर, जो
घट रहा है, वह बताना चाहिये। “प्रारम्भ में क्या कुछ घटा था और
भविष्य में क्या घटने वाला है। हमें बताओं हम बड़े ध्यान से सुनेंगे।
जिससे हम यह जान जायें कि आगे क्या होने वाला है। 23 हमें उन

बातों को बताओ जो घटनेवाली हैं। जिन्हें जानने का हमें इन्तज़ार है
ताकि हम विश्वास करें कि सममुच तुम देवता हो। कुछ करो! कुछ
भी करो। चाहे भला चाहे बुरा ताकि हम देख सकें और जान सके
कि तुम जीवित हो और तुम्हारा अनुसरण करें।
24 "देखो झूठे देवताओं, तुम बेकार से भी ज्यादा बेकार हो! तुम
कुछ भी तो नहीं कर सकते। केवल बेकार के भ्रष्ट लोग ही तुम्हें
पूजना चाहते हैं!"

बस यहोवा ही परमेश्वर है

25 "उत्तर में मैंने एक व्यक्ति को उठाया है।
वह पूर्व से जहाँ सूर्य उगा करता है, आ रहा है।
वह मेरे नाम की उपासना किया करता है।
जैसे कुम्हार मिट्टी रौंदा करता है वैसे ही वह विशेष व्यक्ति
राजाओं को रौंदेगा।"

26 "यह सब घटने से पहले ही हमें जिसने बताया है, हमें उसे परमेश्वर
कहना चाहिए।
क्या हमें ये बातें तुम्हारे किसी मूर्ति ने बतायी नहीं!
किसी भी मूर्ति ने कुछ भी हमको नहीं बताया था।
वे मूर्ति तो एक भी शब्द नहीं बोल पाते हैं।
वे झूठे देवता एक भी शब्द जो तुम बोला करते हो नहीं सुन पाते
हैं।
27 मैं यहोवा सिय्योन को इन बातों के विषय में बताने वाला पहला
था।
मैंने एक दूत को इस सन्देश के साथ यरूशलेम भेजा था कि:
'देखो, तुम्हारे लोग वापस आ रहे हैं!' "

28 मैंने उन झूठे देवों को देखा था, उनमें से कोई भी इतना बुद्धिमान
नहीं था जो कुछ कह सके।
मैंने उनसे प्रश्न पूछे थे वे एक भी शब्द नहीं बोल पाये थे।

29 वे सभी देवता बिल्कुल ही व्यर्थ हैं!
वे कुछ नहीं कर पाते वे पूरी तरह मूल्यहीन हैं!

42

यहोवा का विशेष सेवक

1 "मेरे दास को देखो!
मैं ही उसे सम्भाला हूँ।
मैंने उसको चुना है, मैं उससे अति प्रसन्न हूँ।
मैं अपनी आत्मा उस पर रखता हूँ।
वह ही सब देशों में न्याय खरेपन से लायेगा।
2 वह गलियों में जोर से नहीं बोलेगा।
वह नहीं चिल्लायेगा और न चीखेगा।
3 वह कोमल होगा।
कुचली हुई घास का तिनका तक वह नहीं तोड़ेगा।
वह टिमटिमाती हुई लौ तक को नहीं बुझायेगा।
वह सच्चाई से न्याय स्थापित करेगा।
4 वह कमजोर अथवा कुचला हुआ तब तक नहीं होगा
जब तक वह न्याय को दुनियाँ में न ले आये।
दूर देशों के लोग उसकी शिक्षाओं पर विश्वास करेंगे।"

यहोवा जगत का सृजन हार और शासक है

5 सच्चे परमेश्वर यहोवा ने ये बातें कही हैं: (यहोवा ने आकाशों को
बनाया है। यहोवा ने आकाश को धरती पर ताना है। धरती पर जो
कुछ है वह भी उसी ने बनाया है। धरती पर सभी लोगों में वही प्राण
फूँकता है। धरती पर जो भी लोग चल फिर रहे हैं, उन सब को वही
जीवन प्रदान करता है।)

6 "मैं यहोवा ने तुझ को खरे काम करने को बुलाया है।

मैं तेरा हाथ थामूँगा और तेरी रक्षा करुँगा।
तू एक चिन्ह यह प्रगट करने को होगा कि लोगों के साथ मेरी एक वाचा है।
तू सब लोगों पर चमकने को एक प्रकाश होगा।
7 तू अन्धों की आँखों को प्रकाश देगा और वे देखने लगेंगे।
ऐसे बहुत से लोग जो बन्दीगृह में पड़े हैं, तू उन लोगों को मुक्त करेगा।
तू बहुत से लोगों को जो अन्धेरे में रहते हैं उन्हें उस कारागार से तू बाहर छुड़ा लायेगा।"

8 "मैं यहोवा हूँ! मेरा नाम यहोवा है।
मैं अपनी महिमा दूसरे को नहीं दूँगा।
मैं उन मूर्तियों (झूठे देवों) को वह प्रशंसा,
जो मेरी है, नहीं लेने दूँगा।
9 प्रारम्भ में मैंने कुछ बातें जिनको घटना था,
बतायी थी और वे घट गयीं।
अब तुझको वे बातें घटने से पहले ही बताऊँगा
जो आगे चल कर घटेंगी।"

परमेश्वर की स्तुति

10 यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ,
तुम जो दूर दराज के देशों में बसे हो,
तुम जो सागर पर जलयान चलाते हो,
तुम समुद्र के सभी जीवों,
दूरवर्ती देशों के सभी लोगों,
यहोवा का यशगान करो!
11 हे मरुभूमि एवं नगरों और केदार के गाँवों,
यहोवा की प्रशंसा करो!
सेला के लोगों,

आनन्द के लिये गाओ!
अपने पर्वतों की चोटी से गाओ।
12 यहोवा को महिमा दो।
दूर देशों के लोगों उसका यशगान करो!
13 यहोवा वीर योद्धा सा बाहर निकलेगा उस व्यक्ति सा जो युद्ध के लिये तत्पर है।
वह बहुत उत्तेजित होगा।
वह पुकारेगा और जोर से ललकारेगा
और अपने शत्रुओं को पराजित करेगा।

परमेश्वर धीरज रखता है

14 "बहुत समय से मैंने कुछ भी नहीं कहा है।
मैंने अपने ऊपर नियंन्त्रण बनाये रखा है और मैं चुप रहा हूँ।
किन्तु अब मैं उतने जोर से चिल्लाऊँगा जितने जोर से बच्चे को जनते हुए स्त्री चिल्लाती है!
मैं बहुत तीव्र और जोर से साँस लूँगा।
15 मैं पर्वतों — पहाड़ियों को नष्ट कर दूँगा।
मैं जो पौधे वहाँ उगते हैं। उनको सुखा दूँगा।
मैं नदियों को सूखी धरती में बदल दूँगा।
मैं जल के सरोवरों को सुखा दूँगा।
16 फिर मैं अन्धों को ऐसी राह दिखाऊँगा जो उनको कभी नहीं दिखाई गयी।
नेत्रहीन लोगों को मैं ऐसी राह दिखाऊँगा जिन पर उनका जाना कभी नहीं हुआ।
अन्धेरे को मैं उनके लिये प्रकाश में बदल दूँगा।
ऊँची नीची धरती को मैं समतल बनाऊँगा।
मैं उन कामों को करूँगा जिनका मैंने वचन दिया है!
मैं अपने लोगों को कभी नहीं त्यागूँगा।
17 किन्तु कुछ लोगों ने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया।

उन लोगों के पास वे मूर्तियाँ हैं जो सोने से मढ़ी हैं।
उन से वे कहा करते हैं कि 'तुम हमारे देवता हो।'
वे लोग अपने झूठे देवताओं के विश्वासी हैं।
किन्तु ऐसे लोग बस निराश ही होंगे!"

इस्राएल ने परमेश्वर की नहीं सुनी

18 "तुम बहरे लोगों को मेरी सुनना चाहिए!
तुम अंधे लोगों को इधर दृष्टि डालनी चाहिए और मुझे देखना चाहिए!
19 कौन है उतना अन्धा जितना मेरा दास है कोई नहीं।
कौन है उतना बहरा जितना मेरा दूत है जिसे को मैंने इस संसार में भेजा है कोई नहीं!
यह अन्धा कौन है जिस के साथ मैंने वाचा की ये इतना अन्धा है जितना अन्धा यहोवा का दास है।
20 वह देखता बहुत है,
किन्तु मेरी आज्ञा नहीं मानता।
वह अपने कानों से साफ साफ सुन सकता है
किन्तु वह मेरी सुनने से इन्कार करता है।"
21 यहोवा अपने सेवक के साथ सच्चा रहना चाहता है।
इसलिए वह लोगों के लिए अद्भुत उपदेश देता है।
22 किन्तु दूसरे लोगों की ओर देखो।
दूसरे लोगों ने उनको हरा दिया और जो कुछ उनका था,छीन लिया।
काल कोठरियों में वे सब फँसे हैं,
कारागरों के भीतर वे बन्दी हैं।
लोगों ने उनसे उनका धन छीन लिया है
और कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जो उनको बचा ले।
दूसरे लोगों ने उनका धन छीन लिया
और कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जो कहे "इसको वापस करो!"

23 तुममें से क्या कोई भी इसे सुनता है क्या तुममें से किसी को
भी इस बात की परवाह है और क्या कोई सुनता है कि भविष्य में
तुम्हारे साथ क्या होनेवाला है 24 याकूब और इस्राएल की सम्पत्ति
लोगों को किसने लेने दी यहोवा ने ही उन्हें ऐसा करने दिया! हमने
यहोवा के विरुद्ध पाप किया था। सो यहोवा ने लोगों को हमारी
सम्पत्ति छीनने दी। इस्राएल के लोग उस ढंग से जीना नहीं चाहते थे
जिस ढंग से यहोवा चाहता था। इस्राएल के लोगों ने उसकी शिक्षा
पर कान नहीं दिया। 25 सो यहोवा उन पर क्रोधित हो गया। यहोवा
ने उनके विरुद्ध भयानक लड़ाईयाँ भड़कवा दीं। यह ऐसे हुआ जैसे
इस्राएल के लोग आग में जल रहे हों और वे जान ही न पाये हों कि
क्या हो रहा है। यह ऐसा था जैसे वे जल रहे हों। किन्तु उन्होंने जो
वस्तुएँ घट रही थीं, उन्हें समझने का जतन ही नहीं किया।

43

परमेश्वर सदा अपने लोगों के साथ रहता है

1 याकूब, तुझको यहोवा ने बनाया था! इस्राएल, तेरी रचना यहोवा
ने की थी और अब यहोवा का कहना है: "भयभीत मत हो! मैंने तुझे
बचा लिया है। मैंने तुझे नाम दिया है। तू मेरा है। 2 जब तुझ पर
विपत्तियाँ पड़ती हैं, मैं तेरे साथ रहता हूँ। जब तू नदी पार करेगा, तू
बहेगा नहीं। तू जब आग से होकर गुज़रेगा, तो तू जलेगा नहीं। लपटें
तुझे हानि नहीं पहुँचायेंगी। 3 क्यों क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ।
मैं इस्राएल का पवित्र तेरा उद्धारकर्ता हूँ। तेरी बदले में मैंने मिस्र को
दे कर तुझे आज़ाद कराया है। मैंने कूश और सबा को तुझे अपना
बनाने को दे डाला है। 4 तू मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसलिये
मैं तेरा आदर करूँगा। मैं तुझे प्रेम करता हूँ, ताकि तू जी सके, और
मेरा हो सके। इसके लिए मैं सभी मनुष्यों और जातियों को बदले में
दे दूँगा।"

परमेश्वर अपनी संतानों को घर लायेगा

5 “इसलिये डर मत! मैं तेरे साथ हूँ। तेरे बच्चों को इकट्ठा करके मैं
उन्हें तेरे पास लाऊँगा। मैं तेरे लोगों को पूर्व और पश्चिम से इकट्ठा
करूँगा। 6 मैं उत्तर से कहूँगा: मेरे बच्चे मुझे लौटा दे।” मैं दक्षिण से
कहूँगा: “मेरे लोगों को बंदी बना कर मत रख। दूर–दूर से मेरे पुत्र
और पुत्रियों को मेरे पास ले आ! 7 उन सभी लोगों को, जो मेरे हैं,
मेरे पास ले आ अर्थात् उन लोगों को जो मेरा नाम लेते हैं। मैंने उन
लोगों को स्वयं अपने लिये बनाया है। उनकी रचना मैंने की है और
वे मेरे हैं।”

8 “ऐसे लोगों को जिनकी आँखे तो हैं किन्तु फिर भी वे अन्धे हैं,
उन्हें निकाल लाओ। ऐसे लोगों को जो कानों के होते हुए भी बहरे
हैं, उन्हें निकाल लाओ। 9 सभी लोगों और सभी राष्ट्रों को एक साथ
इकट्ठा करो। यदि किसी भी मिथ्या देवता ने कभी इन बातों के बारे
में कुछ कहा है और भूतकाल में यह बताया था कि आगे क्या कुछ
होगा तो उन्हें अपने गवाह लाने दो और उन (मिथ्या देवताओं) को
प्रमाणित सिद्ध करने दो। उन्हें सत्य बताने दो और उन्हें सुनो।”

10 यहोवा कहता है, “तुम ही लोग तो मेरे साक्षी हो। तू मेरा वह
सेवक है जिसे मैंने चुना है। मैंने तुझे इसलिए चुना है ताकि तू समझ
ले कि ‘वह मैं ही हूँ’ और मुझ में विश्वास करे। मैं सच्चा परमेश्वर हूँ।
मुझसे पहले कोई परमेश्वर नहीं था और मेरे बाद भी कोई परमेश्वर
नहीं होगा। 11 मैं स्वयं ही यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त और कोई दूसरा
उद्धारकर्ता नहीं है, बस केवल मैं ही हूँ। 12 वह मैं ही हूँ जिसने तुझसे
बात की थी। तुझे मैंने बचाया है। वे बातें तुझे मैंने बतायी थीं। जो तेरे
साथ था, वह कोई अनजाना देवता नहीं था। तू मेरा साक्षी है और
मैं परमेश्वर हूँ।” (ये बातें स्वयं यहोवा ने कही थीं) 13 “मैं तो सदा से
ही परमेश्वर रहा हूँ। जब मैं कुछ करता हूँ तो मेरे किये को कोई भी
व्यक्ति नहीं बदल सकता और मेरी शक्ति से कोई भी व्यक्ति किसी
को बचा नहीं सकता।”

14 इस्राएल का पवित्र यहोवा तुझे छुड़ाता है। यहोवा कहता है,
"मैं तेरे लिये बाबुल में सेनाएँ भेजूँगा। सभी ताले लगे दरवाजों को
मैं तोड़ दूँगा। कसदियों के विजय के नारे दु:खभरी चीखों में बदल
जाएँगे। 15 मैं तेरा पवित्र यहोवा हूँ। इस्राएल को मैंने रचा है। मैं तेरा
राजा हूँ।"

यहोवा फिर अपने लोगों की रक्षा करेगा

16 यहोवा सागर में राहें बनायेगा। यहाँ तक कि पछाड़ें खाते हुए
पानी के बीच भी वह अपने लोगों के लिए राह बनायेगा। यहोवा
कहता है, 17 "वे लोग जो अपने रथों, घोड़ों और सेनाओं को लेकर
मुझसे युद्ध करेंगे, पराजित हो जायेंगे। वे फिर कभी नहीं उठ पायेंगे।
वे नष्ट हो जायेंगे। वे दीये की लौ की तरह बुझ जायेंगे। 18 सो उन
बातों को याद मत करो जो प्रारम्भ में घटी थीं। उन बातों को मत
सोचो जो कभी बहुत पहले घटी थीं। 19 क्यों क्योंकि मैं नयी बातें
करने वाला हूँ! अब एक नये वृक्ष के समान तुम्हारा विकास होगा।
तुम जानते हो कि यह सत्य है। मैं मरूभूमि में सचमुच एक मार्ग
बनाऊँगा। मैं सचमुच सूखी धरती पर नदियाँ बहा दूँगा। 20 यहाँ
तक कि बनैले पशु और उल्लू भी मेरा आदर करेंगे। विशालकाय पशु
और पक्षी मेरा आदर करेंगे। जब मरूभूमि में मैं पानी रख दूँगा तो वे
मेरा आदर करेंगे। सूखी धरती में जब मैं नदियों की रचना कर दूँगा
तो वे मेरा आदर करेंगे। मैं ऐसा अपने लोगों को पानी देने के लिये
करूँगा। उन लोगों को जिन्हें मैंने चुना है। 21 यें वे लोग हैं जिन्हें मैंने
बनाया है और ये लोग मेरी प्रशंसा के गीत गाया करेंगे।

22 "याकूब, तूने मुझे नहीं पुकारा। क्यों क्योंकि हे इस्राएल, तेरा
मन मुझसे भर गया था। 23 तुम लोग भेड़ की अपनी बलियाँ मेरे पास
नहीं लाये। तुमने मेरा मान नहीं रखा। तुमने मुझे बलियाँ नहीं अर्पित
कीं। मुझे अन्न बलियाँ अर्पित करने के लिए मैं तुम पर ज़ोर नहीं
डालता। तुम मेरे लिए धूप जलाते—जलाते थक जाओ, इसके लिए

मैं तुम पर दबाव नहीं डालता। 24 तुम अपनी बलियों की चर्बी से
मुझे तृप्त नहीं करते मुझे आदर देने के लिये वस्तुएँ मोल लेने के लिए
अपने धन का उपयोग नहीं करते। अपनी बलियों की चर्बी से मुझे
तृप्त नहीं करते। किन्तु तुम मुझ पर दबाव डालते हो कि मैं तुम्हारे
दास का सा आचरण करूँ। तुम तब तक पाप करते चले गये जब
तक मैं तुम्हारे पापों से पूरी तरह तंग नहीं आ गया।
25 "मैं वही हूँ जो तुम्हारे पापों को धो डालता हूँ। स्वयं अपनी
प्रसन्नता के लिये ही मैं ऐसा करता हूँ। मैं तुम्हारे पापों को याद नहीं
रखूँगा। 26 मेरे विरोध में तुम्हारें जो आक्षेप हैं, उन्हें लाओ, आओ,
हम दोनों न्यायालय को चलें। तुमने जो कुछ किया है, वह तुम्हें
बताना चाहिये और दिखाना चाहिये कि तुम उचित हो। 27 तुम्हारे
आदि पिता ने पाप किया था और तुम्हारे हिमायतियों ने मेरे विरूद्ध
काम किये थे। 28 मैंने तुम्हारे पवित्र शासकों को अपवित्र बना दिया।
मैंने याकूब के लोगों को अभिशप्त बनाया। मैंने इस्राएल का अपमान
कराया।"

44

केवल यहोवा ही परमेश्वर है

1 "याकूब, तू मेरा सेवक है। इस्राएल, मेरी बात सुन! मैंने तुझे
चुना है। जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दे! 2 मैं यहोवा हूँ और
मैंने तुझे बनाया है। तू जो कुछ है, तुझे बनाने वाला मैं ही हूँ। जब तू
माता की देह में ही था, मैंने तभी से तेरी सहायता की है। मेरे सेवक
याकूब! डर मत! यशूरून (इस्राएल) तुझे मैंने चुना है।
3 "प्यासे लोगों के लिये मैं पानी बरसाऊँगा। सूखी धरती पर मैं
जलधाराएँ बहाऊँगा। तेरी संतानों में मैं अपनी आत्मा डालूँगा। तेरे
परिवार पर वह एक बहती जलधारा के समान होगी। 4 वे संसार के
लोगों के बीच फलेंगे—फूलेंगे। वे जलधाराओं के साथ—साथ लगे
बढ़ते हुए चिनार के पेड़ों के समान होंगे।

5 "लोगों में कोई कहेगा, 'मैं यहोवा का हूँ।' तो दूसरा व्यक्ति
'याकूब' का नाम लेगा। कोई व्यक्ति अपने हाथ पर लिखेगा, 'मैं
यहोवा का हूँ' और दूसरा व्यक्ति 'इस्राएल' नाम का उपयोग करेगा।"
6 यहोवा इस्राएल का राजा है। सर्वशक्तिमान यहोवा इस्राएल की
रक्षा करता है। यहोवा कहता है, "परमेश्वर केवल मैं ही हूँ। अन्य
कोई परमेश्वर नहीं है। मैं ही आदि हँ। मैं ही अंत हूँ। 7 मेरे जैसा
परमेश्वर कोई दूसरा नहीं है और यदि कोई है तो उसे अब बोलना
चाहिये। उसको आगे आ कर कोई प्रमाण देना चाहिये कि वह मेरे
जैसा है। भविष्य में क्या कुछ होने वाला है उसे बहुत पहले ही
किसने बता दिया था तो वे हमें अब बता दें कि आगे क्या होगा?
8 "डरो मत, चिंता मत करो! जो कुछ घटने वाला है, वह मैंने तुम्हें
सदा ही बताया है। तुम लोग मेरे साक्षी हो। कोई दूसरा परमेश्वर नहीं
है। केवल मैं ही हूँ। कोई अन्य 'शरणस्थान' नहीं है। मैं जानता हूँ
केवल मैं ही हूँ।"

झूठे देवता बेकार हैं

9 कुछ लोग मूर्ति (झूठे देवता) बनाया करते हैं। किन्तु वे बेकार
हैं। लोग उन बुतों से प्रेम करते हैं किन्तु वे बुत बेकार हैं। वे लोग
उन बुतों के साक्षी हैं किन्तु वे देख नहीं पाते। वे कुछ नहीं जानते।
वे लज्जित होंगे।
10 इन झूठे देवताओं को कोई क्यों गढ़ेगा इन बेकार के बुतों को
कोई क्यों ढ़ालेगा 11 उन देवताओं को कारीगरों ने गढ़ा है और वे
कारीगर तो मात्र मनुष्य हैं, न कि देवता। यदि वे सभी लोग एकजुट
हो पंक्ति में आयें और इन बातों पर विचार विनिमय करें तो वे सभी
लज्जित होंगे और डर जायेंगे।
12 कोई एक कारीगर कोयलों पर लोहे को तपाने के लिए अपने
औजारों का उपयोग करता है। यह व्यक्ति धातु को पीटने के लिए
अपना हथौड़ा काम में लाता है। इसके लिए वह अपनी भुजाओं की

शक्ति का प्रयोग करता है। किन्तु उसी व्यक्ति को जब भूख लगती है, उसकी शक्ति जाती रहती है। वही व्यक्ति यदि पानी न पिये तो कमज़ोर हो जाता है।

13 दूसरा व्यक्ति अपने रेखा पटकने के सूत का उपयोग करता है। वह तख्ते पर रेखा खींचने के लिए परकार को काम में लाता है। यह रेखा उसे बताती है कि वह कहाँ से काटे। फिर वह व्यक्ति निहानी का प्रयोग करता है और लकड़ी में मूर्तियों को उभारता है। वह मूर्तियों को नापने के लिए अपने नपाई के यन्त्र का प्रयोग करता है और इस तरह वह कारीगर लकड़ी को ठीक व्यक्ति का रूप दे देता है और फिर व्यक्ति का सा यह मूर्ति मठ में बैठा दिया जाता है।

14 कोई व्यक्ति देवदार, सनोवर, अथवा बांज के वृक्ष को काट गिराता है। (किन्तु वह व्यक्ति उन पेड़ों को उगाता नहीं। ये पेड़ वन में स्वयं अपने आप उगते हैं। यदि कोई व्यक्ति चीड़ का पेड़ उगाये तो उसकी बढ़वार वर्षा करती है।)

15 फिर वह मनुष्य उस पेड़ को अपने जलाने के काम में लाता है। वह मनुष्य उस पेड़ को काट कर लकड़ी की मुढ्ढियाँ बनाता है और उन्हें खाना बनाने और खुद को गरमाने के काम में लाता है। व्यक्ति थोड़ी सी लकड़ी की आग सुलगा कर अपनी रोटियाँ सेंकता है। किन्तु तो भी मनुष्य उसी लकड़ी से देवता की मूर्ति बनाता है और फिर उस देवता की पूजा करने लगता है। यह देवता तो एक मूर्ति है जिसे उस व्यक्ति ने बनाया है! किन्तु वही मनुष्य उस मूर्ति के
आगे अपना माथा नवाता है! 16 वही मनुष्य आधी लकड़ी को आग
में जला देता है और उस आग पर माँस पका कर भर पेट खाता है और फिर अपने आप को गरमाने के लिए मनुष्य उसी लकड़ी को जलाता है और फिर वही कहता है, “बहुत अच्छे! अब मैं गरम
हूँ और इस आग की लपटों को देख सकता हूँ।” 17 किन्तु थोड़ी
बहुत लकड़ी बच जाती है। सो उस लकड़ी से व्यक्ति एक मूर्ति बना

लेता है और उसे अपना देवता कहने लगता है। वह उस देवता के आगे माथा नवाता है और उसकी पूजा करता है। वह उस देवता से प्रार्थना करते हुए कहता है, "तू मेरा देवता है, मेरी रक्षा कर!"

18 ये लोग यह नहीं जानते कि यें क्या कर रहे हैं ये लोग समझते ही नहीं। ऐसा है जैसे इनकी आँखें बंद हो और ये कुछ देख ही न पाते
हों। इनका मन समझने का जतन ही नहीं करता। 19 इन वस्तुओं के
बारे में ये लोग कुछ सोचते ही नहीं है। ये लोग नासमझ हैं। इसलिए इन लोगों ने अपने मन में कभी नहीं सोचा: "आधी लकड़ियाँ मैंने आग में जला डालीं। दहकते कोयलों का प्रयोग मैंने रोटी सेंकने और माँस पकाने में किया। फिर मैंने माँस खाया और बची हुई लकड़ी का प्रयोग मैंने इस भ्रष्ट वस्तु (मूर्ति) को बनाने में किया। अरे, मैं तो एक लकड़ी के टुकड़े की पूजा कर रहा हूँ!"

20 यह तो बस उस राख को खाने जैसा ही है। वह व्यक्ति यह नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है वह भ्रम में पड़ा हुआ है। इसीलिए उसका मन उसे गलत राह पर ले जाता है। वह व्यक्ति अपना बचाव नहीं कर पाता है और वह यह देख भी नहीं पाता है कि वह गलत काम कर रहा है। वह व्यक्ति नहीं कहेगा, "यह मूर्ति जिसे मैं थामे हूँ एक झूठा देवता है।"

सच्चा परमेश्वर यहोवा इस्राएल का सहायक है

21 "हे याकूब, ये बातें याद रख!
इस्राएल, याद रख कि तू मेरा सेवक है।
मैंने तुझे बनाया।
तू मेरा सेवक है।
इसलिए इस्राएल, मैं तुझको नहीं भूलाऊँगा।
22 तेरे पाप एक बड़े बादल जैसे थे।
किन्तु मैंने तेरे पापों को उड़ा दिया।
तेरे पाप बादल के समान वायु में विलीन हो गये।
मैंने तुझे बचाया और तेरी रक्षा की।

इसलिए मेरे पास लौट आ!”

23 आकाश प्रसन्न है, क्योंकि यहोवा ने महान काम किये।
धरती और यहाँ तक कि धरती के नीचे बहुत गहरे स्थान भी
प्रसन्न हैं!
पर्वत परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए गाओ।
वन के सभी वृक्ष, तुम भी खुशी गाओ!
क्यों क्योंकि यहोवा ने याकूब को बचा लिया है।
यहोवा ने इस्राएल के लिये महान कार्य किये हैं।
24 जो कुछ भी तू है वह यहोवा ने तुझे बनाया।
यहोवा ने यह किया जब तू अभी माता के गर्भ में ही था।
यहोवा तेरा रखवाला कहता है।
“मैं यहोवा ने सब कुछ बनाया! मैंने ही वहाँ आकाश ताना है, और
अपने सामने धरती को बिछाया!”

25 झूठे नबी शगुन दिखाया करते हैं किन्तु यहोवा दर्शाता है कि
उनके शगुन झूठे हैं। जो लोग जादू टोना कर के भविष्य बताते हैं,
यहोवा उन्हें मूर्ख सिद्ध करेगा। यहोवा तथाकथित बुद्धिमान मनुष्यों
तक को भ्रम में डाल देता है। वे सोचते हैं कि वे बहुत कुछ जानते हैं
किन्तु यहोवा उन्हें ऐसा बना देता है कि वे मूर्ख दिखाई दें। 26 यहोवा
अपने सेवकों को लोगों को सन्देश सुनाने के लिए भेजता है और
फिर यहोवा उन सन्देशों को सच कर देता है। यहोवा लोगों को
क्या करना चाहिये उन्हें यह बताने के लिए दूत भेजता है और फिर
यहोवा दिखा देता है कि उनकी सम्मति अच्छी है।

परमेश्वर कुस्रू को यहूदा के पुन: निर्माण के लिये चुनता है

यहोवा यरूशलेम से कहता है, “लोग तुझ में आकर फिर बसेंगे!”
यहोवा यहूदा के नगरों से कहता है, “तुम्हारा फिर से निर्माण
होगा!”

यहोवा ध्वस्त हुए नगरों से कहता है, “मैं तुम नगरों को फिर
से उठाऊँगा!”
27 यहोवा गहरे सागर से कहता है, “सूख जा!
मैं तेरी जलधाराओं को सूखा बना दूँगा!”
28 यहोवा कुस्रू से कहता है, “तू मेरा चरवाहा है।
जो मैं चाहता हूँ तू वही काम करेगा।
तू यरूशलेम से कहेगा, ‘तुझको फिर से बनाया जायेगा!’
तू मन्दिर से कहेगा, ‘तेरी नीवों का फिर से निर्माण होगा!’ ”

45

परमेश्वर कुस्रू को इस्राएल की मुक्ति के लिये चुनता है

1 ये वे बातें हैं जिन्हें यहोवा अपने चुने हुए राजा कुस्रू से कहता
है:

“मैं कुस्रू का दाहिना हाथ थामूँगा।
मैं राजाओं की शक्ति छीनने में उसकी सहायता करूँगा।
नगर द्वार कुस्रू को रोक नहीं पायेंगे।
मैं नगर के द्वार खोल दूँगा, और कुस्रू भीतर चला जायेगा।
2 कुस्रू, तेरी सेनाएँ आगे बढ़ेंगी और मैं तेरे आगे चलूँगा।
मैं पर्वतों को समतल कर दूँगा।
मैं काँसे के नगर—द्वारों को तोड़ डालूँगा।
मैं द्वार पर लगी लोहे की आँगल को काट डालूँगा।
3 मैं तुझे अन्धेरे में रखी हुई दौलत दूँगा।
मैं तुझको छिपी हुई सम्पत्ति दूँगा।
मैं ऐसा करूँगा ताकि तुझको पता चल जाये कि मैं इस्राएल का
परमेश्वर हूँ, और मैं तुझको तेरे नाम से पुकार रहा हूँ!
4 मैं ये बातें अपने सेवक याकूब के लिये करता हूँ।

मैं ये बातें इस्राएल के अपने चुने हुए लोगों के लिये करता हूँ।
कुस्रू, मैं तुझे नाम से पुकार रहा हूँ।
तू मुझको नहीं जानता है, किन्तु मैं तुझको सम्मान की उपाधि
दे रहा हूँ।
5 मैं यहोवा हूँ! मैं ही मात्र एक परमेश्वर हूँ।
मेरे सिवा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है।
मैं तुझे तेरा कमरबन्ध पहनाता हूँ, किन्तु फिर भी तू मुझको नहीं
पहचानता है।
6 मैं यह काम करता हूँ ताकि सब लोग जान जायें कि मैं ही मात्र
परमेश्वर हूँ।
पूर्व से पश्चिम तक सभी लोग ये जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ और
मेरे सिवा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं।
7 मैंने प्रकाश को बनाया और मैंने ही अन्धकार को रचा।
मैंने शान्ति को सृजा और विपत्तियाँ भी मैंने ही बनायीं हैं।
मैं यहोवा हूँ।
मैं ही ये सब बातें करता हूँ।

8 "उपर आकाश से पुण्य ऐसे बरसता है जैसे मेघ से वर्षा धरती पर
बरसती है!
धरती खुल जाती है और पुण्य कर्म उसके साथ—साथ उग
आते हैं जो मुक्ति में फलते फूलते हैं।
मैंने, मुझ यहोवा ने ही यह सब किया है।

परमेश्वर अपनी सृष्टि का नियन्त्रण करता हैं

9 "धिक्कार है इन लोगों को, यें उसी से बहस कर रहे हैं जिसने
इन्हें बनाया है। ये किसी टूटे हुए घड़े के ठीकरों के जैसे हैं। कुम्हार
नरम गीली मिट्टी से घड़ा बनाता है पर मिट्टी उससे नहीं पूछती 'अरे,
तू क्या कर रहा है?' वस्तुएँ जो बनायी गयी हैं, वे यह शक्ति नहीं

रखतीं कि अपने बनाने वाले से कोई प्रश्न पूछे। ये लोग भी मिट्टी
के टूटे घड़े के ठीकरों के जैसे हैं। 10 अरे, एक पिता जब अपने पुत्रों
को माता में जन्म दे रहा होता है तो बच्चे उससे यह नहीं पूछ सकते
कि, 'तू हमें जन्म क्यों दे रहा है?' बच्चे अपनी माँ से यह सवाल नहीं
कर सकते हैं कि, 'तू हमें क्यों पैदा कर रही है?' "

11 परमेश्वर यहोवा इस्राएल का पवित्र है। उसने इस्राएल को
बनाया। यहोवा कहता है,

"क्या तू मुझसे मेरे बच्चों के बारे में पूछेगा अथवा तू मुझे आदेश
देगा उनके ही बारे में जिस को मैंने अपने हाथों से रचा।
12 सो देख, मैंने धरती बनायी और वे सभी लोग जो इस पर रहते हैं,
मेरे बनाये हुए हैं।
मैंने स्वयं अपने हाथों से आकाशों की रचना की, और मैं
आकाश के सितारों को आदेश देता हूँ।
13 कुस्रू को मैंने ही उसकी शक्ति दी है ताकि वह भले कार्य करे।
उसके काम को मैं सरल बनाऊँगा।
कुस्रू मेरे नगर को फिर से बनायेगा और मेरे लोगों को वह स्वतन्त्र
कर देगा।
कुस्रू मेरे लोगों को मुझे नहीं बेचेगा।
इन कामों को करने के लिये मुझे उसको कोई मोल नहीं चुकाना
पड़ेगा।
लोग स्वतन्त्र हो जायेंगे और मेरा कुछ भी मोल नहीं लगेगा।"
सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कहीं।

14 यहोवा कहता है, "मिस्र और कूश ने बहुत वस्तुएँ बनायी थी,
किन्तु हे इस्राएल, तुम वे वस्तुएँ पाओगे।
सेबा के लम्बे लोग तुम्हारे होंगे।
वे अपने गर्दन के चारों ओर जंजीर लिये हुए तुम्हारे पीछे पीछे
चलेंगे।

वे लोग तुम्हारे सामने झुकेंगे,
और वे तुमसे विनती करेंगे।”
इस्राएल, परमेश्वर तेरे साथ है,
और उसे छोड़ कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।

15 हे परमेश्वर, तू वह परमेश्वर है जिसे लोग देख नहीं सकते।
तू ही इस्राएल का उद्धारकर्ता है।
16 बहुत से लोग मिथ्या देवता बनाया करते हैं।
किन्तु वे लोग तो निराश ही होंगे।
वे सभी लोग तो लज्जित हो जायेंगे।
17 किन्तु इस्राएल यहोवा के द्वारा बचा लिया जायेगा।
वह मुक्ति युगों तक बनी रहेगी।
फिर इस्राएल कभी भी लज्जित नहीं होगा।
18 यहोवा ही परमेश्वर है।
उसने आकाश रचे हैं, और उसी ने धरती बनायी है।
यहोवा ही ने धरती को अपने स्थान पर स्थापित किया है।
जब यहोवा ने धरती बनाई उसने ये नहीं चाहा कि धरती खाली रहे।
उसने इसको रचा ताकि इसमें जीवन रहे। मैं यहोवा हूँ।
मेरे सिवा कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।
19 मैंने अकेले ये बातें नहीं कीं। मैंने मुक्त भाव से कहा है।
संसार के किसी भी अन्धेरे में मैं अपने वचन नहीं छुपाता।
मैंने याकूब के लोगों से नहीं कहा कि वे मुझे विरान स्थानों पर ढूँढे।
मैं परमेश्वर हूँ, और मैं सत्य बोलता हूँ।
मैं वही बातें कहता हूँ जो सत्य हैं।

यहोवा सिद्ध करता है कि वह ही परमेश्वर है

20 “तुम लोग दूसरी जातियों से बच भागे। सो आपस में इकट्ठे
हो जाओ और मेरे सामने आओ। (यें लोग अपने साथ मिथ्या देवों
के मूर्ति रखते हैं और इन बेकार के देवताओं से प्रार्थना करते हैं।

किन्तु यें लोग यह नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं [21] इन लोगों को
मेरे पास आने को कहो। इन लोगों को अपने तर्क पेश करने दो।)

"वे बातें जो बहुत दिनों पहले घटी थीं, उनके बारे में तुम्हें किसने बताया बहुत—बहुत दिनों पहले से ही इन बातों को निरन्तर कौन बताता रहा वह मैं यहोवा ही हूँ जिसने ये बातें बतायी थीं। मैं ही एक मात्र यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त कोई और परमेश्वर नहीं है क्या ऐसा कोई और है जो अपने लोगों की रक्षा करता है नहीं, ऐसा कोई अन्य
परमेश्वर नहीं है! [22] हे हर कहीं के लोगों, तुम्हें इन झूठे देवताओं के
पीछे चलना छोड़ देना चाहिये। तुम्हें मेरा अनुसरण करना चाहिये और सुरक्षित हो जाना चाहिये। मैं परमेश्वर हूँ। मुझ से अन्य कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर केवल मैं ही हूँ।

[23] "मैंने स्वयं अपनी शक्ति को साक्षी करके प्रतिज्ञा की है। यह
एक उत्तम वचन है। यह एक आदेश है जो पूरा होगा ही। हर व्यक्ति मेरे (परमेश्वर के) आगे झुकेगा और हर व्यक्ति मेरा अनुसरण करने
का वचन देगा। [24] लोग कहेंगे, 'नेकी और शक्ति बस यहोवा से
मिलती है।' "

कुछ लोग यहोवा से नाराज़ हैं, किन्तु यहोवा का साक्षी आयेगा और यहोवा ने जो किया है, उसे बतायेगा। इस प्रकार वे नाराज़ लोग
निराश होंगे। [25] यहोवा अच्छे काम करने के लिए इस्राएल के लोगों
को विजयी बनाएगा और लोग उसकी प्रशंसा करेंगे।

46

झुठे देव व्यर्थ हैं

[1] बेल और नबो तेरे आगे झुका दिए गये हैं। झूठे देवता तो बस
केवल मूर्ति हैं।

"लोगों ने इन बुतों को जानवरों की पीठों पर लाद दिया है। ये बुत बस एक बोझ हैं, जिन्हें ढोना ही है। ये झूठे देवता कुछ नहीं कर
सकते। बस लोगों को थका सकते हैं। [2] इन सभी झूठे देवताओं को

झुका दिया जाएगा। ये बच कर कहीं नहीं भाग सकेंगे। उन सभी को बन्दियों की तरह ले जाया जायेगा।

3 "याकूब के परिवार, मेरी सुन! हे इस्राएल के लोगों जो अभी जीवित हो, सुनो! मैं तुम्हें तब से धारण किए हूँ जब अभी तुम माता
के गर्भ में ही थे। 4 मैं तुम्हें तब से धारण किए हूँ जब से तुम्हारा जन्म हुआ है और मैं तुम्हें तब भी धारण करूँगा, जब तुम बूढ़े हो जाओगे। तुम्हारे बाल सफेद हो जायेंगे, मैं तब भी तुम्हें धारण किए रहूँगा क्योंकि मैंने तुम्हारी रचना की है। मैं तुम्हें निरन्तर धारण किए रहूँगा और तुम्हारी रक्षा करूँगा।

5 "क्या तुम किसी से भी मेरी तुलना कर सकते हो नहीं! कोई भी व्यक्ति मेरे समान नहीं है। मेरे बारे में तुम हर बात नही समझ
सकते। मेरे जैसा तो कुछ है ही नहीं। 6 कुछ लोग सोने और चाँदी से धनवान हैं। सोने चाँदी के लिए उन्होंने अपनी थैलियों के मुँह खोल दिए हैं। वे अपनी तराजुओं से चाँदी तौला करते हैं। ये लोग लकड़ी से झूठे देवता बनाने के लिये कलाकारों को मजदूरी देते हैं और फिर वे लोग उसी झुठे देवता के आगे झुकते हैं और उसकी
पूजा करते हैं। 7 वे लोग झूठे देवता को अपने कन्धों पर रख कर ले चलते हैं। वह झूठा देवता तो बेकार है। लोगों को उसे ढोना पड़ता है। लोग उस झूठे देवता को धरती पर स्थापित करते हैं। किन्तु वह झूठा देवता हिल—डुल भी नहीं पाता। वह झूठा देवता अपने स्थान से चल कर कहीं नहीं जाता। लोग उसके सामने चिल्लाते हैं किन्तु वह कभी उत्तर नहीं देगा। वह झूठा देवता तो बस मूर्ति है। वह लोगों को उनके कष्टों से नहीं उबार सकता।

8 "तुम लोगों ने पाप किये हैं। तुम्हें इन बातों को फिर से याद
करना चाहिये। इन बातों को याद करो और सुदृढ़ हो जाओ। 9 उन बातों को याद करो जो बहुत पहले घटी थीं। याद रखो कि मैं परमेश्वर हूँ। कोई दूसरा अन्य परमेश्वर नहीं है। वे झूठे देवता मेरे जैसे नहीं

हैं।
10 "प्रारम्भ में मैंने तुम्हें उन बातों के बारे में बता दिया था जो अंत
में घटेगी। बहुत पहले से ही मैंने तुम्हें वे बातें बता दी हैं, जो अभी
घटी नहीं हैं। जब मैं किसी बात की कोई योजना बनाता हूँ तो वह
घटती है। मैं वही करता हूँ जो करना चाहता हूँ। 11 देखो, पूर्व दिशा
से मैं एक व्यक्ति को बुला रहा हूँ। वह व्यक्ति एक उकाब के समान
होगा। वह एक दूर देश से आयेगा और वह उन कामों को करेगा
जिन्हें करने की योजना मैंने बनाई है। मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि मैं इसे
करूँगा और मैं उसे करूँगा ही। क्योंकि उसे मैंने ही बनाया है। मैं
उसे लाऊँगा ही!
12 "तुम में से कुछ सोचा करते हो कि तुम में महान शक्ति है किन्तु
तुम भले काम नहीं करते हो। मेरी सुनों। 13 मैं भले काम करूँगा! मैं
शीघ्र ही अपने लोगों की रक्षा करूँगा। मैं अपने सिय्योन और अपने
अद्भुत इस्राएल के लिये उद्धार लाऊँगा।"

47

बाबुल को परमेश्वर का सन्देश

1 "हे बाबुल की कुमारी पुत्री,
नीचे धूल में गिर जा और वहाँ पर बैठ जा!
अब तू रानी नहीं है!
लोग अब तुझको कोमल और सुन्दर नहीं कहा करेंगे।
2 अब तुझको अपना कोमल वस्त्र उतार कर कठिन परिश्रम करना चाहिए।
अब तू चक्की ले और उस पर आटा पीस।
तू अपना घाघरा इतना ऊपर उठा कि लोगों को तेरी टाँगे दिखने लग जाये और नंगी टाँगों से तू नदी पार कर।
तू अपना देश छोड़ दे!
3 लोग तेरे शरीर को देखेंगे और वे तेरा भोग करेंगे।

तू अपमानित होगी।
मैं तुझसे तेरे बुरे कर्मों का मोल दिलवाऊँगा जो तूने किये हैं।
तेरी सहायता को कोई भी व्यक्ति आगे नहीं आयेगा।”

4 “मेरे लोग कहते हैं, ‘परमेश्वर हम लोगों को बचाता है।
उसका नाम, इस्राएल का पवित्र सर्वशक्तिमान है।’ ”

5 यहोवा कहता है, हे बाबुल, तू बैठ जा और कुछ भी मत कह।
बाबुल की पुत्री, चली जा अन्धेरे में।
क्यों? क्योंकि अब तू और अधिक “राज्यों की रानी” नहीं कहलायेगी।

6 “मैंने अपने लोगों पर क्रोध किया था।
ये लोग मेरे अपने थे, किन्तु मैं क्रोधित था,
इसलिए मैंने उनको अपमानित किया।
मैंने उन्हें तुझको दे दिया, और तूने उन्हें दण्ड दिया।
तूने उन पर कोई करूणा नहीं दर्शायी
और तूने उन बूढ़ों पर भी बहुत कठिन काम का जुआ लाद दिया।
7 तू कहा करती थी, ‘मैं अमर हूँ।
मैं सदा रानी रहूँगी।’
किन्तु तूने उन बुरी बातों पर ध्यान नहीं दिया जिन्हें तूने उन लोगों के साथ किया था।
तूने कभी नहीं सोचा कि बाद में क्या होगा।
8 इसलिए अब, ओ मनोहर स्त्री, मेरी बात तू सुन ले!
तू निज को सुरक्षित जान और अपने आप से कह।
‘केवल मैं ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हूँ।
मेरे समान कोई दूसरा बड़ा नहीं है।
मुझको कभी भी विधवा नहीं होना है।

मेरे सदैव बच्चे होते रहेंगे।”
9 ये दो बातें तेरे साथ में घटित होंगी:
प्रथम, तेरे बच्चे तुझसे छूट जायेंगे और फिर तेरा पति भी तुझसे छूट जायेगा।
हाँ, ये बातें तेरे साथ अवश्य घटेंगी।
तेरे सभी जादू और शक्तिशाली टोने तुझको नहीं बचा पायेंगे।
10 तू बुरे काम करती है, फिर भी तू अपने को सुरक्षित समझती है।
तू कहा करती है, ‘तेरे बुरे काम को कोई नहीं देखता।’
तू बुरे काम करती है किन्तु तू सोचती है कि तेरी बुद्धि और तेरा ज्ञान तुझको बचा लेंगे।
तू स्वयं को सोचती है कि, ‘बस एक तू ही महत्त्वपूर्ण है।
तेरे जैसा और कोई भी दूसरा नहीं है।’

11 “किन्तु तुझ पर विपत्तियाँ आयेंगी।
तू नहीं जानती कि यह कब हो जायेगा, किन्तु विनाश आ रहा है।
तू उन विपत्तियों को रोकने के लिये कुछ भी नहीं कर पायेगी।
तेरा विनाश इतना शीघ्र होगा कि तुझको पता तक भी न चलेगा कि क्या कुछ तेरे साथ घट गया।
12 जादू और टोने को सीखने में तूने कठिन श्रम करते हुए जीवन बिता दिया।
सो अब अपने जादू और टोने को चला।
सम्भव है, टोने—टोटके तुझको बचा ले।
सम्भव है, उनसे तू किसी को डरा दे।
13 तेरे पास बहुत से सलाहकार हैं।
क्या तू उनकी सलाहों से तंग आ चुकी है तो फिर उन लोगों को जो सितारे पढ़ते हैं, बाहर भेज।
जो बता सकते हैं महीना कब शुरू होता है।

सो सम्भव है वे तुझको बता पाये कि तुझ पर कब विपत्तियाँ पड़ेंगी।
14 किन्तु वे लोग तो स्वयं अपने को भी बचा नहीं पायेंगे।
वे घास के तिनकों जैसे भक से जल जायेंगे।
वे इतने शीघ्र जलेंगे कि अंगार तक कोई नहीं बचेगा जिसमें रोटी सेकी जा सके।
कोई आग तक नहीं बचेगी जिसके पास बैठ कर वे खुद को गर्मा ले।
15 ऐसा ही हर वस्तु के साथ में घटेगा जिनके लिये तूने कड़ी मेहनत की।
तेरे जीवन भर जिन से तेरा व्यापार रहा, वे ही व्यक्ति तुझे त्याग जायेंगे।
हर कोई अपनी—अपनी राह चला जायेगा।
कोई भी व्यक्ति तुझको बचाने को नहीं बचेगा।"

48

परमेश्वर अपने जगत पर राज करता है

1 यहोवा कहता है,

"याकूब के परिवार, तू मेरी बात सुन।
तुम लोग अपने आप को 'इस्राएल' कहा करते हो।
तुम यहूदा के घराने से वचन देने के लिये यहोवा का नाम लेते हो।
तुम इस्राएल के परमेश्वर की प्रशंसा करते हो।
किन्तु जब तुम ये बातें करते हो तो सच्चे नहीं होते हो
और निष्ठावान नहीं रहते।

2 "तुम लोग अपने को पवित्र नगरी के नागरिक कहते हो।
तुम इस्राएल के परमेश्वर के भरोसे रहते हो।

उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।

3 “मैंने तुम्हें बहुत पहले उन वस्तुओं के बारे में तुम्हें बताया था जो
आगे घटेंगी।
मैंने तुम्हें उस वस्तुओं के बारे में बताया था,
और फिर अचानक मैंने बातें घटा दीं।
4 मैंने इसलिए वह किया था क्योंकि मुझको ज्ञात था कि तुम बहुत
जिद्दी हो।
मैंने जो कुछ भी बताया था उस पर विश्वास करने से तुमने मना
किया।
तुम बहुत जिद्दी थे,जैसे लोहे की छड़ नहीं झुकती है।
यह बात ऐसी थी जैसे तुम्हारा सिर काँसे का बना हुआ है।
5 इसलिए मैंने तुमको पहले ही बता दिया था, उन सभी ऐसी बातों
को जो घटने वाली हैं।
जब वे बातें घटी थी उससे बहुत पहले मैंने तुम्हें वह बता दी
थीं।
मैंने ऐसा इसलिए किया था ताकि तू कह न सके कि,
‘ये काम हमारे देवताओं ने किये,
ये बातें हमारे देवताओं ने, हमारी मूर्तियों ने घटायी हैं।’ ”

इस्राएल को पवित्र करने के लिए परमेश्वर का ताड़ना

6 “तूने उन सभी बातों को जो हो चुकी हैं,
देखा और सुना है।
ए तुझको ये समाचार दूसरों को बताना चाहिए।
अब मैं तुझे नयी बातें बताना आरम्भ करता हूँ
जिनको तू अभी नहीं जानता है।
7 ये वे बातें नहीं हैं जो पहले घट चुकी है।
ये बातें ऐसी हैं जो अब शुरू हो रही हैं।
आज से पहले तूने ये बातें नहीं सुनी।

सो तू नहीं कह सकता, 'हम तो इसे पहले से ही जानते हैं।'
8 किन्तु तूने कभी उस पर कान नहीं दिया जो मैंने कहा।
तूने कुछ नहीं सीखा।
तूने मेरी कभी नहीं सुनी, किन्तु मैंने तुझे उन बातों के बारे में बताया
क्योंकि मैं जानता न था कि तू मेरे विरोध में होगा।
अरे! तू तो विद्रोही रहा जब से तू पैदा हुआ।

9 "किन्तु मैं धीरज धरूँगा। ऐसा मैं अपने लिये करूँगा।
मुझको क्रोध नहीं आया इसके लिये लोग मेरा यश गायेंगे।
मैं अपने क्रोध पर काबू करूँगा कि तुम्हारा नाश न करूँ।
तुम मेरी बाट जोहते हुए मेरा गुण गाओगे।

10 "देख, मैं तुझे पवित्र करूँगा।
चाँदी को शुद्ध करने के लिये लोग उसे आँच में डालते हैं!
किन्तु मैं तुझे विपत्ति की भट्टी में डालकर शुद्ध करूँगा।
11 यह मैं स्वयं अपने लिये करूँगा!
तू मेरे साथ ऐसे नहीं बरतेगा, जैसे मेरा महत्त्व न हो।
किसी मिथ्या देवता को मैं अपनी प्रशंसा नहीं लेने दूँगा।

12 "याकूब, तू मेरी सुन!
हे इस्राएल के लोगों, मैंने तुम्हें अपने लोग बनने को बुलाया है।
तुम इसलिए मेरी सुनों!
मैं परमेश्वर हूँ, मैं ही आरम्भ हूँ
और मैं ही अन्त हूँ।
13 मैंने स्वयं अपने हाथों से धरती की रचना की।
मेरे दाहिने हाथ ने आकाश को बनाया।
यदि मैं उन्हें पुकारूँ तो

दोनों साथ—साथ मेरे सामने आयेंगे।

14 “इसलिए तुम सभी जो आपस में इकट्ठे हुए हो मेरी बात सुनों!
क्या किसी झूठे देव ने तुझसे ऐसा कहा है कि आगे चल कर
ऐसी बातें घटित होंगी नहीं।”
यहोवा इस्राएल से जिसे, उस ने चुना है, प्रेम करता है।
वह जैसा चाहेगा वैसा ही बाबुल और कसदियों के साथ
करेगा।

15 यहोवा कहता है कि मैंने तुझसे कहा था, “मैं उसको बुलाऊँगा
और मैं उसको लाऊँगा
और उसको सफल बनाऊँगा!
16 मेरे पास आ और मेरी सुन!
मैंने आरम्भ में साफ—साफ बोला ताकि लोग मुझे सुन ले
और मैं उस समय वहाँ पर था जब बाबुल की नींव पड़ी।”
इस पर यशायाह ने कहा,

अब देखो, मेरे स्वामी यहोवा ने इन बातों को तुम्हें बताने के लिये
मुझे और अपनी आत्मा को भेजा है। 17 यहोवा जो मुक्तिदाता है और
इस्राएल का पवित्र है, कहता है,

“तेरा यहोवा परमेश्वर हूँ।
मैं तुझको सिखाता हूँ कि क्या हितकर है।
मैं तुझको राह पर लिये चलता हूँ जैसे तुझे चलना चाहिए।
18 यदि तू मेरी मानता तो तुझे उतनी शान्ति मिल जाती जितनी नदी
भर करके बहती है।
तुझ पर उत्तम वस्तुएँ ऐसी छा जाती जैसे समुद्र की तरंग हों।
19 यदि तू मेरी मानता तो तेरी सन्तानें बहुत बहुत होतीं।

तेरी सन्तानें वैसे अनगिनत हो जाती जैसे रेत के असंख्य कण
होते हैं।
यदि तू मेरी मानता तो तू नष्ट नहीं होता।
तू भी मेरे साथ में बना रहता।”

20 हे मेरे लोगों, तुम बाबुल को छोड़ दो!
हे मेरे लोगों तुम कसदियों से भाग जाओ!
प्रसन्नता में भरकर तुम लोगों से इस समाचार को कहो!
धरती पर दूर दूर इस समाचार को फैलाओ! तुम लोगों को
बता दो,
“यहोवा ने अपने दास याकूब को उबार लिया है!”
21 यहोवा ने अपने लोगों को मरूस्थल में राह दिखाई,
और वे लोग कभी प्यासे नहीं रहे!
क्यों क्योंकि उसने अपने लोगों के लिये चट्टान फोड़कर पानी बहा
दिया!

22 किन्तु परमेश्वर कहता है,
“दुष्टों को शांति नहीं है!”

49

अपने विशेष सेवक को परमेश्वर का बुलावा

1 हे दूर देशों के लोगों,

मेरी बात सुनों हे धरती के निवासियों,
तुम सभी मेरी बात सुनों!
मेरे जन्म से पहले ही यहोवा ने मुझे अपनी सेवा के लिये बुलाया।
जब मैं अपनी माता के गर्भ में ही था, यहोवा ने मेरा नाम रख
दिया था।
2 यहोवा अपने बोलने के लिये मेरा उपयोग करता है।

जैसे कोई सैनिक तेज तलवार को काम में लाता है वैसे ही वह मेरा
उपयोग करता है किन्तु वह अपने हाथ में छुपा कर मेरी
रक्षा करता है।
यहोवा मुझको किसी तेज तीर के समान काम में लेता है किन्तु वह
अपने तीरों के तरकश में मुझको छिपाता भी है।
3 यहोवा ने मुझे बताया है, "इस्राएल, तू मेरा सेवक है।
मैं तेरे साथ में अद्भुत कार्य करूँगा।"
4 मैंने कहा, "मैं तो बस व्यर्थ ही कड़ी मेहनत करता रहा।
मैं थक कर चूर हुआ।
मैं काम का कोई काम नहीं कर सका।
मैंने अपनी सब शक्ति लगा दी।
सचमुच, किन्तु मैं कोई काम पूरा नहीं कर सका।
इसलिए यहोवा निश्चय करे कि मेरे साथ क्या करना है।
परमेश्वर को मेरे प्रतिफल का निर्णय करना चाहिए।
5 यहोवा ने मुझे मेरी माता के गर्भ में रचा था।
उसने मुझे बनाया कि मैं उसकी सेवा करूँ।
उसने मुझको बनाया ताकि मैं याकूब और इस्राएल को उसके पास
लौटाकर ले आऊँ।
यहोवा मुझको मान देगा।
मैं परमेश्वर से अपनी शक्ति को पाऊँगा।"
यह यहोवा ने कहा था।
6 "तू मेरे लिये मेरा अति महत्त्वपूर्ण दास है।
इस्राएल के लोग बन्दी बने हुए हैं।
उन्हें मेरे पास वापस लौटा लाया जायेगा
और तब याकूब के परिवार समूह मेरे पास लौट कर आयेंगे।
किन्तु तेरे पास एक दूसरा काम है।
वह काम इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है!
मैं तुझको सब राष्ट्रों के लिये एक प्रकाश बनाऊँगा।
तू धरती के सभी लोगों की रक्षा के लिये मेरी राह बनेगा।"

7 इस्राएल का पवित्र यहोवा, इस्राएल की रक्षा करता है और यहोवा
कहता है, “मेरा दास विनम्र है।
वह शासकों की सेवा करता है, और लोग उससे घृणा करते
हैं।
किन्तु राजा उसका दर्शन करेंगे और उसके सम्मान में खड़े
होंगे।
महान नेता भी उसके सामने झुकेंगे।”

ऐसा घटित होगा क्योंकि इस्राएल का वह पवित्र यहोवा ऐसा चाहता है, और यहोवा के भरोसे रहा जा सकता है। वह वही है जिसने तुझको चुना।

8 यहोवा कहता है,
“उचित समय आने पर मैं तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर दूँगा।
मैं तुमको सहारा दूँगा।
मुक्ति के दिनों में मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और तुम इसका प्रमाण
होगे कि लोगों के साथ में मेरी वाचा है।
अब देश उजड़ चुका है, किन्तु तुम यह धरती इसके स्वामियों को
लौटवाओगे।
9 तुम बन्दियों से कहोगे, ‘तुम अपने कारागार से बाहर निकल
आओ!’
तुम उन लोगों से जो अन्धेरे में हैं, कहोगे, ‘अन्धेरे से बाहर आ
जाओ।’
वे चलते हुए राह में भोजन कर पायेंगे।
वे वीरान पहाड़ों में भी भोजन पायेंगे।
10 लोग भूखे नहीं रहेंगे, लोग प्यासे नहीं रहेंगे।
गर्म सूर्य, गर्म हवा उनको दुःख नहीं देंगे।
क्यों क्योंकि वही जो उन्हें चैन देता है, (परमेश्वर) उनको राह
दिखायेगा।
वही लोगों को पानी के झरनों के पास—पास ले जायेगा।

11 मैं अपने लोगों के लिये एक राह बनाऊँगा।
पर्वत समतल हो जायेंगे और दबी राहें ऊपर उठ आयेंगी।
12 देखो, दूर दूर देशों से लोग यहाँ आ रहे हैं।
उत्तर से लोग आ रहे हैं और लोग पश्चिम से आ रहे हैं।
लोग मिस्र में स्थित असवान से आ रहे हैं।"
13 हे आकाशों, हे धरती, तुम प्रसन्न हो जाओ!
हे पर्वतों, आनन्द से जयकारा बोलो!
क्यों क्योंकि यहोवा अपने लोगों को सुख देता है।
यहोवा अपने दीन हीन लोगों के लिये बहुत दयालु है।

सिय्योन: त्यागी गई स्त्री

14 किन्तु अब सिय्योन ने कहा, "यहोवा ने मुझको त्याग दिया।
मेरा स्वामी मुझको भूल गया।"
15 किन्तु यहोवा कहता है, "क्या कोई स्त्री अपने ही बच्चों को भूल सकती है नहीं!
क्या कोई स्त्री उस बच्चे को जो उसकी ही कोख से जन्मा है, भूल सकती है नहीं!
सम्भव है कोई स्त्री अपनी सन्तान को भूल जाये।
परन्तु मैं (यहोवा) तुझको नहीं भूल सकता हूँ।
16 देखो जरा, मैंने अपनी हथेली पर तेरा नाम खोद लिया है।
मैं सदा तेरे विषय में सोचा करता हूँ।
17 तेरी सन्तानें तेरे पास लौट आयेंगी।
जिन लोगों ने तुझको पराजित किया था, वे ही व्यक्ति तुझको अकेला छोड़ जायेंगे।"

इस्राएलियों की वापसी

18 ऊपर दृष्टि करो, तुम चारों ओर देखो! तेरी सन्तानें सब आपस में इकट्ठी होकर तेरे पास आ रही हैं।
यहोवा का यह कहना है,

“अपने जीवन की शपथ लेकर मैं तुम्हें ये वचन देता हूँ, तेरी सन्तानें
उन रत्नों जैसी होंगी जिनको तू अपने कंठ में पहनता है।
तेरी सन्तानें वैसी ही होंगी जैसा वह कंठहार होता है जिसे
दुल्हिन पहनती है।
19 आज तू नष्ट है और आज तू पराजित है।
तेरी धरती बेकार है किन्तु कुछ ही दिनों बाद तेरी धरती पर बहुत
बहुत सारे लोग होंगे और वे लोग जिन्होंने तुझे उजाड़ा था,
दूर बहुत दूर चले जायेंगे।
20 जो बच्चे तूने खो दिये, उनके लिये तुझे बहुत दुःख हुआ किन्तु वही
बच्चे तुझसे कहेंगे।
‘यह जगह रहने को बहुत छोटी है!
हमें तू कोई विस्तृत स्थान दे!’
21 फिर तू स्वयं अपने आप से कहेगा,
‘इन सभी बच्चों को मेरे लिये किसने जन्माया यह तो बहुत
अच्छा है।
मैं दुःखी था और अकेला था।
मैं हारा हुआ था।
मैं अपने लोगों से दूर था।
सो ये बच्चे मेरे लिये किसने पाले हैं देखो जरा,
मैं अकेला छोड़ा गया।
ये इतने सब बच्चे कहाँ से आ गये?’ ”
22 मेरा स्वामी यहोवा कहता है,
“देखो, अपना हाथ उठाकर हाथ के इशारे से मैं सारे ही देशों को
बुलावे का संकेत देता हूँ।
मैं अपना झण्डा उठाऊँगा कि सब लोग उसे देखें।
फिर वे तेरे बच्चों को तेरे पास लायेंगे।
वे लोग तेरे बच्चों को अपने कन्धे पर उठायेंगे और वे उनको
अपनी बाहों में उठा लेंगे।

23 राजा तेरे बच्चों के शिक्षक होंगे और राजकन्याएँ उनका ध्यान रखेंगी।
वे राजा और उनकी कन्याएँ दोनों तेरे सामने माथा नवायेंगे।
वे तेरे पाँवों भी धूल का चुम्बन करेंगे।
तभी तू जानेगा कि मैं यहोवा हूँ।
तभी तुझको समझ में आयेगा कि हर ऐसा व्यक्ति जो मुझमें भरोसा रखता है, निराश नहीं होगा।"
24 जब कोई शक्तिशाली योद्धा युद्ध में जीतता है तो क्या कोई उसकी जीती हुई वस्तुओं को उससे ले सकता है जब कोई विजेता सैनिक किसी बन्दी पर पहरा देता है, तो क्या कोई पराजित बन्दी बचकर भाग सकता है
25 किन्तु यहोवा कहता है, "उस बलवान सैनिक से बन्दियों को छुड़ा लिया जायेगा और जीत की वस्तुएँ उससे छीन ली जायेंगी।
यह भला क्यों कर होगा मैं तुम्हारे युद्धों को लड़ूँगा और तुम्हारी सन्तानें बचाऊँगा।
26 ऐसे उन लोगों को जो तुम्हें कष्ट देते हैं मैं ऐसा कर दूँगा कि वे आपस में एक दूसरे के शरीरों को खायें। उनका खून दाखमधु बन जायेगा जिससे वे धुत्त होंगे।
तब हर कोई जानेगा कि मैं वही यहोवा हूँ जो तुमको बचाता है।
सारे लोग जान जायेंगे कि तुमको बचाने वाला याकूब का समर्थ है।"

50

इस्राएल को उसके पापों का दण्ड

1 यहोवा कहता है,
"हे इस्राएल के लोगों, तुम कहा करते थे कि मैंने तुम्हारी माता यरूशलेम को त्याग दिया।

किन्तु वह त्यागपत्र कहाँ है जो प्रमाणित कर दे कि मैंने उसे
त्यागा है।
हे मेरे बच्चों, क्या मुझको किसी का कुछ देना है
क्या अपना कोई कर्ज चुकाने के लिये मैंने तुम्हें बेचा है नहीं!
देखो जरा, तुम बिके थे इसलिए कि तुमने बुरे काम किये थे।
इसलिए तुम्हारी माँ (यरूशलेम) दूर भेजी गई थी।
2 जब मैं घर आया था, मैंने वहाँ किसी को नहीं पाया।
मैंने बार—बार पुकारा किन्तु किसी ने उत्तर नहीं दिया।
क्या तुम सोचते हो कि तुमको मैं नहीं बचा सकता हूँ
मैं तुम्हारी विपत्तियों से तुम्हें बचाने की शक्ति रखता हूँ।
देखो, यदि मैं समुद्र को सूखने को आदेश दूँ तो वह सूख जायेगा।
मछलियाँ प्राण त्याग देंगी क्योंकि वहाँ जल न होगा
और उनकी देह सड़ जायेंगी।
3 मैं आकाशों को काला कर सकता हूँ।
आकाश वैसे ही काले हो जायेंगे जैसे शोकवस्त्र होते हैं।”

परमेश्वर का सेवक परमेश्वर के भरोसे

4 मेरे स्वामी यहोवा ने मुझे शिक्षा देने की योग्यता दी है। इसी से
अब इन दुःखी लोगों को मैं सशक्त बना रहा हूँ। हर सुबह वह मुझे
जगाता है और एक शिष्य के रूप में शिक्षा देता है। 5 मेरा स्वामी
यहोवा सीखने में मेरा सहायक है और मैं उसका विरोधी नहीं बना
हूँ। मैं उसके पीछे चलना नहीं छोड़ूँगा। 6 उन लोगों को मैं अपनी
पिटाई करने दूँगा। मैं उन्हें अपनी दाढ़ी के बाल नोचने दूँगा। वे लोग
जब मेरे प्रति अपशब्द कहेंगे और मुझ पर थूकेंगे तो मैं अपना मुँह
नहीं मोड़ूँगा। 7 मेरा स्वामी, यहोवा मेरी सहायता करेगा। इसलिये
उनके अपशब्द मुझे दुःख नहीं पहुँचायेंगे। मैं सुदृढ़ रहूँगा। मैं जानता
हूँ कि मुझे निराश नहीं होना पड़ेगा।

8 यहोवा मेरे साथ है। वह दर्शाता है कि मैं निर्दोष हूँ। इसलिये
कोई भी व्यक्ति मुझे अपराधी नहीं दिखा पायेगा। यदि कोई व्यक्ति
मुझे अपराधी प्रमाणित करने का जतन करना चाहता है तो वह
व्यक्ति मेरे पास आये। हम इसके लिये साथ साथ मुकद्दमा लड़ेंगे।
9 किन्तु देख, मेरा स्वामी यहोवा मेरी सहायता करता है, सो कोई भी
व्यक्ति मुझे दोषी नहीं दिखा सकता। वे सभी लोग मूल्यहीन पुराने
कपड़ों जैसे हो जायेंगे। कीड़े उन्हें चट कर जायेंगे।

10 जो व्यक्ति यहोवा का आदर करता है उसे उसके सेवक की
भी सुननी चाहिये। वह सेवक, आगे क्या होगा, इसे जाने बिना ही
परमेश्वर में पूरा विश्वास रखते हुए अपना जीवन बिताता है। वह
सचमुच यहोवा के नाम में विश्वास रखता है और वह सेवक अपने
परमेश्वर के भरोसे रहता है।

11 "देखो, तुम लोग अपने ही ढंग से जीना चाहते हो। अपनी अग्नि
और अपनी मशालों का तुम स्वयं जलाते हो। तुम अपने ही ढंग से
रहना चाहते। किन्तु तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। तुम अपनी ही आग
में गिरोगे और तुम्हारी अपनी ही मशालें तुम्हें जला डालेंगी। ऐसी
घटना मैं घटवाऊँगा।"

51

इस्राएल को इब्राहीम के जैसा होना चाहिए

1 "तुममें से कुछ लोग उत्तम जीवन जीने का कठिन प्रयत्न करते
हो। तुम सहायता पाने को यहोवा के निकट जाते हो। मेरी सुनो।
तुम्हें अपने पिता इब्राहीम की ओर देखना चाहिये। इब्राहीम ही वह
पत्थर की खदान है जिससे तुम्हें काटा गया है। 2 इब्राहीम तुम्हारा
पिता है और तुम्हें उसी की ओर देखना चाहिये। तुम्हें सारा की ओर
निहारना चाहिये क्योंकि सारा ही वह स्त्री है जिसने तुम्हें जन्म दिया
है। इब्राहीम को जब मैंने बुलाया था, वह अकेला था। तब मैंने उसे

वरदान दिया था और उसने एक बड़े परिवार की शुरूआत की थी।
उससे अनगिनत लोगों ने जन्म लिया।”
3 सिय्योन पर्वत को यहोवा वैसे ही आशीर्वाद देगा। यहोवा को
यरूशलेम और उसके खंडहरों के लिये खेद होगा और वह उस नगर
के लिये कोई बहुत बड़ा काम करेगा। यहोवा रेगिस्तान को बदल
देगा। वह रेगिस्तान अदन के उपवन के जैसे एक उपवन में बदल
जायेगा। वह उजाड़ स्थान यहोवा के बगीचे के जैसा हो जाएगा।
लोग अत्याधिक प्रसन्न होंगे। लोग वहाँ अपना आनन्द प्रकट करेंगे।
वे लोग धन्यवाद और विजय के गीत गायेंगे।

4 “हे मेरे लोगों, तुम मेरी सुनो!
मेरी व्यवस्थाएँ प्रकाश के समान होंगी जो लोगों को दिखायेंगी
कि कैसे जिया जाता है।
5 मैं शीघ्र ही प्रकट करूँगा कि मैं न्यायपूर्ण हूँ।
मैं शीघ्र ही तुम्हारी रक्षा करूँगा।
मैं अपनी शक्ति को काम में लाऊँगा और मैं सभी राष्ट्रों का न्याय
करूँगा।
सभी दूर—दूर के देश मेरी बाट जोह रहे हैं।
उनको मेरी शक्ति की प्रतीक्षा है जो उनको बचायेगी।
6 ऊपर आकाशों को देखो।
अपने चारों ओर फैली हुई धरती को देखो,
आकाश ऐसे लोप हो जायेगा जैसे धुएँ का एक बादल खो जाता है
और धरती ऐसे ही बेकार हो जायेगी
जैसे पुराने वस्त्र मूल्यहीन होते हैं।
धरती के वासी अपने प्राण त्यागेंगे किन्तु मेरी मुक्ति सदा ही
बनी रहेगी।
मेरी उत्तमता कभी नहीं मिटेगी।
7 अरे ओ उत्तमता को समझने वाले लोगों, तुम मेरी बात सुनो।
अरे ओ मेरी शिक्षाओं पर चलने वालों, तुम वे बातें सुनों
जिनको मैं बताता हूँ।

दुष्ट लोगों से तुम मत डरो।
उन बुरी बातों से जिनको वे तुमसे कहते हैं, तुम भयभीत मत हो।
8 क्यों क्योंकि वे पुराने कपड़ों के समान होंगे और उनको कीड़े खा जायेंगे।
वे ऊन के जैसे होंगे और उन्हें कीड़े चाट जायेंगे,
किन्तु मेरा खरापन सदैव ही बना रहेगा
और मेरी मुक्ति निरन्तर बनी रहेगी।"

परमेश्वर का सामर्थ्य उसके लोगों का रक्षा करता है

9 यहोवा की भुजा (शक्ति) जाग—जाग।
अपनी शक्ति को सज्जित कर!
तू अपनी शक्ति का प्रयोग कर।
तू वैसे जाग जा जैसे तू बहुत बहुत पहले जागा था।
तू वही शक्ति है जिसने रहाब के छक्के छुड़ाये थे।
तूने भयानक मगरमच्छ को हराया था।
10 तूने सागर को सुखाया!
तूने गहरे समुद्र को जल हीन बना दिया।
तूने सागर के गहरे सतह को एक राह में बदल दिया और तेरे लोग उस राह से पार हुए और बच गये थे।
11 यहोवा अपने लोगों की रक्षा करेगा।
वे सिय्योन पर्वत की ओर आनन्द मनाते हुए लौट आयेंगे।
ये सभी आनन्द मग्न होंगे।
सारे ही दुःख उनसे दूर कहीं भागेंगे।

12 यहोवा कहता है, "मैं वही हूँ जो तुमको चैन दिया करता है।
इसलिए तुमको दूसरे लोगों से क्यों डरना चाहिए वे तो बस मनुष्य है जो जिया करते हैं और मर जाते हैं।
वे बस मानवमात्र हैं।

वे वैसे मर जाते हैं जैसे घास मर जाती है।”

13 यहोवा ने तुम्हें रचा है।
उसने निज शक्ति से इस धरती को बनाया है!
उसने निज शक्ति से धरती पर आकाश तान दिया किन्तु तुम उसको और उसकी शक्ति को भूल गये।
इसलिए तुम सदा ही उन क्रोधित मनुष्यों से भयभीत रहते हो जो तुम को हानि पहुँचाते हैं।
तुम्हारा नाश करने को उन लोगों ने योजना बनाई किन्तु आज वे कहाँ हैं (वे सभी चले गये!)

14 लोग जो बन्दी हैं, शीघ्र ही मुक्त हो जायेंगे।
उन लोगों की मृत्यु काल कोठरी में नहीं होगी और न ही वे कारागार में सड़ते रहेंगे।
उन लोगों के पास खाने को पर्याप्त होगा।

15 “मैं ही यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ।
मैं ही सागर को झकोरता हूँ और मैं ही लहरें उठाता हूँ।”
(उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।)

16 “मेरे सेवक, मैं तुझे वे शब्द दूँगा जिन्हें मैं तुझसे कहलवाना चाहता हूँ। मैं तुझे अपने हाथों से ढक कर तेरी रक्षा करूँगा। मैं तुझसे नया आकाश और नयी धरती बनवाऊँगा। मैं तुम्हारे द्वारा सिय्योन (इस्राएल) को यह कहलवाने के लिए कि ‘तुम मेरे लोग हो,’ तेरा उपयोग करूँगा।”

परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड दिया

17 जाग! जाग!
यरूशलेम, जाग उठ!
यहोवा तुझसे बहुत ही कुपित था।

इसलिए तुझको दण्ड दिया गया था।
वह दण्ड ऐसा था जैसा जहर का कोई प्याला हो
और वह तुझको पीना पड़े और उसे तूने पी लिया।

18 यरूशलेम में बहुत से लोग हुआ करते थे किन्तु उनमें से कोई
भी व्यक्ति उसकी अगुवाई नहीं कर सका। उसने पाल—पोस कर
जिन बच्चों को बड़ा किया था, उनमें से कोई भी उसे राह नहीं दिखा
सका। 19 दो जोड़े विपत्ति यरूशलेम पर टूट पड़ी हैं, लूटपाट और
अनाज की परेशानी तथा भयानक भूख और हत्याएँ।

जब तू विपत्ति में पड़ी थी, किसी ने भी तुझे सहारा नहीं दिया,
किसी ने भी तुझ पर तरस नहीं खाया। 20 तेरे लोग दुर्बल हो गये। वे
वहाँ धरती पर गिर पड़े हैं और वहीं पड़े रहेंगे। वे लोग वहाँ हर गली
के नुक्कड़ पर पड़े हैं। वे लोग ऐसे हैं जैसे किसी जाल में फंसा हिरण
हो। उन लोगों पर यहोवा के कोप की मार तब तक पड़ती रही, जब
तक वे ऐसे न हो गये कि और दण्ड झेल ही न सकें। परमेश्वर ने
जब कहा कि उन्हें और दण्ड दिया जायेगा तो वे बहुत कमज़ोर हो
गये।

21 हे बेचारे यरूशलेम, तू मेरी सुन। तू किसी धुत्त व्यक्ति के समान
दुर्बल है किन्तु तू दाखमधु पी कर धुत्त नहीं हुआ है, बल्कि तू तो
ज़हर के उस प्याले को पीकर ऐसा दुर्बल हो गया है।

22 तुम्हारा परमेश्वर और स्वामी वह यहोवा अपने लोगों के लिये
युद्ध करेगा। वह तुमसे कहता है, “देखो! मैं ‘ज़हर के इस प्याले’
(दण्ड) को तुमसे दूर हटा रहा हूँ। मैं अपने क्रोध को तुम पर से हटा
रहा हूँ। अब मेरे क्रोध से तुम्हें और अधिक दण्ड नहीं भोगना होगा।
23 अब मैं अपने क्रोध की मार उन लोगों पर डालूँगा जो तुम्हें दुःख
पहुँचाते हैं। वे लोग तुम्हें मार डालना चाहते थे। उन लोगों ने तुमसे
कहा था, ‘हमारे आगे झुक जाओ। हम तुम्हें कुचल डालेंगे!’ अपने
सामने झुकाने के लिये उन्होंने तुम्हें विवश किया। फिर उन लोगों ने

तुम्हारी पीठ को ऐसा बना डाला जैसे धूल—मिट्टी हो ताकि वे तुम्हें रौंद सकें। उनके लिए चलने के वास्ते तुम किसी राह के जैसे हो गये थे।"

52

इस्राएल का उद्धार होगा

1 जाग उठो! जाग उठो हे सिय्योन!
अपने वस्त्र को धारण करो! तुम अपनी शक्ति सम्भालो!
हे पवित्र यरूशलेम, तुम खड़े हो जाओ!
ऐसे वे लोग जिनको परमेश्वर का अनुसरण करना स्वीकार्य नहीं हैं और जो स्वच्छ नहीं हैं,
तुझमें फिर प्रवेश नहीं कर पायेंगे।
2 तू धूल झाड़ दे! तू अपने सुन्दर वस्त्र धारण कर!
हे यरूशलेम, हे सिय्योन की पुत्री, तू एक बन्दिनी थी
किन्तु अब तू स्वयं को अपनी गर्दन में बन्धी जंजीरों से मुक्त कर!
3 यहोवा का यह कहना है,
"तुझे धन के बदले में नहीं बेचा गया था।
इसलिए धन के बिना ही तुझे बचा लिया जायेगा।"

4 मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मेरे लोग बस जाने के लिए पहले
मिस्र में गये थे, और फिर वे दास बन गये। बाद में अश्शूर ने उन्हें
बेकार में ही दास बना लिया था। 5 अब देखो, यह क्या हो गया है!
अब किसी दूसरे राष्ट्र ने मेरे लोगों को ले लिया है। मेरे लोगों को
ले जाने के लिए इस देश ने कोई भुगतान नहीं किया था। यह देश
मेरे लोगों पर शासन करता है और उनकी हँसी उड़ाता है। वहाँ के
लोग सदा ही मेरे प्रति बुरी बातें कहा करते हैं।"
6 यहोवा कहता है, "ऐसा इसलिये हुआ था कि मेरे लोग मेरे बारे
में जानें। मेरे लोगों को पता चल जायेगा कि मैं कौन हूँ मेरे लोग मेरा

नाम जान जायेंगे और उन्हें यह भी पता चल जायेगा कि वह मैं ही हूँ जो उनसे बोल रहा हूँ।”

7 सुसमाचार के साथ पहाड़ों के ऊपर से आते हुए सन्देशवाहक
को देखना निश्चय ही एक अद्भुत बात है। किसी सन्देशवाहक को
यह घोषणा करते हुए सुनना कितना अद्भुत है: “वहाँ शांति का
निवास है, हम बचा लिये गये हैं! तुम्हारा परमेश्वर राजा है!”

8 नगर के रखवाले जयजयकार करने लगे हैं।
वे आपस में मिलकर आनन्द मना रहे हैं!
क्यों क्योंकि उनमें से हर एक यहोवा को सिय्योन को लौटकर आते हुए देख रहा है।

9 यरूशलेम, तेरे वे भवन जो बर्बाद हो चुके हैं फिर से प्रसन्न हो जायेंगे।
तुम सभी आपस में मिल कर आनन्द मनाओगे।
क्यों क्योंकि यहोवा यरूशलेम पर दयालू हो जायेगा, यहोवा अपने लोगों का उद्धार करेगा।
10 यहोवा सभी राष्ट्रों के ऊपर अपनी पवित्र शक्ति दर्शाएगा
और सभी वे देश जो दूर—दूर बसे हैं, देखेंगे कि परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा कैसे करता है।

11 तुम लोगों को चाहिए कि बाबुल छोड़ जाओ!
वह स्थान छोड़ दो! हे लोगों,
उन वस्तुओं को ले चलने वाले जो उपासना के काम आती हैं,
अपने आप को पवित्र करो।
ऐसी कोई भी वस्तु जो पवित्र नहीं है, उसको मत छुओ।
12 तुम बाबुल छोड़ोगे किन्तु जल्दी में छोड़ने का तुम पर कोई दबाव नहीं होगा।
तुम पर कहीं दूर भाग जाने का कोई दबाव नहीं होगा।

तुम चल कर बाहर जाओगे और यहोवा तुम्हारे साथ साथ
चलेगा।
तुम्हारी अगुवाई यहोवा ही करेगा
और तुम्हारी रक्षा के लिये इस्राएल का परमेश्वर पीछे—पीछे
भी होगा।

परमेश्वर का कष्ट सहता सेवक

13 “मेरे सेवक की ओर देखो। यह बहुत सफल होगा। यह बहुत
महत्त्वपूर्ण होगा। आगे चल कर लोग उसे आदर देंगे और उसका
सम्मान करेंगे।” 14 “किन्तु बहुत से लोगों ने जब मेरे सेवक को देखा
तो वे भौंचक्के रह गये। मेरा सेवक इतनी बुरी तरह से सताया हुआ
था कि वे उसे एक मनुष्य के रूप में बड़ी कठिनता से पहचान पाये।
15 किन्तु और भी बड़ी संख्या में लोग उसे देख कर चकित होंगे।
राजा उसे देखकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे और एक शब्द भी नहीं बोल
पायेंगे। मेरे सेवक के बारे में उन लोगों ने वह कहानी बस सुनी ही
नहीं है, जो कुछ हुआ था, बल्कि उन्होंने तो उसे देखा था। उन लोगों
ने उस कहानी को सुना भर नहीं था, बल्कि उसे समझा था।”

53

1 हमने जो बातें बतायी थी; उनका सचमुच किसने विश्वास किया
यहोवा के दण्ड को सचमुच किसने स्वीकारा

2 यहोवा के सामने एक छोटे पौधे की तरह उसकी बढ़वार हुई।
वह एक ऐसी जड़ के समान था जो सूखी धरती में फूट रही थी। वह
कोई विशेष, नहीं दिखाई देता था। न ही उसकी कोई विशेष महिमा
थी। यदि हम उसको देखते तो हमें उसमें कोई ऐसी विशेष बात नहीं
दिखाई देती, जिससे हम उसको चाह सकते। 3 उस से घृणा की गई
थी और उसके मित्रों ने उसे छोड़ दिया था। वह एक ऐसा व्यक्ति
था जो पीड़ा को जानता था। वह बीमारी को बहुत अच्छी तरह
पहचानता था। लोग उसे इतना भी आदर नहीं देते थे कि उसे देख
तो लें। हम तो उस पर ध्यान तक नहीं देते थे।

4 किन्तु उसने हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए। उसने हमारी पीड़ा
को हमसे ले लिया और हम यही सोचते रहे कि परमेश्वर उसे दण्ड दे
रहा है। हमने सोचा परमेश्वर उस पर उसके कर्मों के लिये मार लगा
रहा है। 5 किन्तु वह तो उन बुरे कामों के लिये बेधा जा रहा था, जो
हमने किये थे। वह हमारे अपराधों के लिए कुचला जा रहा था। जो
कर्ज़ हमें चुकाना था, यानी हमारा दण्ड था, उसे वह चुका रहा था।
उसकी यातनाओं के बदले में हम चंगे (क्षमा) किये गये थे। 6 किन्तु
उसके इतना करने के बाद भी हम सब भेड़ों की तरह इधर–उधर
भटक गये। हममें से हर एक अपनी–अपनी राह चला गया। यहोवा
द्वारा हमें हमारे अपराधों से मुक्त कर दिये जाने के बाद और हमारे
अपराध को अपने सेवक से जोड़ देने पर भी हमने ऐसा किया।

7 उसे सताया गया और दण्डित किया गया। किन्तु उसने उसके
विरोध में अपना मुँह नहीं खोला। वह वध के लिये ले जायी जाती हुई
भेड़ के समान चुप रहा। वह उस मेमने के समान चुप रहा जिसका
ऊन उतारा जा रहा हो। अपना बचाव करने के लिये उसने कभी
अपना मुँह नहीं खोला। 8 लोगों ने उस पर बल प्रयोग किया और
उसे ले गये। उसके साथ खेरपन से न्याय नहीं किया गया। उसके
भावी परिवार के प्रति कोई कुछ नहीं कह सकता क्योंकि सजीव
लोगों की धरती से उसे उठा लिया गया। मेरे लोगों के पापों का
भुगतान करने के लिये उसे दण्ड दिया गया था। 9 उसकी मृत्यु हो
गयी और दुष्ट लोगों के साथ उसे गाड़ा गया। धनवान लोगों के बीच
उसे दफ़नाया गया। उसने कभी कोई हिंसा नहीं की। उसने कभी
झूठ नहीं बोला किन्तु फिर भी उसके साथ ऐसी बातें घटीं।

10 यहोवा ने उसे कुचल डालने का निश्चय किया। यहोवा ने निश्चय
किया कि वह यातनाएँ झेले। सो सेवक ने अपना प्राण त्यागने को
खुद को सौंप दिया। किन्तु वह एक नया जीवन अनन्त–अनन्त
काल तक के लिये पायेगा। वह अपने लोगों को देखेगा। यहोवा
उससे जो करना चाहता है, वह उन बातों को पूरा करेगा। 11 वह
अपनी आत्मा में बहुत सी पीड़ाएँ झेलेगा किन्तु वह घटने वाली

अच्छी बातों को देखेगा। वह जिन बातों का ज्ञान प्राप्त करता है,
उनसे संतुष्ट होगा।

मेरा वह उत्तम सेवक बहुत से लोगों को उनके अपराधों से
छुटकारा दिलाएगा। वह उनके पापों को अपने सिर ले लेगा।
12 इसलिए मैं उसे बहुतों के साथ पुरस्कार का सहभागी बनाऊँगा।
वह इस पुरस्कार को विजेताओं के साथ ग्रहण करेगा। क्यों क्योंकि
उसने अपना जीवन दूसरों के लिए दे दिया। उसने अपने आपको
अपराधियों के बीच गिना जाने दिया। जबकि उसने वास्तव में
बहुतेरों के पापों को दूर किया और अब वह पापियों के लिए प्रार्थना
करता है।

54

परमेश्वर अपने लोगों को वापस लाता है

1 “हे स्त्री, तू प्रसन्न से हो जा!
तूने बच्चों को जन्म नहीं दिया किन्तु फिर भी
तुझे अति प्रसन्न होना है।

यहोवा ने कहा, “जो स्त्री अकेली है,
उसकी बहुत सन्तानें होंगी निस्बत उस स्त्री के जिस के पास
उसका पति है।”

2 “अपने तम्बू विस्तृत कर,
अपने द्वार पूरे खोल।
अपने तम्बू को बढ़ने से मत रोक।
अपने रस्सियाँ बढ़ा और खूंटे मजबूत कर।
3 क्यों क्योंकि तू अपनी वंश—बेल दायें और बायें फैलायेगी।
तेरी सन्तानें अनेकानेक राष्ट्रों की धरती को ले लेंगी
और वे सन्तानें उन नगरों में फिर बसेंगी जो बर्बाद हुए थे।
4 तू भयभीत मत हो, तू लज्जित नहीं होगी।

अपना मन मत हार क्योंकि तुझे अपमानित नहीं होना होगा।
जब तू जवान थी, तू लज्जित हुई थी किन्तु उस लज्जा को अब तू
भूलेगी।
अब तुझको वो लाज नहीं याद रखनी हैं तूने जिसे उस काल
में भोगा था जब तूने अपना पति खोया था।
5 क्यों क्योंकि तेरा पति वही था जिसने तुझको रचा था।
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।
वही इस्राएल की रक्षा करता है, वही इस्राएल का पवित्र है और
वही समूची धरती का परमेश्वर कहलाता है!

6 "तू एक ऐसी स्त्री के जैसी थी जिसको उसके ही पति ने त्याग
दिया था।
तेरा मन बहुत भारी था किन्तु तुझे यहोवा ने अपना बनाने के
लिये बुला लिया।
तू उस स्त्री के समान है जिसका बचपन में ही ब्याह हुआ और जिसे
उसके पति ने त्याग दिया है।
किन्तु परमेश्वर ने तुम्हें अपना बनाने के लिये बुला लिया है।"
7 तेरा परमेश्वर कहता है, "मैंने तुझे थोड़े समय के लिये त्यागा था।
किन्तु अब मैं तुझे फिर से अपने पास आऊँगा और अपनी
महा करूणा तुझ पर दर्शाऊँगा।
8 मैं बहुत कुपित हुआ
और थोड़े से समय के लिये तुझसे छुप गया किन्तु अपनी
महाकरूणा से मैं तुझको सदा चैन दूँगा।"
तेरे उद्धारकर्ता यहोवा ने यह कहा है।

9 परमेश्वर कहता है, "यह ठीक वैसा ही है जैसे नूह के काल में मैंने
बाढ़ के द्वारा दुनियाँ को दण्ड दिया था।

मैंने नूह को वरदान दिया कि फिर से मैं दुनियाँ पर बाढ़ नहीं
लाऊँगा।
उसी तरह तुझको, मैं वह वचन देता हूँ, मैं तुझसे कुपित नहीं होऊँगा
और तुझसे फिर कठोर वचन नहीं बोलूँगा।”

10 यहोवा कहता है, “चाहे पर्वत लुप्त हो जाये
और ये पहाड़ियाँ रेत में बदल जायें
किन्तु मेरी करूणा तुझे कभी भी नहीं त्यागेगी।
मैं तुझसे मेल करूँगा और उस मेल का कभी अन्त न होगा।”
यहोवा तुझ पर करूणा दिखाता है
और उस यहोवा ने ही ये बातें बतायी हैं।

11 “हे नगरी, हे दुखियारी!
तुझको तुफानों ने सताया है
और किसी ने तुझको चैन नहीं दिया है।
मैं तेरा मूल्यवान पत्थरों से फिर से निर्माण करूँगा।
मैं तेरी नींव फिरोजें और नीलम से धरूँगा।
12 मैं तेरी दीवारें चुनने में माणिक को लगाऊँगा।
तेरे द्वारों पर मैं दमकते हुए रत्नों को जड़ूँगा।
तेरी सभी दीवारें मैं मूल्यवान पत्थरों से उठाऊँगा।
13 तेरी सन्तानें यहोवा द्वारा शिक्षित होंगी।
तेरी सन्तानों की सम्पन्नता महान होगी।
14 मैं तेरा निर्माण खरेपन से करूँगा ताकि तू दमन और अन्याय से
दूर रहे।
फिर कुछ नहीं होगा जिससे तू डरेगी।
तुझे हानि पहुँचाने कोई भी नहीं आयेगा।
15 मेरी कोई भी सेना तुझसे कभी युद्ध नहीं करेगी

और यदि कोई सेना तुझ पर चढ़ बैठने का प्रयत्न करे तो तू
उस सेना को पराजित कर देगा।

16 “देखो, मैंने लुहार को बनाया है। वह लोहे को तपाने के लिए
धौंकनी धौंकता है। फिर वह तपे लोहे से जैसे चाहता है, वैसे औजार
बना लेता है। उसी प्रकार मैंने ‘विनाशकर्त्ता’ को बनाया है जो वस्तुओं
को नष्ट करता है।
17 “तुझे हराने के लिए लोग हथियार बनायेंगे किन्तु वे हथियार
तुझे कभी हरा नहीं पायेंगे। कुछ लोग तेरे विरोध में बोलेंगे। किन्तु
हर ऐसे व्यक्ति को बुरा प्रमाणित किया जायेगा जो तेरे विरोध में
बोलेगा।”
यहोवा कहता है, “यहोवा के सेवकों को क्या मिलता है उन्हें
न्यायिक विजय मिलती है। यह उन्हें मुझसे मिलती हैं।”

55

परमेश्वर ऐसा भोजन देता है जिससे सच्ची तृप्ति मिलती है

1 “हे प्यासे लोगों, जल के पास आओ।
यदि तुम्हारे पास धन हीं है तो इसकी चिन्ता मत करो।
आओ, खाना लो और खाओ।
आओ, भोजन लो।
तुम्हें इसकी कीमत देने की आवश्यकता नहीं है।
बिना किसी कीमत के दूध और दाखमधु लो।
2 व्यर्थ ही अपना धन ऐसी किसीवस्तु पर क्यों बर्बाद करते हो जो
सच्चा भोजन नहीं है
ऐसी किसी वस्तु के लिये क्यों श्रम करते हो जो सचमुच में
तुम्हें तृप्त नहीं करती
मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम सच्चा भोजन पाओगे।
तुम उस भोजन का आनन्द लोगे।जिससे तुम्हारा मन तृप्त हो
जायेगा।

3 जो कुछ मैं कहता हूँ, ध्यान से सुनो।
मुझ पर ध्यान दो कि तुम्हारा प्राण सजीव हो।
तुम मेरे पास आओ और मैं तुम्हारे साथ एक वाचा करूँगा जो सदा—सदा के लिये बना रहेगा।
यह वाचा वैसी ही होगी जैसी वाचा दाऊद के संग मैंने की थी।
मैंने दाऊद को वचन दिया था कि मैं उस पर सदा करूणा करूँगा
और तुम उस वाचा के भरोसे रह सकते हो।
4 मैंने अपनी उस शक्ति का दाऊद को साक्षी बनाया था जो सभी राष्ट्रों के लिये थी।
मैंने दाऊद का बहुत देशों का प्रशासक और उनका सेनापति बनाया था।”

5 अनेक अज्ञात देशों में अनेक अनजानी जातियाँ हैं।
तू उन सभी जातियों को बुलायेगा, जो जातियाँ तुझ से अपरिचित हैं
किन्तु वे भागकर तेरे पास आयेंगी। ऐसा घटेगा क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा ऐसा ही चाहता है।
ऐसा घटेगा क्योंकि वह इस्राएल का पवित्र तुझको मान देता है।
6 सो तुम यहोवा को खोजो।
कहीं बहुत देर न हो जाये।
अब तुम उसको पुकार लो जब तक वह तुम्हारे पास है।
7 हे पापियों! अपने पापपूर्ण जीवन को त्यागो।
तुमको चाहिये कि तुम बुरी बातें सोचना त्याग दो।
तुमको चाहिये कि तुम यहोवा के पास लौट आओ।
जब तुम ऐसा करोगे तो यहोवा तुम्हें सुख देगा।
उन सभी को चाहिये कि वे यहोवा की शरण में आयें क्योंकि परमेश्वर हमें क्षमा करता है।

लोग परमेश्वर को नहीं समझ पायेंगे

8 यहोवा कहता है, "तुम्हारे विचार वैसे नहीं, जैसे मेरे हैं।
तुम्हारी राहें वैसी नहीं जैसी मेरी राहें हैं।
9 जैसे धरती से ऊँचे स्वर्ग हैं वैसे ही तुम्हारी राहों से मेरी राहें ऊँची हैं
और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से ऊँचे हैं।"
ये बातें स्वयं यहोवा ने ही कहीं हैं।

10 "आकाश से वर्षा और हिम गिरा करते हैं
और वे फिर वहीं नहीं लौट जाते जब तक वे धरती को नहीं छू लेते हैं
और धरती को गीला नहीं कर देते हैं।
फिर धरती पौधों को अंकुरित करती है
और उनको बढ़ाती है और वे पौधे किसानों के लिये बीज को उपजाते हैं
और लोग उन बीजों से खाने के लिये रोटियाँ बनाते हैं।
11 ऐसे ही मेरे मुख में से मेरे शब्द निकलते हैं
और जब तक घटनाओं को घटा नहीं लेते, वे वापस नहीं आते हैं।
मेरे शब्द ऐसी घटनाओं को घटाते हैं जिन्हें मैं घटवाना चाहता हूँ।
मेरे शब्द वे सभी बातें पूरी करा लेते हैं जिनको करवाने को मैं उनको भेजता हूँ।

12 "जब तुम्हें आनन्द से भरकर शांति और एकता के साथ में उस धरती से छुड़ाकर ले जाया जा रहा होगा जिसमें तुम बन्दी थे, तो तुम्हारे सामने खुशी में पहाड़ फट पड़ेंगे और थिरकने लगेंगे।
पहाड़ियाँ नृत्य में फूट पड़ेंगी।

तुम्हारे सामने जंगल के सभी पेड़ ऐसे हिलने लगेंगे जैसे तालियाँ
पीट रहे हो।
13 जहाँ कंटीली झाड़ियाँ उगा करती हैं वहाँ देवदार के विशाल वृक्ष
उगेंगे।
जहाँ खरपतवार उगा करते थे, वहाँ हिना के पेड़ उगेंगे।
ये बातें उस यहोवा को प्रसिद्ध करेंगी।
ये बातें प्रमाणित करेंगी कि यहोवा शक्तिपूर्णहै।
यह प्रमाण कभी नष्ट नहीं होगा।"

56

सभी जातियाँ यहोवा का अनुसरण करेंगी

1 यहोवा ने यें बातें कही थीं, "सब लोगों के साथ वही काम करो
जो न्यायपूर्ण हों! क्यों क्योंकि मेरा उद्धार शीघ्र ही तुम्हारे पास आने
को है। सारे संसार में मेरा छुटकारा शीघ्र ही प्रकट होगा।"

2 ऐसा व्यक्ति जो सब्त के दिन—सम्बन्धी परमेश्वर के नियम का
पालन करता है, धन्य होगा और वह वक्ति जो बुरा नहीं करेगा,
प्रसन्न रहेगा। 3 कुछ ऐसे लोग जो यहूदी नहीं हैं, अपने को यहोवा से
जोड़ेंगे। ऐसे व्यक्तियों को यह नहीं कहना चाहिये: "यहोवा अपने
लोगों में मुझे स्वीकार नहीं करेगा।" किसी हिजड़े को यह नहीं कहना
चाहिये: "मैं लकड़ी का एक सूखा टुकड़ा हूँ। मैं किसी बच्चे को जन्म
नहीं दे सकता।"

4 इन हिजड़ों को एसी बातें नहीं कहनी चाहिये क्योंकि यहोवा
ने कहा है "इनमें से कुछ हिजड़े सब्त के नियमों का पालन करते
हैं और जो मैं चाहता हूँ, वे वैसा ही करना चाहते हैं। वे सच्चे मन से
मेरी वाचा का पालन करते हैं। 5 इसलिये मैं अपने मन्दिर में उनके
लिए यादगार का एक पत्थर लगाऊँगा। मेरे नगर में उनका नाम याद
किया जायेगा। हाँ! मैं उन्हें पुत्र—पुत्रियों से भी कुछ अच्छा दूँगा।

उन हिजड़ों को मैं एक नाम दूँगा जो सदा—सदा बना रहेगा। मेरे लोगों से वे काट कर अलग नहीं किये जायेंगे।”

6 “कुछ ऐसे लोग जो यहूदी नहीं हैं, अपने आपको यहोवा से
जोड़ेंगे। वे ऐसा इसलिये करेंगे कि यहोवा की सेवा और यहोवा के
नाम को प्रेम कर पायें। यहोवा के सेवक बनने के लिये वे स्वयं को
उससे जोड़ लेंगे। वे सब्त के दिन को उपासना के एक विशेष दिन
के रूप में माना करेंगे और वे मेरी वाचा (विधान) का गम्भीरता से
पालन करेंगे। 7 मैं उन लोगों को अपने पवित्र पर्वत पर लाऊँगा।
अपने प्रार्थना भवन में मैं उन्हें आनन्द से भर दूँगा। वे जो भेंट और
बलियाँ मुझे अर्पित करेंगे, मैं उनसे प्रसन्न होऊँगा। क्यों क्योंकि मेरा
मन्दिर सभी जातियों का प्रार्थना का गृह कहलायेगा।” 8 परमेश्वर ने
इस्राएल के देश निकाला दिये इस्राएलियों को परस्पर इकट्ठा किया।

मेरा स्वामी यहोवा जिसने यह किया, कहता है, “मैंने जिन लोगों को एक साथ इकट्ठा किया, उन लोगों के समूह में दूसरे लोगों को भी इकट्ठा करूँगा।”

9 हे वन के पशुओं!
तुम सभी खाने पर आओ।
10 ये धर्म के रखवाले (नबी) सभी नेत्रहीन हैं।
उनको पता नहीं कि वे क्या कर रहे हैं।
वे उस गूँगे कुत्ते के समान हैं
जो नहीं जानता कि कैसे भौंका जाता है वे धरती पर लोटते हैं
और सो जाते हैं। हाय!
उनको नींद प्यारी है।
11 वे लोग ऐसे हैं जैसे भूखें कुत्ते हों।
जिनको कभी भी तृप्ति नहीं होती।
वे ऐसे चरवाहे हैं जिनको पता तक नहीं कि वे क्या कर रहे हैं
वे उस की अपनी उन भेड़ों से हैं जो अपने रास्ते से भटक कर
कहीं खो गयी।
वे लालची हैं उनको तो बस अपना पेट भरना भाता है।

12 वे कहा करते हैं,
"आओ थोड़ी दाखमधु ले
और उसे पीयें यव सुरा भरपेट पियें।
हम कल भी यही करेंगे,
कल थोड़ी और अधिक पियेंगे।"

57

इस्राएल परमेश्वर की नहीं मानता है

1 अच्छे लोग चले गये किन्तु
इस पर तो ध्यान किसी ने नहीं दिया।
लोग समझते नहीं हैं कि क्या कुछ घट रहा है।
भले लोग एकत्र किये गये।

लोग समझते नहीं कि विपत्तियाँ आ रही हैं।
उन्हें पता तक नहीं हैं कि भले लोग रक्षा के लिये एकत्र किये गये।
2 किन्तु शान्ति आयेगी
और लोग आराम से अपने बिस्तरों में सोयेंगे और लोग उसी तरह जीयेंगे जैसे परमेश्वर उनसे चाहता है।

3 "हे चुड़ैलों के बच्चों, इधर आओ।
तुम्हारा पिता व्यभिचार का पापी है।
तुम्हारी माता अपनी देह यौन व्यापार में बेचा करती है।
इधर आओ!
4 हे विद्रोहियों और झूठी सन्तानों,
तुम मेरी हँसी उड़ाते हो।
मुझ पर अपना मुँह चिढ़ाते हो।
तुम मुझ पर जीभ निकालते हो।
5 तुम सभी लोग हरे पेड़ों के तले झूठे देवताओं के कारण

कामातुर होते हो।
हर नदी के तीर पर तुम बाल वध करते हो
और चट्टानी जगहों पर उनकी बलि देते हो।
6 नदी की गोल बट्टियों को तुम पूजना चाहते हो।
तुम उन पर दाखमधु उनकी पूजा के लिये चढ़ाते हो।
तुम उन पर बलियों को चढ़ाया करते हो किन्तु तुम उनके बदले बस पत्थर ही पाते हो।
क्या तुम यह सोचते हो कि मैं इससे प्रसन्न होता हूँ नहीं! यह मुझको प्रसन्न नहीं करता है।
तुम हर किसी पहाड़ी और हर ऊँचे पर्वत पर अपना बिछौना बनाते हो।
7 तुम उन ऊँची जगहों पर जाया करते हो
और तुम वहाँ बलियाँ चढ़ाते हो।
8 और फिर तुम उन बिछौने के बीच जाते हो
और मेरे विरूद्ध तुम पाप करते हो।
उन देवों से तुम प्रेम करते हो।
वे देवता तुमको भाते हैं।
तुम मेरे साथ में थे किन्तु उनके साथ होने के लिये तुमने मुझको त्याग दिया।
उन सभी बातों पर तुमने परदा डाल दिया जो तुम्हें मेरी याद दिलाती हैं।
तुमने उनको द्वारों के पीछे और द्वार की चौखटों के पीछे छिपाया
और तुम उन झूठे देवताओं के पास उन के संग वाचा करने को जाते हो।
9 तुम अपना तेल और फुलेल लगाते हो
ताकि तुम अपने झूठे देवता मोलक के सामने अच्छे दिखो।
तुमने अपने दूत दूर—दूर देशों को भेजे हैं
और इससे ही तुम नरक में, मृत्यु के देश में गिरोगे।

10 इन बातों को करने में तूने परिश्रम किया है।
फिर भी तू कभी भी नहीं थका।
तुझे नई शक्ति मिलती रही
क्योंकि इन बातों में तूने रस लिया।
11 तूने मुझको कभी नहीं याद
किया यहाँ तक कि तूने मुझ पर ध्यान तक नहीं दिया!
सो तू किसके विषय में चिन्तित रहा करता था
तू किससे भयभीत रहता था
तू झूठ क्यों कहता था
देख मैं बहुत दिनों से चुप रहता आया हूँ
और फिर भी तूने मेरा आदर नहीं किया।
12 तेरी 'नेकी' का मैं बखान कर सकता था और तेरे उन धार्मिक कर्मों का जिनको तू करता है, बखान कर सकता था।
किन्तु वे बातें अर्थहीन और व्यर्थ हैं!
13 जब तुझको सहारा चाहिये तो तू उन झूठे देवों को जिन्हें तूने अपने चारों ओर जुटाया है,
क्यों नहीं पुकारता है।
किन्तु मैं तुझको बताता हूँ कि उन सब को आँधी उड़ा देगी।
हवा का एक झोंका उन्हें तुम से छीन ले जायेगा।
किन्तु वह व्यक्ति जो मेरे सहारे है, धरती को पायेगा।
ऐसा ही व्यक्ति मेरे पवित्र पर्वत को पायेगा।"

यहोवा अपने भक्तों की रक्षा करेगा

14 रास्ता साफ कर! रास्ता साफ करो!
मेरे लोगों के लिये राह को साफ करो!

15 वह जो ऊँचा है और जिसको ऊपर उठाया गया है,
वह जो अमर है,
वह जिसका नाम पवित्र है,

वह यह कहता है, “एक ऊँचे और पवित्र स्थान पर रहा करता हूँ,
किन्तु मैं उन लोगों के बीच भी रहता हूँ जो दु:खी और विनम्र हैं।
ऐसे उन लोगों को मैं नया जीवन दूँगा जो मन से विनम्र हैं।
ऐसे उन लोगों को मैं नया जीवन दूँगा जो मन से विनम्र हैं।
ऐसे उन लोगों को मैं नया जीवन दूँगा जो हृदय से दु:खी हैं।
16 मैं सदा—सदा ही मुकद्दमा लड़ता रहूँगा।
सदा—सदा ही मैं तो क्रोधित नहीं रहूँगा।
यदि मैं कुपित ही रहूँ तो मनुष्य की आत्मा यानी वह जीवन जिसे मैंने उनको दिया है,
मेरे सामने ही मर जायेगा।
17 उन्होंने लालच से हिंसा भरे स्वार्थ साधे थे और उसने मुझको क्रोधित कर दिया था।
मैंने इस्राएल को दण्ड दिया।
मैंने उसे निकाल दिया क्योंकि मैं उस पर क्रोधित था और इस्राएल ने मुझको त्याग दिया।
जहाँ कहीं इस्राएल चाहता था, चला गया।
18 मैंने इस्राएल की राहें देख ली थी।
किन्तु मैं उसे क्षमा (चंगा) करूँगा।
मैं उसे चैन दूँगा और ऐसे वचन बोलूँगा जिस से उसको आराम मिले और मैं उसको राह दिखाऊँगा।
फिर उसे और उसके लोगों को दु:ख नहीं छू पायेगा।
19 उन लोगों को मैं एक नया शब्द शान्ति सिखाऊँगा।
मैं उन सभी लोगों को शान्ति दूँगा जो मेरे पास हैं और उन लोगों को जो मुझ से दूर हैं।
मैं उन सभी लोगों को चंगा (क्षमा) करूँगा!”
ने ये सभी बातें बतायी थी।

[20] किन्तु दुष्ट लोग क्रोधित सागर के जैसे होते हैं।
वे चुप या शांत नहीं रह सकते।
वे क्रोधित रहते हैं और समुद्र की तरह कीचड़ उछालते रहते हैं।
मेरे परमेश्वर का कहना है: [21] "दुष्ट लोगों के लिए कहीं कोई शांति नहीं है।"

58

लोगों से कहो कि वे परमेश्वर का अनुसरण करें

[1] जोर से पुकारो, जितना तुम पुकार सको! अपने को मत रोको!
जोर से पुकारो जैसे नरसिंगा गरजता है!
लोगों को उनके बुरे कामों के बारे में जो उन्होंने किये हैं, बताओ!
याकूब के घराने को उनके पापों के बारे में बताओ!
[2] वे सभी प्रतिदिन मेरी उपासना को आते हैं
और वे मेरी राहों को समझना चाहते हैं
वे ठीक वैसा ही आचरण करते हैं जैसे वे लोग किसी ऐसी जाति के हों जो वही करती है जो उचित होता है।
जो अपने परमेश्वर का आदेश मानते हैं।
वे मुझसे चाहते हैं कि उनका न्याय निष्पक्ष हो।
वे चाहते हैं कि परमेश्वर उनके पास रहे।

[3] अब वे लोग कहते हैं, "तेरे प्रति आदर दिखाने के लिये हम
भोजन करना बन्द कर देते हैं। तू हमारी ओर देखता क्यों नहीं तेरे
प्रति आदर व्यक्त करने के लिये हम अपनी देह को क्षति पहुँचाते
हैं। तू हमारी ओर ध्यान क्यों नहीं देता"

किन्तु यहोवा कहता है, "उपवास के उन दिनों में उपवास रखते
हुए तुम्हें आनन्द आता है किन्तु उन्हीं दिनों तुम अपने दासों का
खून चूसते हो। [4] जब तुम उपवास करते हो तो भूख की वजह से
लड़ते—झगड़ते हो और अपने दुष्ट मुक्कों से आपस में मारा—मारी

करते हो। यदि तुम चाहते हो कि स्वर्ग में तुम्हारी आवाज सुनी जाये
तो तुम्हें उपवास ऐसे नहीं रखना चाहिये जैसे तुम आज कल रखते
हो। 5 तुम क्या यह सोचते हो कि भोजन नहीं करने के उन विशेष
दिनों में बस मैं लोगों को अपने शरीरों को दु:ख देते देखना चाहता
हूँ क्या तुम ऐसा सोचते हो कि मैं लोगों को दु:खी देखना चाहता हूँ
क्या तुम यह सोचते हो कि मैं लोगों को मुरझाये हुए पौधों के समान
सिर लटकाये और शोक वस्त्र पहनते देखना चाहता हूँ क्या तुम यह
सोचते हो कि मैं लोगों को अपना दु:ख प्रकट करने के लिये राख में
बैठे देखना चाहता हूँ यही तो वह सब कुछ है जो तुम खाना न खाने
के दिनों में करते हो। क्या तुम ऐसा सोचते हो कि यहोवा तुमसे बस
यही चाहता है

6 "मैं तुम्हें बताऊँगा कि मुझे कैसा विशेष दिन चाहिये—एक ऐसा
दिन जब लोगों को आज़ाद किया जाये। मुझे एक ऐसा दिन चाहिये
जब तुम लोगों के बोझ को उन से दूर कर दो। मैं एक ऐसा दिन
चाहता हूँ जब तुम दु:खी लोगों को आज़ाद कर दो। मुझे एक ऐसा
दिन चाहिये जब तुम उनके कंधों से भार उतार दो। 7 मैं चाहता हूँ
कि तुम भूखे लोगों के साथ अपने खाने की वस्तुएँ बाँटो। मैं चाहता
हूँ कि तुम ऐसे गरीब लोगों को ढूँढों जिनके पास घर नहीं है और
मेरी इच्छा है कि तुम उन्हें अपने घरों में ले आओ। तुम जब किसी
ऐसे व्यक्ति को देखो, जिसके पास कपड़े न हों तो उसे अपने कपड़े
दे डालो। उन लोगों की सहायता से मुँह मत मोड़ो, जो तुम्हारे अपने
हों।"

8 यदि तुम इन बातों को करोगे तो तुम्हारा प्रकाश प्रभात के
प्रकाश के समान चमकने लगेगा। तुम्हारे जख्म भर जायेंगे। तुम्हारी
"नेकी" (परमेश्वर) तुम्हारे आगे—आगे चलने लगोगी और यहोवा की
महिमा तुम्हारे पीछे—पीछे चली आयेगी। 9 तुम तब यहोवा को जब
पुकारोगे, तो यहोवा तुम्हें उसका उत्तर देगा। जब तुम यहोवा को

पुकारोगे तो वह कहेगा, "मैं यहाँ हूँ।"

तुम्हें लोगों का दमन करना और लोगों को दु:ख देना छोड़ देना
चाहिये। तुम्हें लोगों से किसी बातों के लिये कड़वे शब्द बोलना
और उन पर लांछन लगाना छोड़ देना चाहिये। 10 तुम्हें भूखों की
भूख के लिये दु:ख का अनुभव करते हुए उन्हें भोजन देना चाहिये।
दु:खी लोगों की सहायता करते हुए तुम्हें उनकी आवश्यकताओं
को पूरा करना चाहिये। जब तुम ऐसा करोगे तो अन्धेरे में तुम्हारी
रोशनी चमक उठेगी और तुम्हें कोई दु:ख नहीं रह जायेगा। तुम ऐसे
चमक उठोगे जैसे दोपहर के समय धूप चमकती है।

11 यहोवा सदा तुम्हारी अगुवाई करेगा। मरूस्थल में भी वह तेरे
मन की प्यास बुझायेगा। यहोवा तेरी हड्डियों को मज़बूत बनायेगा।
तू एक ऐसे बाग़ के समान होगा जिसमें पानी की बहुतायत है। तू
एक ऐसे झरने के समान होगा जिसमें सदा पानी रहता है।

12 बहुत वर्षों पहले तुम्हारे नगर उजाड़ दिये गये थे। इन नगरों
को तुम नये सिरे से फिर बसाओगे। इन नगरों का निर्माण तुम इनकी
पुरानी नीवों पर करोगे। तुम टूटे परकोटे को बनाने वाले कहलाओगे
और तुम मकानों और रास्तों को बहाल करने वाले कहलाओगे।

13 ऐसा उस समय होगा जब तू सब्त के बारे में परमेश्वर के नियमों
के विरूद्ध पाप करना छोड़ देगा और ऐसा उस समय होगा जब तू
उस विशेष दिन, स्वयं अपने आप को प्रसन्न करने के कामों को
करना रोक देगा। सब्त के दिन को तुझे एक खुशी का दिन कहना
चाहिये। यहोवा के इस विशेष दिन का तुझे आदर करना चाहिये।
जिन बातों को तू हर दिन कहता और करता है, उनको न करते हुए
तुझे उस विशेष दिन का आदर करना चाहिये।

14 तब तू यहोवा में प्रसन्नता प्राप्त करेगा, और मैं यहोवा धरती के
ऊँचे—ऊँचे स्थानों पर "मैं तुझको ले जाऊँगा। मैं तेरा पेट भरूँगा।

मैं तुझको ऐसी उन वस्तुओं को दूँगा जो तेरे पिता याकूब के पास
हुआ करती थीं।” ये बातें यहोवा ने बतायी थीं!

59

दुष्ट लोगों को अपना जीवन बदलना चाहिये

1 देखो, तुम्हारी रक्षा के लिये यहोवा की शक्ति पर्याप्त है। जब तुम
सहायता के लिये उसे पुकारते हो तो वह तुम्हारी सुन सकता है।
2 किन्तु तुम्हारे पाप तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग करते हैं और
इसीलिए वह तुम्हारी तरफ से कान बन्द कर लेता है। 3 तुम्हारे हाथ
गन्दे हैं, वे खून से सने हुए हैं। तुम्हारी उँगलियाँ अपराधों से भरी
हैं। अपने मुँह से तुम झूठ बोलते हो। तुम्हारी जीभ बुरी बातें करती
है। 4 दूसरे व्यक्ति के बारे में कोई व्यक्ति सच नहीं बोलता। लोग
अदालत में एक दूसरे के खिलाफ़ मुकद्दमा करते हैं। अपने मुकद्दमे
जीतने के लिये वे झूठे तकर् पर निर्भर करते हैं। वे एक दूसरे के
बारे में परस्पर झूठ बोलते हैं। वे कष्ट को गर्भ में धारण करते हैं
और बुराईयों को जन्म देते हैं। 5 वे साँप के विष भरे अण्डों के
समान बुराई को सेते हैं। यदि उनमें से तुम एक अण्डा भी खा लो
तो तुम्हारी मृत्यु हो जाये और यदि तुम उनमें से किसी अण्डे को
फोड़ दो तो एक ज़हरीला नाग बाहर निकल पड़े।

लोग झूठ बोलते हैं। यह झूठ मकड़ी के जालों जैसी कपड़े नहीं
बन सकते। 6 उन जालों से तुम अपने को ढक नहीं सकते।

कुछ लोग बदी करते हैं और अपने हाथों से दूसरों को हानि
पहुँचाते हैं। 7 ऐसे लोग अपने पैरों का प्रयोग बदी के पास पहुँचने
के लिए करते हैं। ये लोग निर्दोष व्यक्तियों को मार डालने की जल्दी
में रहते हैं। वे बुरे विचारों में पड़े रहते हैं। वे जहाँ भी जाते हैं विनाश
और विध्वंस फैलाते हैं। 8 ऐसे लोग शांति का मार्ग नहीं जानते।
उनके जीवन में नेकी तो होती ही नहीं। उनके रास्ते ईमानदारी के

नहीं होते। कोई भी व्यक्ति जो उनके जैसा जीवन जीता है, अपने
जीवन में कभी शांति नहीं पायेगा।

इस्राएल के पापों से विपत्ति का आना

9 इसलिए परमेश्वर का न्याय और मुक्ति हमसे बहुत दूर है।
हम प्रकाश की बाट जोहते हैं।
पर बस केवल अन्धकार फैला है।
हमको चमकते प्रकाश की आशा है
किन्तु हम अन्धेरे में चल रहे हैं।
10 हम ऐसे लोग हैं जिनके पास आँखें नहीं है।
नेत्रहीन लोगों के समान हम दीवारों को टटोलते चलते हैं।
हम ठोकर खाते हैं और गिर जाते हैं जैसे यह रात हो।
दिन के प्रकाश में भी हम मुर्दों की भाँति गिर पड़ते हैं।
11 हम सब बहुत दु:खी हैं।
हम सब ऐसे कराहते हैं जैसे कोई रीछ और कोई कपोत कराहता हैं।
हम ऐसे उस समय की बाट जोह रहे हैं जब लोग निष्पक्ष होंगे किन्तु अभी तक तो कहीं भी नेकी नहीं है।
हम उद्धार की बाट जोह रहे हैं किन्तु उद्धार बहुत—बहुत दूर है।
12 क्यों क्योंकि हमने अपने परमेश्वर के विरोध में बहुत पाप किये हैं।
हमारे पाप बताते हैं कि हम बहुत बुरे हैं।
हमें इसका पता है कि हम इन बुरे कर्मों को करने के अपराधी हैं।
13 हमने पाप किये थे और हमने अपने यहोवा से मुख मोड़ लिया था।
यहोवा से हम विमुख हुए और उसे त्याग दिया। हमने बुरे कर्मों की योजना बनाई थी।
हमने ऐसी उन बातों की योजना बनाई थी जो हमारे परमेश्वर के विरोध में थी।

हमने वे बातें सोची थी और दूसरों को सताने की योजना बनाई
थी।
14 हमसे नेकी को पीछे ढकेला गया।
निष्पक्षता दूर ही खड़ी रही।
गलियों में सत्य गिर पड़ा था
मानों नगर में अच्छाई का प्रवेश नहीं हुआ।
15 सच्चाई चली गई और वे लोग लूटे गये जो भला करना चाहते थे।
यहोवा ने ढूँढा था किन्तु कोई भी, कहीं भी अच्छाई न मिल
पायी।
16 यहोवा ने खोज देखा किन्तु उसे कोई व्यक्ति नहीं मिला
जो लोगों के साथ खड़ा हो और उनको सहारा दे।
इसलिये यहोवा ने स्वयं अपनी शक्ति का और स्वयं अपनी नेकी
का प्रयोग किया
और यहोवा ने लोगों को बचा लिया।
17 यहोवा ने नेकी का कवच पहना।
यहोवा ने उद्धार का शिरस्त्राण धारण किया।
यहोवा ने दण्ड के बने वस्त्र पहने थे।
यहोवा ने तीव्र भावनाओं का चोगा पहना था
18 यहोवा अपने शत्रु पर क्रोधित है सो यहोवा उन्हें ऐसा दण्ड देगा
जैसा उन्हें मिलना चाहिये।
यहोवा अपने शत्रुओं से कुपित है सो यहोवा सभी दूर—दूर के
देशों के लोगों को दण्ड देगा।
यहोवा उन्हें वैसा दण्ड देगा जैसा उन्हें मिलना चाहिये।
19 फिर पश्चिम के लोग यहोवा के नाम को आदर देंगे
और पूर्व के लोग यहोवा की महिमा से भय विस्मित हो जायेंगे।
यहोवा ऐसे ही शीघ्र आ जायेगा जैसे तीव्र नदी बहती हुई आ जाती
है।
यह उस तीव्र वायु वेग सा होगा जिसे यहोवा उस नदी को
तूफान बहाने के लिये भेजता है।
20 फिर सिय्योन पर्वत पर एक उद्धार कर्ता आयेगा।

वह याकूब के उन लोगों के पास आयेगा जिन्होंने पाप तो
किये थे किन्तु जो परमेश्वर की ओर लौट आए थे।

21 यहोवा कहता है: "मैं उन लोगों के साथ एक वाचा करूँगा।
मैं वचन देता हूँ मेरी आत्मा और मेरे शब्द जिन्हें मैं तेरे मुख में रख
रहा हूँ तुझे कभी नहीं छोड़ेंगे। वे तेरी संतानों और तेरे बच्चों के बच्चों
के साथ रहेंगे। वे आज तेरे साथ रहेंगे और सदा—सदा तेरे साथ
रहेंगे।"

60

परमेश्वर आ रहा है

1 "हे यरूशलेम, हे मेरे प्रकाश, तू उठ जाग!
तेरा प्रकाश (परमेश्वर) आ रहा है!
यहोवा की महिमा तेरे ऊपर चमकेगी।
2 आज अन्धेरे ने सारा जग
और उसके लोगों को ढक रखा है।
किन्तु यहोवा का तेज प्रकट होगा और तेरे ऊपर चमकेगा।
उसका तेज तेरे ऊपर दिखाई देगा।
3 उस समय सभी देश तेरे प्रकाश (परमेश्वर) के पास आयेंगे।
राजा तेरे भव्य तेज के पास आयेंगे।
4 अपने चारों ओर देख! देख, तेरे चारों ओर लोग इकट्ठे हो रहे हैं
और तेरी शरण में आ रहे हैं।
ये सभी लोग तेरे पुत्र हैं जो दूर अति दूर से आ रहे हैं और
उनके साथ तेरी पुत्रियाँ आ रही हैं।

5 "ऐसा भविष्य में होगा और ऐसे समय में जब तुम अपने लोगों को
देखोगे
तब तुम्हारे मुख खुशी से चमक उठेंगे।
पहले तुम उत्तेजित होगे
किन्तु फिर आनन्दित होवोगे।

समुद्र पार देशों की सारी धन दौलत तेरे सामने धरी होगी।
तेरे पास देशों की सम्पत्तियाँ आयेंगी।
6 मिद्यान और एपा देशों के ऊँटों के झुण्ड तेरी धरती को ढक लेंगे।
शिबा के देश से ऊँटों की लम्बी पंक्तियाँ तेरे यहाँ आयेंगी।
वे सोना और सुगन्ध लायेंगे।
लोग यहोवा के प्रशंसा के गीत गायेंगे।
7 केदार की भेड़ें इकट्ठी की जायेंगी
और तुझको दे दी जायेंगी।
नबायोत के मेढ़े तेरे लिये लाये जायेंगे।
वे मेरी वेदी पर स्वीकर करने के लायक बलियाँ बनेंगे
और मैं अपने अद्‌भुत मन्दिर
और अधिक सुन्दर बनाऊँगा।
8 इन लोगों को देखो!
ये तेरे पास ऐसी जल्दी में आ रहे हैं जैसे मेघ नभ को जल्दी पार करते हैं।
ये ऐसे दिख रहे हैं जैसे अपने घोंसलों की ओर उड़ते हुए कपोत हों।
9 सुदूर देश मेरी प्रतिक्षा में हैं।
तर्शीश के बड़े—बड़े जलयान जाने को तत्पर है।
ये जलयान तेरे वंशजों को दूर—दूर देशों से लाने को तत्पर हैं
और इन जहाजों पर उनका स्वर्ण उनके साथ आयेगा और उनकी चाँदी भी ये जहाज लायेंगे।
ऐसा इसलिये होगा कि तेरे परमेश्वर यहोवा का आदर हो।
ऐसा इसलिये होगा कि इस्राएल का पवित्र अद्‌भुत काम करता है।
10 दूसरे देशों की सन्तानें तेरी दीवारें फिर उठायेंगी
और उनके शासक तेरी सेवा करेंगे।

“ब मैं तुझसे क्रोधित हुआ था, मैंने तुझको दु:ख दिया
किन्तु अब मेरी इच्छा है कि तुझ पर कृपालु बनूँ।

इसलिये तुझको मैं चैन दूँगा।
11 तेरे द्वार सदा ही खुले रहेंगे।
वे दिन अथवा रात में कभी बन्द नहीं होंगे।
देश और राजा तेरे पास धन लायेंगे।
12 कुछ जाति और कुछ राज्य तेरी सेवा नहीं करेंगे किन्तु वे जातियाँ और राज्य नष्ट हो जायेंगे।
13 लबानोन की सभी महावस्तुएं तुझको अर्पित की जायेंगी।
लोग तेरे पास देवदार, तालीशपत्र और सरों के पेड़ लायेंगे।
यह स्थान मेरे सिहांसन के सामने एक चौकी सा होगा
और मैं इसको बहुत मान दूँगा।
14 वे ही लोग जो पहले तुझको दु:ख दिया करते थे, तेरे सामने झुकेंगे।
वे ही लोग जो तुझसे घृणा करते थे, तेरे चरणों में झुक जायेंगे।
वे ही लोग तुझको कहेंगे, 'यहोवा का नगर,' 'सिय्योन नगर इस्राएल के पवित्र का है।'

15 "फिर तुझको अकेला नहीं छोड़ा जायेगा।
फिर कभी तुझसे घृणा नहीं होगी।
तू फिर से कभी भी उजड़ेगी नहीं।
तू महान रहेगी, तू सदा और सर्वदा आनन्दित रहेगी।
16 तेरी जरूरत की वस्तुएँ तुझको जातियाँ प्रदान करेंगी।
यह इतना ही सहज होगा जैसे दूध मुँह बच्चे को माँ का दूध मिलता है।
वैसे ही तू शासकों की सम्पत्तियाँ पियेगी।
तब तुझको पता चलेगा कि यह मैं यहोवा हूँ जो तेरी रक्षा करता है।
तुझको पता चल जायेगा कि वह याकूब का महामहिम तुझको बचाता है।

17 फिलहाल तेरे पास ताँबा है

परन्तु इसकी जगह मैं तुझको सोना दूँगा।
अभी तो तेरे पास लोहा है,
पर उसकी जगह तुझे चाँदी दूँगा।
तेरी लकड़ी की जगह मैं तुझको ताँबा दूँगा।
तेरे पत्थरों की जगह तुझे लोहा दूँगा और तुझे दण्ड देने की जगह मैं तुझे सुख चैन दूँगा।
जो लोग अभी तुझको दुःख देते हैं
वे ही लोग तेरे लिये ऐसे काम करेंगे जो तुझे सुख देंगे।
18 तेरे देश में हिंसा और तेरी सीमाओं में तबाही और बरबादी कभी नहीं सुनाई पड़ेगी।
तेरे देश में लोग फिर कभी तेरी वस्तुएँ नहीं चुरायेंगे।
तू अपने परकोटों का नाम 'उद्धार' रखेगा
और तू अपने द्वारों का नाम 'स्तुति' रखेगा।

19 "दिन के समय में तेरे लिये सूर्य का प्रकाश नहीं होगा
और रात के समय में चाँद का प्रकाश तेरी रोशनी नहीं होगी।
क्यों क्योंकि यहोवा ही सदैव तेरे लिये प्रकाश होगा।
तेरा परमेश्वर तेरी महिमा बनेगा।
20 तेरा 'सूरज' फिर कभी भी नहीं छिपेगा।
तेरा 'चाँद' कभी भी काला नहीं पड़ेगा।
क्यों क्योंकि यहोवा का प्रकाश सदा सर्वदा तेरे लिये होगा
और तेरा दुःख का समय समाप्त हो जायेगा।

21 "तेरे सभी लोग उत्तम बनेंगे।
उनको सदा के लिये धरती मिल जायेगी।
मैंने उन लोगों को रचा है।
वे अद्भुत पौधे मेरे अपने ही हाथों से लगाये हुए हैं।
22 छोटे से छोटा भी विशाल घराना बन जायेगा।
छोटे से छोटा भी एक शक्तिशाली राष्ट्र बन जायेगा।

जब उचित समय आयेगा,
मैं यहोवा शीघ्र ही आ जाऊँगा
और मैं ये सभी बातें घटित कर दूँगा।"

61

यहोवा का मुक्ति सन्देश

1 यहोवा का सेवक कहता है, "मेरे स्वामी यहोवा ने मुझमें अपनी
आत्मा स्थापित की है। यहोवा मेरे साथ है, क्योंकि कुछ विशेष
काम करने के लिये उसने मुझे चुना है। यहोवा ने मुझे इन कामों
को करने के लिए चुना है: दीन दु:खी लोगों के लिए सुसमाचार
की घोषणा करना; दु:खी लोगों को सुख देना; जो लोग बंधन में
पड़े हैं, उनके लिये मुक्ति की घोषणा करना; बन्दी लोगों को उनके
छुटकारे की सूचना देना; 2 उस समय की घोषणा करना जब यहोवा
अपनी करूणा प्रकट करेगा; उस समय की घोषणा करना जब हमारा
परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देगा; दु:खी लोगों को पुचकारना; 3 सिय्योन
के दु:खी लोगों को आदर देना (अभी तो उनके पास बस राख हैं);
सिय्योन के लोगों को प्रसन्नता का स्नेह प्रदान करना; (अभी तो उनके
पास बस दु:ख हैं) सिय्योन के लोगों को परमेश्वर की स्तुति के गीत
प्रदान करना (अभी तो उनके पास बस उनके दर्द हैं); सिय्योन के
लोगों को उत्सव के वस्त्र देना (अभी तो उनके पास बस उनके दु:ख
ही हैं।) उन लोगों को 'उत्तमता के वृक्ष' का नाम देना; उन लोगों को
यहोवा के अद्‌भुत वृक्ष की संज्ञा देना।"

4 उस समय, उन पुराने नगरों को जिन्हें उजाड़ दिया गया था, फिर
से बसाया जायेगा। उन नगरों को वैसे ही नया बना दिया जायेगा
जैसे वे आरम्भ में थे। वे नगर जिन्हें वर्षों पहले हटा दिया गया था,
नये जैसे बना दिये जायेंगे।

5 फिर तुम्हारे शत्रु तुम्हारे पास आयेंगे और तुम्हारी भेड़ें चराया
करेंगे। तुम्हारे शत्रुओं की संतानें तुम्हारे खेतों और तुम्हारे बगीचों में

काम किया करेंगी। 6 तुम 'यहोवा के याजक' हलाओगे। तुम 'हमारे
परमेश्वर के सहायक' कहलाओगे। धरती के सभी देशों से आई हुई
सम्पत्ति को तुम प्राप्त करोगे और तुम्हें इस बात का गर्व होगा कि
वह सम्पत्ति तुम्हारी है।

7 बीते समय में लोग तुम्हें लज्जित करते थे और तुम्हारे बारे में बुरी
बुरी बातें बनाया करते थे। तुम इतने लज्जित थे जितना और कोई
दूसरा व्यक्ति नहीं था। इसलिए तुम्हें अपनी धरती में दूसरे लोगों से
दुगुना हिस्सा प्राप्त होगा। तुम ऐसी प्रसन्नता पाओगे जिसका कभी
अंत नहीं होगा। 8 ऐसा क्यों घटित होगा क्योंकि मैं यहोवा हूँ और
मुझे नेकी से प्रेम है। मुझे चोरी से और हर उस बात से, जो अनुचित
है, घृणा है। इसलिये लोगों को, जो उन्हें मिलना चाहिये, वह भुगतान
मैं दूँगा। अपने लोगों के साथ सदा सदा के लिए मैं यह वाचा कर रहा
हूँ कि 9 सभी देशों का हर कोई व्यक्ति मेरे लोगों को जान जायेगा।
मेरी जाति के वंशजों को हर कोई जान जायेगा। हर कोई व्यक्ति जो
उन्हें देखेगा, जान जायेगा कि यहोवा उन्हें आशीर्वाद देता है।

यहोवा का सेवक उद्धार और उत्तमता लाता है

10 यहोवा मुझको अति प्रसन्न करता है।
मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व परमेश्वर में स्थिर है और प्रसन्नता में मगन है।
यहोवा ने उद्धार के वस्त्र से मुझको ढक लिया।
वे वस्त्र ऐसे ही भव्य हैं जैसे भव्य वस्त्र कोई पुरूष अपने विवाह के अवसर पर पहनता है।
यहोवा ने मुझे नेकी के चोगे से ढक लिया है।
यह चोगा वैसा ही सुन्दर है जैसा सुन्दर किसी नारी का विवाह वस्त्र होता है।
11 धरती पौधे उगाती है।
लोग बगीचों में बीज डालते हैं और वह बगीचा उन बीजों को उगाता है।

वैसे ही यहोवा नेकी को उगायेगा।
इस तरह मेरा स्वामी सभी जातियों के बीच स्तुति को बढ़ायेगा।

62

नया यरूशलेम: नेकी का एक नगर

1 मुझको सिय्योन से प्रेम है
अत: मैं उसके लिये बोलता रहूँगा।
मुझको यरूशलेम से प्रेम है
अत: मैं चुप न होऊँगा।
मैं उस समय तक बोलता रहूँगा जब तक नेकी चमकती हुई ज्योति सी नहीं चमकेगी।
मैं उस समय तक बोलता रहूँगा जब तक उद्धार आग की लपट सा भव्य बन कर नहीं धधकेगा।
2 फिर सभी देश तेरी नेकी को देखेंगे।
तेरे सम्मान को सब राजा देखेंगे।
तभी तू एक नया नाम पायेगा।
स्वयं यहोवा तुम लोगों के लिये वह नया नाम पायेगा।
3 यहोवा को तुम लोगों पर बहुत गर्व होगा।
तुम यहोवा के हाथों में सुन्दर मुकुट के समान होगे।
4 फिर तुम कभी ऐसे जन नहीं कहलाओगे, 'परमेश्वर के त्यागे हुए लोग।'
तुम्हारी धरती कभी ऐसी धरती नहीं कहलायेगी जिसे 'परमेश्वर ने उजाड़ा।'
तुम लोग 'परमेश्वर के प्रिय जन' कहलाओगे।
तुम्हारी धरती 'परमेश्वर की दुल्हिन' कहलायेगी।
क्यों क्योंकि यहोवा तुमसे प्रेम करता है
और तुम्हारी धरती उसकी हो जायेगी।

5 जैसे एक युवक कुँवारी को ब्याहता है।
वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे।
और जैसे दुल्हा अपनी दल्हिन के संग आनन्दित होता है
वैसे ही तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे संग प्रसन्न होगा।

6 यरूशलेम की चारदीवारी मैंने रखवाले (नबी) बैठा दिये हैं कि उसका ध्यान रखें।
ये रखवाले मूक नहीं रहेंगे।
यह रखवाले यहोवा को तुम्हारी जरूरतों की याद दिलाते हैं।

हे रखवालों, तुम्हें चुप नहीं होना चाहिये।
तुमको यहोवा से प्रार्थना करना बन्द नहीं करना चाहिये।
तुमको सदा उसकी प्रार्थना करते ही रहना चाहिये।
7 जब तक वह फिर से यरूशलेम का निर्माण न कर दे, तब तक तुम उसकी प्रार्थना करते रहो।
यरूशलेम एक ऐसा नगर है जिसका धरती के सभी लोग यश गायेंगे।

8 यहोवा ने स्वयं अपनी शक्ति को प्रमाण बनाते हुए वाचा की
और यहोवा अपनी शक्ति के प्रयोग से ही उस वाचा को पालेगा।
यहोवा ने कहा था, "मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं तुम्हारे भोजन को कभी तुम्हारे शत्रु को न दूँगा।
मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि तुम्हारी बनायी दाखमधु तुम्हारा शत्रु कभी नहीं ले पायेगा।
9 जो व्यक्ति खाना जुटाता है, वही उसे खायेगा और वह व्यक्ति यहोवा के गुण गायेगा।
वह व्यक्ति जो अंगूर बीनता है, वही उन अंगूरों की बनी दाखमधु पियेगा।

मेरी पवित्र धरती पर ऐसी बातें हुआ करेंगी।”

10 द्वार से होते हुए आओ!
लोगों के लिये राहें साफ करो!
मार्ग को तैयार करो!
राह पर के पत्थर हटा दो!
लोगों के लिये संकेत के रूप में झण्डा उठा दो!

11 यहोवा सभी दूर देशों के लिये बोल रहा है:
“सिय्योन के लोगों से कह दो:
देखो, तुम्हारा उद्धारकर्ता आ रहा है।
वह तुम्हारा प्रतिफल ला रहा है।
वह अपने साथ तुम्हारे लिये प्रतिफल ला रहा है।”
12 उसके लोग कहलायेंगे:
“पवित्र जन,” “यहोवा के उद्धार पाये लोग।”
यरूशलेम कहलायेगा: “वह नगर जिसको यहोवा चाहता है,”
“वह नगर जिसके साथ परमेश्वर है।”

63

यहोवा अपने लोगों का न्याय करता है

1 यह कौन है जो एदोम से आ रहा है,
यह बोस्रा की नगरी से लाल धब्बों से युक्त कपड़े पहने आ रहा है।
वह अपने वस्त्रों में अति भव्य दिखता है।
वह लम्बे डग बढ़ाता हुआ अपनी महाशक्ति के साथ आ रहा है।
और मैं सच्चाई से बोलता हूँ।

2 “तू ऐसे वस्त्र जो लाल धब्बों से युक्त हैं?

क्यों पहनता है तेरे वस्त्र ऐसे लाल क्यों हैं जैसे उस व्यक्ति के
जो अंगूर से दाखमधु बनाता है”

3 वह उत्तर देता है, “दाखमधु के कुंडे में मैंने अकेले ही दाख रौंदी।
किसी ने भी मुझको सहायता नहीं दी।
मैं क्रोधित था और मैंने लोगों को रौंदा जैसे अंगूर दाखमधु बनाने
के लिये रौंदे जाते हैं।
रस छिटकर मेरे वस्त्रों में लगा।
4 मैंने राष्ट्रों को दण्ड देने के लिये एक समय चुना।
मेरा वह समय आ गया कि मैं अपने लोगों को बचाऊँ और
उनकी रक्षा करूँ।
5 मैं चकित हुआ कि किसी भी व्यक्ति ने मेरा समर्थन नहीं किया।
इसलिये मैंने अपनी शक्ति का प्रयोग अपने लोगों को बचाने
के लिये किया।
स्वयं मेरे अपने क्रोध ने ही मेरा समर्थन किया।
6 जब मैं क्रोधित था, मैंने लोगों को रौंद दिया था।
जब मैं क्रोध में पागल था, मैंने उनको दण्ड दिया।
मैंने उनका लहू धरती पर उंडेल दिया।”

यहोवा अपने लोगों पर दयालु रहा

7 यह मैं याद रखूँगा कि यहोवा दयालु है
और मैं यहोवा की स्तुति करना याद रखूँगा।
यहोवा ने इस्राएल के घराने को बहुत सी वस्तुएँ प्रदान की।
यहोवा हमारे प्रति बहुत ही कृपालु रहा।
यहोवा ने हमारे प्रति दया दिखाई।
8 यहोवा ने कहा था “ये मेरे लोग हैं।
ये बच्चें कभी झूठ नहीं कहते हैं” इसलिये यहोवा ने उन लोगों
को बचा लिया।
9 उनको उनके सब संकटो से किसी भी स्वर्गदूत ने नहीं बचाया था।

उसने स्वयं ही अपने प्रेम और अपनी दया से उनको छुटकारा दिलाया था।
10 किन्तु वे लोग यहोवा से मुख मोड़ चले।
उन्होंने उसकी पवित्र आत्मा को बहुत दु:खी किया।
सो यहोवा उनका शत्रु बन गया।
यहोवा ने उन लोगों के विरोध में युद्ध किया।

11 किन्तु यहोवा अब भी पहले का समय याद करता है।
यहोवा मूसा के और उसके लोगों को याद करता हैं।
यहोवा वही था जो लोगों को सागर के बीच से निकाल कर लाया।
यहोवा ने अपनी भेंड़ों (लोगों) की अगुवाई के लिये अपने चरवाहों (नबियों) का प्रयोग किया।
किन्तु अब वह यहोवा कहाँ है जिसने अपनी आत्मा को मूसा में रख दिया था
12 यहोवा ने अपने दाहिने हाथ से मूसा की अगुवाई की।
यहोवा ने अपनी अद्भुत शक्ति से मूसा को राह दिखाई।
यहोवा ने जल को चीर दिया था।
जिससे लोग सागर को पैदल पार कर सके थे।
इस अद्भुत कार्य को करके यहोवा ने अपना नाम प्रसिद्ध किया था
13 यहोवा ने लोगों को राह दिखाई।
वे लोग गहरे सागर के बीच से बिना गिरे ही पार हो गये थे।
वे ऐसे चले थे जैसे मरूस्थल के बीच से घोड़ा चला जाता है।
14 जैसे मवेशी घाटियों से उतरते और विश्राम का ठौर पाते हैं
वैसे ही यहोवा के प्राण ने हमें विश्राम की जगह दी है।
हे यहोवा, इस ढंग से तूने अपने लोगों को राह दिखाई
और तूने अपना नाम अद्भुत कर दिया।

उसके लोगों की सहायता के लिए यहोवा से प्रार्थना

15 हे यहोवा, तू आकाश से नीचे देख।

उन बातों को देख जो घट रही हैं!
तू हमें अपने महान पवित्र घर से जो आकाश मैं है, नीचे देख।
तेरा सुदृढ़ प्रेम हमारे लिये कहाँ है तेरे शक्तिशाली कार्य कहाँ है
तेरे ह्रदय का प्रेम कहाँ है मेरे लिये तेरी कृपा कहाँ है
तूने अपना करूण प्रेम मुझसे कहाँ छिपा रखा है
16 देख, तू ही हमारा पिता है!
इब्राहीम को यह पता नहीं है कि हम उसकी सन्तानें हैं।
इस्राएल (याकूब) हमको पहचानता नहीं है।
यहोवा तू ही हमारा पिता है।
तू वही यहोवा है जिसने हमको सदा बचाया है।
17 हे यहोवा, तू हमको अपने से दूर क्यों ढकेल रहा है
तू हमारे लिये अपना अनुसरण करने को क्यों कठिन बनाता है यहोवा तू हमारे पास लौट आ।
हम तो तेरे दास हैं।
हमारे पास आ और हमको सहारा दे।
हमारे परिवार तेरे हैं।
18 थोड़े समय के लिये हमारे शत्रुओं ने तेरे पवित्र लोगों पर कब्जा कर लिया था।
हमारे शत्रुओं ने तेरे मन्दिर को कुचल दिया था।
19 कुछ लोग तेरा अनुसरण नहीं करते हैं।
वे तेरे नाम को धारण नहीं करते हैं।
जैसे वे लोग हम भी वैसे हुआ करते थे।

64

1 यदि तू आकाश चीर कर धरती पर नीचे उतर आये
तो सब कुछ ही बदल जाये।
तेरे सामने पर्वत पिघल जाये।
2 पहाड़ों में लपेट उठेंगी।

वे ऐसे जलेंगे जैसे झाड़ियाँ जलती हैं।
पहाड़ ऐसे उबलेंगे जैसे उबलता पानी आग पर रखा गया हो।
तब तेरे शत्रु तेरे बारे में समझेंगे।
जब सभी जातियाँ तुझको देखेंगी तब वे भय से थर–थर काँपेंगी।
3 किन्तु हम सचमुच नहीं चाहते हैं
कि तू ऐसे कामों को करे कि तेरे सामने पहाड़ पिघल जायें।
4 सचमुच तेरे ही लोगों ने तेरी कभी नहीं सुनी।
जो कुछ भी तूने बात कही सचमुच तेरे ही लोगों ने उन्हें कभी नहीं सुना।
तेरे जैसा परमेश्वर किसी ने भी नहीं देखा।
कोई भी अन्य परमेश्वर नहीं, बस केवल तू है।
यदि लोग धीरज धर कर तेरे सहारे की बाट जोहते रहें, तो तू उनके लिये बड़े काम कर देगा।

5 जिनको अच्छे काम करने में रस आता है, तू उन लोगों के साथ है।
वे लोग तेरे जीवन की रीति को याद करते हैं।
पर देखो, बीते दिनों में हमने तेरे विरूद्ध पाप किये हैं।
इसलिये तू हमसे क्रोधित हो गया था।
अब भला कैसे हमारी रक्षा होगी
6 हम सभी पाप से मैले हैं।
हमारी सब नेकी पुराने गन्दे कपड़ों सी है।
हम सूखे मुरझाये पत्तों से हैं।
हमारे पापों ने हमें आँधी सा उड़ाया है।
7 हम तेरी उपासना नहीं करते हैं। हम को तेरे नाम में विश्वास नहीं है।
हम में से कोई तेरा अनुसरण करने को उत्साही नहीं है।
इसलिये तूने हमसे मुख मोड़ लिया है।

क्योंकि हम पाप से भरे हैं इसलिये तेरे सामने हम असमर्थ हैं।
8 किन्तु यहोवा, तू हमारा पिता है।
हम मिट्टी के लौंदे हैं और तू कुम्हार है।
तेरे ही हाथों ने हम सबको रचा है।
9 हे यहोवा, तू हमसे कुपित मत बना रह!
तू हमारे पापों को सदा ही याद मत रख!
कृपा करके तू हमारी ओर देख! हम तेरे ही लोग हैं।
10 तेरी पवित्र नगरियाँ उजड़ी हुई हैं।
आज वे नगरियाँ ऐसी हो गई हैं जैसे रेगिस्तान हों।
सिय्योन रेगिस्तान हो गया है! यरूशलेम ढह गया है!
11 हमारा पवित्र मन्दिर आग से भस्म हुआ है।
वह मन्दिर हमारे लिये बहुत ही महान था।
हमारे पूर्वज वहाँ तेरी उपासना करते थे।
वे सभी उत्तम वस्तु जिनके हम स्वामी थे, अब बर्बाद हो गई हैं।
12 क्या ये वस्तुएँ सदैव तुझे अपना प्रेम हम पर प्रकट करने से दूर रखेंगी
क्या तू कभी कुछ नहीं कहेगा क्या तू ऐसे ही चुप रह जायेगा
क्या तू सदा हम को दण्ड देता रहेगा

65

परमेश्वर के बारे में सभी लोग जानेंगे

1 यहोवा कहता है, “मैंने उन लोगों को भी सहारा दिया है जो
उपदेश ग्रहण करने के लिए कभी मेरे पास नहीं आये। जिन लोगों ने
मुझे प्राप्त कर लिया, वे मेरी खोज में नहीं थे। मैंने एक ऐसी जाति से
बात की जो मेरा नाम धारण नहीं करती थी। मैंने कहा था, ‘मैं यहाँ
हूँ! मैं यहाँ हूँ!’
2 “जो लोग मुझसे मुँह मोड़ गये थे, उन लोगों को अपनाने के लिए
मैं भी तत्पर रहा। मैं इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि वे लोग

मेरे पास लौट आयें। किन्तु वे जीवन की एक ऐसी राह पर चलते
रहे जो अच्छी नहीं है। वे अपने मन के अनुसार काम करते रहे।
3 वे लोग मेरे सामने रहते हैं और सदा मुझे क्रोधित करते रहते हैं।
अपने विशेष बागों में वे लोग मिथ्या देवताओं को बलियाँ अर्पित
करते हैं और धूप अगरबत्ती जलाते हैं। 4 लोग कब्रों के बीच बैठते
हैं और मरे हुए लोगों से सन्देश पाने का इंतज़ार करते रहते हैं। यहाँ
तक कि वे मुर्दों के बीच रहा करते हैं। वे सुअर का माँस खाते हैं।
उनके प्यालों में अपवित्र वस्तुओं का शोरबा है। 5 किन्तु वे लोग
दूसरे लोगों से कहा करते हैं, 'मेरे पास मत आओ, मुझे उस समय
तक मत छुओ, जब तक मैं तुम्हें पवित्र न कर दूँ।' मेरी आँखों में वे
लोग धुएँ के जैसे हैं और उनकी आग हर समय जला करती है।"

इस्राएल को दण्डित होना चाहिये

6 "देखो, यह एक हुण्डी है। इसका भुगतान तो करना ही होगा।
यह हुण्डी बताती है कि तुम अपने पापों के लिये अपराधी हो। मैं
उस समय तक चुप नहीं होऊँगा जब तक इस हुण्डी का भुगतान
न कर दूँ और देखो तुम्हें दण्ड देकर ही मैं इस हुण्डी का भुगतान
करूँगा। 7 तुम्हारे पाप और तुम्हारे पूर्वज एक ही जैसे हैं। यहोवा
ने यह कहा है, 'तुम्हारे पूर्वजों ने जब पहाड़ों में धूप अगरबत्तियाँ
जलाईर् थी, तभी इन पापों को किया था। उन पहाड़ों पर उन्होंने
मुझे लज्जित किया था और सबसे पहले मैंने उन्हें दण्ड दिया। जो
दण्ड उन्हें मिलना चाहिये था, मैंने उन्हें वही दण्ड दिया।' "

8 यहोवा कहता है, "अँगूरों में जब नयी दाखमधु हुआ करती है,
तब लोग उसे निचोड़ लिया करते हैं, किन्तु वे अँगूरों को पूरी तरह
नष्ट तो नहीं कर डालते। वे इसलिये ऐसा करते हैं कि अँगूरों का
उपयोग तो फिर भी किया जा सकता है। अपने सेवकों के साथ मैं
ऐसा ही करूँगा। मैं उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा। 9 इस्राएल के
कुछ लोगों को मैं बचाये रखूँगा। यहूदा के कुछ लोग मेरे पर्वतों को

प्राप्त करेंगे। मेरे सेवकों का वहाँ निवास होगा। मेरे चुने हुए लोगों को
धरती मिलेगी। 10 फिर तो शारोन की घाटी हमारी भेड़—बकरियों
की चरागाह होगी तथा आकोर की तराई हमारे मवेशियों के आराम
करने की जगह बन जायेगी। ये सब बातें मेरे लोगों के लिये होंगी।
उन लोगों के लिये जो मेरी खोज में हैं।

11 "किन्तु तुम लोग, जिन्होंने यहोवा को त्याग दिया है, दण्डित
किये जाओगे। तुम ऐसे लोग हो जिन्होंने मेरे पवित्र पर्वत को भुला
दिया है। तुम ऐसे लोग हो जो भाग्य के मिथ्या देवता की पूजा करते
हो। तुम भाग्य रूपी झूठे देवता के सहारे रहते हो। 12 किन्तु तुम्हारे
भाग्य का निर्धारण तो मैं करता हूँ। मैं तलवार से तुम्हें दण्ड दूँगा।
जो तुम्हें दण्ड देगा, तुम सभी उसके आगे मिमिआने लगोगे। मैंने
तुम्हें पुकारा किन्तु तुमने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने तुमसे बातें कीं
किन्तु तुमने सुना तक नहीं। तुम उन कामों को ही करते रहे जिन्हें
मैंने बुरा कहा था। तुमने उन कामों को करने की ही ठान ली जो
मुझे अच्छे नहीं लगते थे।"

13 सो मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।
"मेरे दास भोजन पायेंगे, किन्तु तुम भूखे मरोगे।
मेरे दास पीयेंगे किन्तु अरे दुष्टों, तुम प्यासे मरोगे।
मेरे दास प्रसन्न होंगे किन्तु अरे ओ दुष्टों, तुम लज्जित होंगे।
14 मेरे दासों के मन खरे हैं इसलिये वे प्रसन्न होंगे।
किन्तु अरे ओ दुष्टों, तुम रोया करोगे क्योंकि तुम्हारे मनों में
पीड़ा बसेगी।
तुम अपने टूटे हुए मन से बहुत दुःखी रहोगे।
15 तुम्हारे नाम मेरे लोगों के लिये गालियों के जैसे हो जायेंगे।"
मेरा स्वामी यहोवा तुमको मार डालेगा
और वह अपने दासों को एक नये नाम से बुलाया करेगा।
16 अब लोग धरती से आशीषें माँगतें हैं

किन्तु आगे आनेवाले दिनों में वे विश्वासयोग्य परमेश्वर से
आशीष माँगा करेंगे।
अभी लोग उस समय धरती की शक्ति के भरोसे रहा करते हैं जब
वे कोई वचन देते हैं।
किन्तु भविष्य में वे विश्वसनीय परमेश्वर के भरोसे रहा करेंगे।
क्यों क्योंकि पिछले दिनों की सभी विपत्तियाँ भूला दी जायेंगी।
मेरे लोग फिर उन पिछली विपत्तियों को याद नहीं करेंगे।

एक नया समय आ रहा है

17 “देखो, मैं एक नये स्वर्ग और नयी धरती की रचना करूँगा।
लोग मेरे लोगों की पिछली बात याद नहीं रखेंगे।
उनमें से कोई बात याद में नहीं रहेगी।
18 मेरे लोग दु:खी नहीं रहेंगे।
नहीं, वे आनन्द में रहेंगे और वे सदा खुश रहेंगे।
मैं जो बातें रचूँगा, वे उनसे प्रसन्न रहेंगे।
मैं ऐसा यरूशलेम रचूँगा जो आनन्द से परिपूर्ण होगा और
मैं उनको एक प्रसन्न जाति बनाऊँगा।

19 “फिर मैं यरूशलेम से प्रसन्न रहूँगा।
मैं अपने लोगों से प्रसन्न रहूँगा और उस नगरी में फिर कभी
विलाप और कोई दु:ख नहीं होगा।
20 उस नगरी में कोई बच्चा ऐसा नहीं होगा जो पैदा होने के बाद कुछ
ही दिन जियेगा।
उस नगरी का कोई भी व्यक्ति अपनी अल्प आयु में नहीं मरेगा।
हर पैदा हुआ बच्चा लम्बी उम्र जियेगा
और उस नगरी का प्रत्येक बूढ़ा व्यक्ति एक लम्बे समय तक
जीता रहेगा।
वहाँ सौ साल का व्यक्ति भी जवान कहलायेगा।
किन्तु कोई भी ऐसा व्यक्ति जो सौ साल से पहले मरेगा उसे
अभिशप्त कहा जायेगा।

21 “देखो, उस नगरी में यदि कोई व्यक्ति अपना घर बनायेगा तो वह
व्यक्ति अपने घर में बसेगा।
यदि कोई व्यक्ति वहाँ अंगूर का बाग लगायेगा तो वह अपने
बाग के अँगूर खायेगा।
22 वहाँ ऐसा नहीं होगा कि कोई अपना घर बनाये और कोई दूसरा
उसमें निवास करे।
ऐसा भी नहीं होगा कि बाग कोई दूसरा लगाये और उस बाग
का फल कोई और खाये।
मेरे लोग इतना जियेंगे जितना ये वृक्ष जीते हैं।
ऐसे व्यक्ति जिन्हें मैंने चुना है, उन सभी वस्तुओं का आनन्द
लेंगे जिन्हें उन्होंने बनाया है।
23 फिर लोग व्यर्थ का परिश्रम नहीं करेंगे।
लोग ऐसे उन बच्चों को नहीं जन्म देंगे जिनके लिये वे मन में
डरेंगे कि वे किसी अचानक विपत्ति का शिकार न हों।
मेरे सभी लोग यहोवा की आशीष पायेंगे।
मेरे लोग और उनकी संताने आर्शीवाद पायेंगे।
24 मुझे उन सभी वस्तुओं का पता हो जायेगा जिनकी आवश्यकता
उन्हें होगी, इससे पहले की वे उन्हें मुझसे माँगे।
इससे पहले कि वे मुझ से सहायता की प्रार्थना पूरी कर पायेंगे,
मैं उनको मदद दूँगा।
25 भेड़िये और मेमनें एक साथ चरते फिरेंगे।
सिंह भी मवेशियों के जैसे ही भूसा चरेंगे
और भुजंगों का भोजन बस मिट्टी ही होगी।
मेरे पवित्र पर्वत पर कोई किसी को भी हानि नहीं पहुँचायेगा और
न ही उन्हें नष्ट करेगा।”
यह यहोवा ने कहा है।

66

परमेश्वर सभी जातियों का न्याय करेगा

1 यहोवा यह कहता है,
“आकाश मेरा सिंहासन है।
धरती मेरे पाँव की चौकी बनी है।
सो क्या तू यह सोचता है कि तू मेरे लिये भवन बना सकता है नहीं,
तू नहीं बना सकता।
क्या तू मुझको विश्रामस्थल दे सकता है नहीं, तू नहीं दे सकता।
2 मैंने स्वयं ही ये सारी वस्तुएँ रची हैं।
ये सारी वस्तुएँ यहाँ टिकी हैं क्योंकि उन्हें मैंने बनाया है।
यहोवा ने ये बातें कहीं थी।
मुझे बता कि मैं कैसे लोगों की चिन्ता किया करता हूँ मुझको दीन हीन लोगों की चिंता है।
ये ही वे लोग हैं जो बहुत दु:खी रहते हैं।
ऐसे ही लोगों की मैं चिंता किया करता हूँ जो मेरे वचनो का पालन किया करते हैं।
3 मुझे बलि के रूप में अर्पित करने को कुछ लोग बैल का वध किया करते हैं
किन्तु वे लोगों से मारपीट भी करते हैं।
मुझे अर्पित करने को ये भेड़ों को मारते हैं
किन्तु ये कुत्तों की गर्दन भी तोड़ते हैं
और सुअरों का लहू ये मुझ पर चढ़ाते हैं।
ऐसे लोगों को धूप के जलाने की याद बनी रहा करती हैं
किन्तु वे व्यर्थ की अपनी प्रतिमाओं से प्रेम करते हैं।
ऐसे ये लोग अपनी मनचीती राहों पर चला करते हैं, मेरी राहों पर नहीं।
वे पूरी तरह से अपने घिनौने मूर्ति के प्रेम में डूबे हैं।
4 इसलिये मैंने यह निश्चय किया है कि मैं उनकी जूती उन्हीं के सिर करूँगा।

मेरा यह मतलब है कि मैं उनको दण्ड दूँगा उन वस्तुओं को
काम में लाते हुये जिनसे वे बहुत डरते हैं।
मैंने उन लोगों को पुकारा था किन्तु उन्होंने नहीं सुना।
मैंने उनसे बोला था
किन्तु उन्होंने सुना ही नहीं।
इसलिये अब मैं भी उनके साथ ऐसा ही करूँगा।
वे लोग उन सभी बुरे कामों को करते रहे हैं जिनको मैंने बुरा बताया
था।
उन्होंने ऐसे काम करने को चुने जो मुझको नहीं भाते थे।"

5 हे लोगों, यहोवा का भय विस्मय मानने वालों
और यहोवा के आदेशों का अनुसरण करने वालों,
उन बातों को सुनो।
यहोवा कहता है, "तुमसे तुम्हारे भाईयों ने घृणा की क्योंकि तुम मेरे
पीछे चला करते थे,
वे तुम्हारे विरूद्ध हो गये।
तुम्हारे बंधु कहा करते थे: 'जब यहोवा सम्मानित होगा
हम तुम्हारे पीछे हो लेंगे।
फिर तुम्हारे साथ में हम भी खुश हो जायेंगे।'
ऐसे उन लोगों को दण्ड दिया जायेगा।"

दण्ड और नयी जाति

6 सुनो तो, नगर और मन्दिर से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दे रही
है। यहोवा द्वारा अपने विरोधियों को, जो दण्ड दिया जा रहा है।
वह आवाज उसी की है। यहोवा उन्हें वही दण्ड दे रहा है जो उन्हें
मिलना चाहिये।

7-8 "ऐसा तो नहीं हुआ करता कि प्रसव पीड़ा से पहले ही कोई
स्त्री बच्चा जनती हो। ऐसा तो कभी नहीं हुआ कि किसी स्त्री ने किसी
पीड़ा का अनुभव करने से पहले ही अपने पुत्र को पैदा हुआ देखा
हो। ऐसा कभी नहीं हुआ। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति ने एक दिन

में कोई नया संसार आरम्भ होते हुए नहीं देखा। किसी भी व्यक्ति
ने किसी ऐसी नयी जाति का नाम कभी नहीं सुना होगा जो एक ही
दिन में आरम्भ हो गयी हो। धरती को बच्चा जनने के दर्द जैसी पीड़ा
निश्चय ही पहले सहनी होगी। इस प्रसव पीड़ा के बाद ही वह धरती
अपनी संतानों—एक नयी जाति को जन्म देगी। 9 जब मैं किसी स्त्री
को बच्चा जनने की पीड़ा देता हूँ तो वह बच्चे को जन्म दे देती है।"

तुम्हारा यहोवा कहता है, "मैं तुम्हें बच्चा जनने की पीड़ा में डालकर तुम्हारा गर्भद्वार बंद नहीं कर देता। मैं तुम्हें इसी तरह इन विपत्तियों में बिना एक नयी जाति प्रदान किये, नहीं डालूँगा।"

10 हे यरूशलेम, प्रसन्न रहो! हे लोगों, यरूशलेम के प्रेमियों, तुम निश्चय ही प्रसन्न रहो!
यरूशलेम के संग दु:ख की बातें घटी थी इसलिये तुममें से कुछ लोग भी दु:खी हैं।
किन्तु अब तुमको चाहिये कि तुम बहुत—बहुत प्रसन्न हो जाओ।
11 क्यों क्योंकि अब तुम को दया ऐसे मिलेगी जैसे
छाती से दूध मिल जाया करता है।
तुम यरूशलेम के वैभव का सच्चा आनन्द पाओगे।
12 यहोवा कहता है, "देखो, मैं तुम्हें शांति दूंगा।
यह शांति तुम तक ऐसे पहुँचेगी जैसे कोई महानदी बहती हुई पहुँच जाती है।
सब धरती के राष्ट्रों की धन—दौलत बहती हुई तुम तक पहुँच जायेगी।
यह धन—दौलत ऐसे बहते हुये आयेगी जैसे कोई बाढ़ की धारा।
तुम नन्हें बच्चों से होवोगे, तुम दूध पीओगे, तुम को उठा लिया जायेगा
और गोद में थाम लिये जायेगा, तुम्हें घुटनों पर उछाला जायेगा।
13 मैं तुमको दुलारूँगा जैसे माँ अपने बच्चे को दुलारती है।

तुम यरूशलेम के भीतर चैन पाओगे।”

14 तुम वे वस्तुएँ देखोगे जिनमें तुम्हें सचमुच रस आता है।
तुम स्वतंत्र हो कर घास से बढ़ोगे।
यहोवा की शक्ति को उसके लोग देखेंगे,
किन्तु यहोवा के शत्रु उसका क्रोध देखेंगे।
15 देखो, अग्नि के साथ यहोवा आ रहा है।
धूल के बादलों के साथ यहोवा की सेनाएँ आ रही हैं।
यहोवा अपने क्रोध से उन व्यक्तियों को दण्ड देगा।
यहोवा जब क्रोधित होगा तो उन व्यक्तियों को दण्ड देने के लिये आग की लपटों का प्रयोग करेगा।
16 यहोवा लोगों का न्याय करेगा और फिर आग और अपनी तलवार से वह अपराधी लोगों को नष्ट कर डालेगा।
यहोवा उन बहुत से लोगों को नष्ट कर देगा।
वह अपनी तलवार से लाशों के अम्बार लगा देगा।

17 यहोवा का कहना है, “वे लोग जो अपने बगीचों को पूजने के
लिए स्नान करके पवित्र होते हैं और एक दूसरे के पीछे परिक्रमा
करते हैं, वे जो सुअर का माँस खाते हैं और चूहे जैसे घिनौने जीव
जन्तुओं को खाते हैं, इन सभी लोगों का नाश होगा।
18 “बुरे विचारों में पड़े हुए वे लोग बुरे काम किया करते हैं।
इसलिए उन्हें दण्ड देने को मैं आ रहा हूँ। मैं सभी जातियों और सभी
लोगों को इकट्ठा करूँगा। परस्पर एकत्र हुए सभी लोग मेरी शक्ति
को देखेंगे। 19 कुछ लोगों पर मैं एक चिन्ह लगा दूँगा, मैं उनकी रक्षा
करूँगा। इन रक्षा किये लोगों में से कुछ लोगों को मैं तर्शीश लिव्या
और लूदी के लोगों के पास भेजूँगा। (इन देशों के लोग धनुर्धारी
हुआ करते हैं।) तुबाल, यूनान और सभी दूर देशों में मैं उन्हें भेजूँगा।
दूर देशों के उन लोगों ने मेरे उपदेश कभी नहीं सुने। उन लोगों ने
मेरी महिमा का दर्शन भी नहीं किया है। सो वे बचाए गए लोग उन

जातियों को मेरी महिमा के बारे में बतायेंगे। 20 वे तुम्हारे सभी भाइयों
और बहनों को सभी देशों से यहाँ ले आयेंगे। तुम्हारे भाइयों और
बहनों को वे मेरे पवित्र पर्वत पर यरूशलेम में ले आयेंगे। तुम्हारे
भाई बहन यहाँ घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों, रथों और पालकियों में बैठ कर
आयेंगे। तुम्हारे वे भाई—बहन यहाँ उसी प्रकार से उपहार के रूप
में लाये जायेंगे जैसे इस्राएल के लोग शुद्ध थालों में रख कर यहोवा
के मन्दिर में अपने उपहार लाते हैं। 21 इन लोगों में से कुछ लोगों
को मैं याजकों और लेवियों के रूप में चुन लूँगा। ये बातें यहोवा ने
बताई थीं।

नये आकाश और नयी धरती

22 “मैं एक नये संसार की रचना करूँगा। ये नये आकाश और
नयी धरती सदा—सदा टिके रहेंगे और उसी प्रकार तुम्हारे नाम और
तुम्हारे वंशज भी सदा मेरे साथ रहेंगे। 23 हर सब्त के दिन और महीने
के पहले दिन वे सभी लोग मेरी उपासना के लिये आया करेंगे।
24 “ये लोग मेरी पवित्र नगरी में होंगे और यदि कभी वे नगर से
बाहर जायेंगे, तो उन्हें उन लोगों की लाशें दिखाई देंगी जिन्होंने मेरे
विरूद्ध पाप किये हैं। उन लाशों में कीड़े पड़े हुए होंगे और वे कीड़े
कभी नहीं मरेंगे। उन देहों को आग जला डालेगी और वह आग
कभी समाप्त नहीं होगी।”

पवित्र बाइबल
The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275